प्रस्तावना ।

प्रिय महाशय आपने जैन का नाम तो सुना होगा परन्तु उसके सिध्धांत से आप विशेष परिचित नहीं होंगे कारण यह है कि, जैन साहित्य प्रायः अर्ध मागधी भाषा में है और उसके सीखने के लिये कोइ प्रसिध्ध व्याकरण या रीडर नहीं है जैसे कि संस्कृत वा अन्य भाषाओं के बहुत से व्याकरण विद्यमान है और नहीं कोई हिन्दी में इसकी ऐसी पुस्तक मिलती है जिसे सब लोक सरलता से जान सके इस लिए इस ग्रन्थ में बहुत सूत्रों के ऐतिहासिक वा सिध्धांतिक प्रश्न दिये गये हैं और उनके उत्तर भी सिध्धांत के अनुसार दिये गये हैं मैंने इस ग्रन्थ के अनुवाद गुजराती से हिन्दी में किया और अनुवाद करने पर मेरा विचार हुआ कि इसका संशोधन करवा कर ताकि मेरा पुरुषार्थ निष्फल न हो हांसी नगर में श्री श्री श्री १००८ श्री उपाध्याय जी आत्माराम जी महाराज साहब के पधारने की खबर सुन कर उनके दर्शन करने के लिये मैं वहां गया और दर्शन करने के पश्चात् श्री

अर्पण पत्रिका

श्रीमान सेठ कनीरामजी साहब बांठिया—भीनासर.

महाशय !

आप एक उदार, श्रीमान, कीर्तिमान और यशस्वी जैन गृहस्थ हैं। धर्म प्रति का प्रेम अवर्णनीय और अनुकरणीय है; और आप परम श्रद्धालु है। ज्ञाति में भी आप मान्य और महत्वता प्राप्त है। आपने सरस्वती और लक्ष्मी दोनों का योग्य संपादन किया है और उसका अमूल्य और अलभ्य लाभ प्राणी मात्र को देने के लिये सदैव तत्पर रहते हैं।

अंत में भी यह पूर्ण विश्वास रखता हुआ कि- आप अपने स्वज्ञाति और स्वधर्म बन्धुओं के सद्ज्ञान और सद्धर्म शिक्षा प्राप्तार्थ इस श्री "**प्रश्नोत्तर मणी रत्नमाला**" ग्रंथ का तन, मन, धन से प्रचार करने में अवश्य प्रयत्न करेंगे। इस ग्रंथ को आपकी पवित्र सेवा में सविनय अर्पण करता हूं; और साथ ही विनय पूर्वक ज्ञान प्रेमियों से हार्दिक भावों से प्रार्थना करता हूं कि-: हमारे माननीय सेठ जी का अनुकरण करके जैन धर्म का प्रचार करें।

ली: आपका धर्म बन्धु.

वाडीलाल एम शाह

देहली.

संक्षिप्त जैन ऐतिहास नीचे की वार्ता ग्रन्थों में है । वीर संवत् से विवरण.

(१) १६४ की साल में चंद्र गुप्त राजा हुआ,

(२) ३७६ की साल में श्री श्यामाचार्यजी ने श्री पन्नवणाजी सूत्र रचा (बनाया).

(३) ४७० वर्ष विक्रम संवत् चला.

(४) ६०५ वर्षे शालिवाहन राजा का शक चला.

(५) ६०९ वर्षे दिगम्बर मत की उत्पत्ति.

(६) ६७० वर्षे साचोर (नगर) में श्री वीर स्वामीजी की प्रतिमा स्थापी.

(७) ८२० वर्षे चौदस की परवी चली.

(८) ८६४ की साल में श्री गंधहस्ती आचार्यजी ने पहले टीका रची.

(९) ८८२ वर्षे चैत्यवासियों की स्थापना.

(१०) ९८० वर्षे देवर्धि गणी क्षमा श्रमणजी ने सूत्र पुस्तकारूढ किए.

(११) ९९३ वर्षे कालिकाचार्यजी ने चौथ की संवत्सरी की.

(१२) १००० वर्षे पूर्व विच्छेद गया.

(१३) १००८ वर्षे चैत्यवासियोंने पौषधशालामें वास किया.

(१४) १०५५ की साल में हरिभद्र सूरजी ने १४४४ प्रकरण रचा.

विक्रम संवत् विवरण.

(१) ७०० की साल में शीलकाचार्यजी हुए, (श्री आचारांगजी के टीकाकार)

(२) ९२१ में वडगच्छ सर्व देव सूरि से चला.

(३) १०९६ की साल में वादि वैताल शांति सूरिजी देवलोक हुए.

(४) ११३५ की साल में श्री अभयदेव सूरिजी हुए. (नवांगा–टीकाकार)

(५) ११५९ में पुनमिया गच्छ चंद्रप्रभ सूरिजी से चला.

(६) ११६९ में अचल गच्छ आर्य रक्षित सूरिजी से चला.

(७) १२०४ में खरतर गच्छ जिनदत्त सूरिजी से चला.

(८) १२२९ में श्री हेमाचार्यजी स्वर्ग में गये. (कुमारपाल प्रतिबोधक कुमारपाल का राज ११९९ से १२२९ तक)

(९) १२३६ में साधु पुनमिया गच्छ चला.

(१०) १२५० में आगमिया गच्छ चला.

(११) १२८५ में तपगच्छ जगत्चंद्र सूरिजी से चला.

(१२) १५३२ में लोकाशाह ने दया धर्म की प्रवृत्ति की.

(१३) १५६५ में पार्श्वचंद्र गच्छ निकला.

॥ मंगलाचरण ॥

अर्हन्तो भगवंत इन्द्रमहिता: सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता:
आचार्या जिनशासनोन्नति करा: पूज्या उपाध्यायका: ।
श्री सिद्धान्त सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधका:
पंचैते परमेष्ठिन: प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥

॥ दोहा ॥

आदिदेव अरिहंतजी, भयभंजन भगवंत,
केवल कमला धार जे, पायो भव जल अंत ॥ १ ॥

" श्री हिन्दी प्रश्नोत्तर मणि रत्नमाला "

ॐ नमो अरिहंताणं ॥ ॐ नमो सिद्धाणं ॥ ॐ नमो आयरियाणं ॥ ॐ नमो उवज्झायाणं ॥ ॐ नमो लोए सव्व साहूणं ॥

प्रश्नोत्तर १

प्रश्नः—श्री नमस्कार मंत्र के पांचवें पद में कहे हुए " लोए " शब्द का हेतु क्या है ?

उत्तर:—श्री अरिहंत जी, आचार्य जी, उपाध्याय जी, इन तीनों का प्राय: करके "साहरण" नहीं होना है और साधु जी महाराज का "साहरण" प्राय: करके कोई देवता मनुष्य क्षेत्र के बाहिर लोक में दूसरे ठिकाने ले गया हो तो उनको भी हमने नमस्कार करना है इस लिये "लोए" शब्द कहा है [२] श्री अरिहंत जी, आचार्य जी और उपाध्याय जी यह तीनों ही नंदीश्वर द्वीप में तथा रूचक द्वीप में तथा पंडक वन में नहीं जाते हैं और साधु जी महाराज जाते हैं इस लिये "लोए" शब्द कहा है [३] श्री अरिहंत जी, आचार्य जी तथा उपाध्याय जी यह तीनों ही पुरूष हैं और साधुजी महाराज में साधु साध्वी जी का दोनों का समावेश होता है [४] कितनेक भाव साधुजी महाराज अप्रमादि गुण-स्थान वाले गृहस्थलिंग में तथा अन्यलिंग में हैं उनको भी नमस्कार करना है इस लिये "लोए" शब्द कहा है श्री अरिहंत जी आचार्य जी उपाध्यायजी यह तीनों ही स्वलिंगमें ही होते हैं इसलिये "लोए" शब्द नहीं कहा [५] सिद्ध तो मुक्ति शिला के ऊपर है और श्री अरिहंत जी, आचार्य जी तथा उपाध्याय जी यह तीनों ही अढ़ाई द्वीप में है इस लिये इन चारों पदों में "लोए" शब्द नहीं कहा है और साधुजी महाराज अढ़ाई द्वीप में तथा अढ़ाई द्वीप के बाहिर तथा लोक में अन्य स्थान में भी होते हैं इस लिये पांचवें पद में "लोए" शब्द कहा है (शास्त्र: श्री "चंद्र प्रज्ञप्ति" सूत्रकी नवकारकी) जयाकि:—श्री केवली भगवान् समुद्घात

करते हैं तब उन्हों के आत्म प्रदेश संपूर्ण लोक में व्याप्त हो जाते हैं इसलिये " लोए " शब्द ग्रहण किया गया है क्योंकि वह प्रदेश साधु रूप ही है श्री केवली भगवान् की केवल समुद्घात स्वाभाविक से ही होती है। वेदनीय कर्म और आयु कर्म के सम करने के लिए.

प्रश्नोत्तर. २

प्रश्नः–साधु जी महाराज अपने हाथ से आज्ञा ले कर के पानी लेना कल्पे कि नहीं ?

उत्तरः–गृहस्थ पानी लेने की आज्ञा दे तो लेना कल्पे. (शास्त्रः- श्री "आचारांगजी" सूत्र श्रु० २ अ० १ उ० ७)

प्रश्नोत्तर. ३

प्रश्नः–नारियल के भीतर का पानी साधुजी महाराज को लेना कल्पे कि नहीं ?

उत्तरः—वह पानी   है इसलिये कल्पे.

प्रश्नोत्तर. ४

प्रश्न—साधुजी महाराज को चातुर्मास [चौमासा] तथा शेषकाल उपरांत रहना कल्पे कि नहीं ?

उत्तरः—रोगादिक कारण विना रहें तो कालातिकान्त दोष लगे [शास्त्रः—श्री "आचारांगजी" सूत्र श्रु० २ अ० २, उ० २]

प्रश्नोत्तर. ५

प्रश्नः—साधुजी महाराज को शेषकाल कितना करना और शेषकाल किये पीछे बाहिर कितना रह कर पीछे उस जगह आ सक्ते हैं ?

उत्तरः—साधुजी महाराज एक मास।शेषकाल रह कर दो मास बाहिर रह कर पीछे आ सक्ते हैं और साध्वी जी महाराज्ञी दो मास शेषकाल रह कर चार मास बाहिर रह कर पीछे आ सकती हैं (शास्त्र: "आचारांगजी" सूत्र श्रु० २; अ० २ में साधु साध्वी जी महाराज रहें उस से द्विगुणा त्रिगुणा काल बाहिर निकालना कहा है)

प्रश्नोत्तर ६

प्रश्नः—श्री "आचारांगजी" सूत्र के श्रु० २; अ० १, उ० १० में कहा है कि साधु जी महाराज खांड लेने को गया तब गृहस्थ ने अज्ञानता से नमक (लवण) दे दिया तो स्थान पर आकर देखनेसे मालूम हुई कि यह नमक है सो गृहस्थ का मकान बहुत दूर न होने से नमक लेकर जल्दी साधुजी महाराज गृहस्थ को बतला कर कहा कि- हे आयुष्मन् ? यह नमक तुमने जानते हुए दिया कि न जानते हुए तब गृहस्थ ने कहा कि- मैंने न जानते हुए दिया परंतु अब खुशी से देता हूं इसलिये आप भोगो तो वह नमक साधु जी महाराज खा ले तथा संभोगी साधु जी महाराज को बांट दे तो यह नमक सचित्त समझना कि नहीं ?

उत्तर:—यह नमक अचित्त है क्योंकि श्री "दशवैकालिक" सूत्र के अध्ययन ६ गाथा १८ में कहा है कि विड मुब्भे इम लोणं ॥ तिलंसप्पिंच फाणियं ॥ नतेसंतिही मिच्छंति ॥ नायपुत्त वउरया । अर्थ:- पक्का नमक तथा कची खांड का पका हुआ नमक, तेल, घी, गुड़ इतनी चीजें साधु जी महाराज वासी रखने की वांछा न करें जो कदाचित् सचित्त हो तो लेवे नहीं इससे ऊपर की गाथा का न्याय देखने से अचित्त नमक लेने की आज्ञा है, परंतु नियम उपरांत रखने की आज्ञा नहीं है इससे ऊपर के सूत्र में कहा हुआ नमक अचित्त समझना.

शंका—तुम अचित्त कहते हो तो पीछे उसी सूत्र में इस नमक का अफ़ासुक कहा है यह कैसे ?

समाधान:—अफ़ासुक इस ठिकाने सचित्त न समझें, क्योंकि उसी अध्ययन उ० १ में तीसरा पाठ में कहा है कि- साधुजी महाराज गृहस्थ को आहार पानी की इन्कार करते हुए गृहस्थ साधुजी महाराज के वास्ते आधाकर्मी चारों आहार तैयार करके दें तो इस प्रकार के आहार को अफ़ासुक जानके न लें यहां वह आहार सचित्त नहीं है परंतु अकल्पनीय है इससे न लें इस न्याय से नमक को पलटना पड़े

इसलिये अफ्रासुक कहा परंतु सचित्त न समझना और गृहस्थ से पूछने का कारण यह है कि गृहस्थ पीछे लें २ तो पलटना न पड़े-

प्रश्नोत्तर. ७

प्रश्नः—श्री " आचारांगजी " सूत्र श्रु० २, अ० १, उ० १० में कहा है कि- "मंसगं मच्छगं" भोच्चा अट्ठयाई कंटए जाव पविट्ठवेजा " इस पाठ में मांस मच्छी भोगने की आज्ञा दी यह कैसे ?

उत्तरः—दया मूल जैन सूत्रों में हिंसा की परूपणा नहीं हो सक्ती यहां पर अर्थ समझने वालों की भूल है. अर्थ समझने में गुरुगम की प्रथम आवश्यक्ता है. श्री 'चंद्रपन्नति" सूत्र का १० में पाहुडा का १४ में पाहुडा २ में कहा है कि रेवती नक्षत्र में जलचर का मांस खाके कार्य सिद्ध करें. यहां पर " जलचर " का अर्थ "जलज" अर्थात् जल में उत्पन्न हुये सिंघाडो ऐसा अर्थ होता है। सिंघोडा ऐसे ही मच्छी यह दोनों पानी में उत्पन्न होने से यह भूल होने योग्य है ऐसे ही ऊपर के पद में मांस

शब्द में लिखा ऐसी वस्तु को गिर (गर्भ) समझें। साधु जी महाराज को ऐसी वस्तु न लेनी कही जिस में खाने योग्य कम हो और पलटने योग्य पदार्थ कांटा गुठलियां अधिक हों फिर भी कोई गृहस्थ भूल से ऐसे पदार्थ साधु जी महाराज के पात्र में डाल देवें तो साधु जी महाराज क्या करें उसका खुलासा इस पद में यह कि गिर गिर खावे और कांटा गुठलियां आदि पलट देवे। विशेष खुलासा श्री "ज्ञाताजी" सूत्र के ५ में अध्ययन में "सेलग राजऋषिजी" के अधिकार से देख लीजिये। वहां मांस खाने की बिलकुल साफ आज्ञा नहीं दी.

प्रश्नोत्तर. ८

प्रश्नः—नीचे लिखे दो परस्पर विरोधी पदों का रहस्य बताओ.

(अ) श्री "भगवतीजी" सूत्र श० ५, उ० ४ में "हरिणगवेषि" के अधिकार में गर्भ साहरण

की चौभंगी में इसी तरह कहा है –(१) गभाओ गभ साहरइ, (२) जोनीयो जोनी साहरइ; (३) गभाओ जोनीयो साहरइ; (४) जोनीयो गभं साहरइ; इस में तीनों की श्री भगवंत ने ना कही चौथा की हां कही परंतु:—

(ब) श्री "आचारांगजी" सूत्र श्रु० २ अ० १५ में श्री भगवान महावीर स्वामीजी के गर्भ का साहरण हुआ वहां "गभाओ गर्भ साहरइ" यह पाठ है कैसे ?

उत्तर:—टीकाकार खुलासा करते हैं कि–एक गर्भ से दूसरे गर्भ में मेले इसका अर्थ है कि–एक माता की कुंख से दूसरी माता की कुंख में मेले इस कारण श्री "आचारांगजी" सूत्र में "गभाओ गर्भ साहरइ" यह पाठ कहा है. उत्तम पुरुष के गर्भ के टुकडे करके न निकाले इस कारण श्री भगवान् महावीर स्वामीजी का गर्भ योनि से सहारा है परंतु नाभि से नहीं निकाला है.

प्रश्नोत्तर. ९

प्रश्नः—श्री " प्रश्नव्याकरण " तथा श्री " उववाईजी " सूत्र में श्री तीर्थंकर देव तथा युगलीया के आहार के संबंध में ऐसा कहा है कि—" कंकगहणे कव्वोय परिणामे " इसका क्या अर्थ है ?

उत्तरः—" कंकगहणे " अर्थात् कंकपक्षी [बगुला] जैसे अपनी खुराक सारी की सारी चवाए विना खाता है ऐसे ही श्री तीर्थंकर देव तथा युगलीया अपना आहार चवाए विना उतारते हैं. "कव्वोय परिणामे" अर्थात् कबूतर जैसे कंकर आदि पचाता है ऐसे ही श्री तीर्थंकर देव तथा युगलीया को भी आहार पचता है.

प्रश्नोत्तर, १०

प्रश्न.—श्री "सूयगडांगजी" सूत्र के श्रु० २ अ० ५ गाथा ८ ९ में कहा है कि—कोई साधुजी महाराज आधाकर्मी

आहार करें तो उसको देख के कोई दूसरा साधुजी महाराज ऐसा विचार न करें कि- वह कर्म से लिपाता है अथवा नहीं लिपाता है यह दोनों ही संकल्प अनाचरण योग्य हैं तो यह प्रश्न होता कि-आधाकर्मी आहार करते कर्म से न लिपावे यह कैसे संभव हो ?

उत्तरः—टीकाकार खुलासा करते हैं कि-काल अकाल के कारण से गितार्थ ने इस प्रकार का आहार अमूर्छित-पने करने बाधक नहीं ऐसा टीकाकार कहते हैं परंतु अपना सूत्र की अपेक्षा देखने से तो पहिला तथा २४ में तीर्थंकर के समय के साधुजी महाराज एक तथा बहुत साधुजी महाराज के लिये तैयार किया आधाकर्मी आहार एक को तथा बहुत को कल्पे नहीं अथात् जिसके लिये किया हुआ उसको भी कल्पे नहीं. परंतु साधु साध्वीजी महाराज को भी कल्पे नहीं. और मध्यम के २२ तीर्थंकरों के साधु साध्वीजी महाराज को तो जिसके लिये आधाकर्मी आहार किया हो उसको भी न कल्पे दूसरेको कल्पे [शास्त्रः-श्री "बृहत्कल्प" सूत्र के उ० ४] इसलिये ऐसा आहार करते कोई साधुजी महाराज लिपावे और कोई न लिपावे यह कारण है कि--लेकिन दूसरी भी अपेक्षा से विचारने योग्य है. शिष्य आधाकर्मी आहार लावे

और गुरु शिष्य आहार करने बैठे उसमें शिष्य को आहार आकोटी [जान करके] भोगने के कारण से कर्म लगे और गुरु को न लगे ऐसे नीति व्यवहार दृष्टि से कह सक्ते है.

प्रश्नोत्तर. ११

प्रश्नः—श्री "ठाणांगजी सूत्र के दूसरे स्थान में श्री जिनराज देव पूर्व तथा उत्तर दिशा में साधुजी महाराज को दीक्षा देनी प्रथम मांडले बैठाना, लोच करना, वांचना देनी वगैरह मांगलिक कार्य करना कहा उसका क्या कारण ?

उत्तरः—पूर्व दिशा का नाम "त्रिमला" कहा है कारण कि—यह शुभ है और सोम का राज सुखकारी वर्तते है इस कारण पूर्व दिशा मांगलिक कही है ऐसे ही उत्तर दिशा मे श्री तीर्थंकर देव का वास शाश्वत् है तथा वैश्रवण भंडारी का राज होने से लोक को सुखकारी वर्तने है इसलिये उत्तर दिशा मांगलिक है.

प्रश्नोत्तर, १२

प्रश्नः—लोक में सर्व जीव अरूपी है परंतु श्री " ठाणांगजी " सूत्र के दूसरे स्थान में जीव को रूपी तथा अरूपी कहने का क्या कारण है ?

उत्तरः—सिद्धों को अरूपी कहा है और सांसारिक जीव को रूपी कहा है. कर्मों से रूप धर रहे हैं इससे.

प्रश्नोत्तर, १३

प्रश्नः—विभंगज्ञानी ऊंचा कितना देखे ? नीचे कितना देखे ?

उत्तरः—ऊंचा पहिले देवलोक तक और नीचे अधोलोक किन्तु नीचे लोक का देखना अति दुर्लभ है । श्री "ठाणां-

गजी " सूत्र के तीसरे स्थान में कहा है कि—अधोलोक अवधज्ञानी को भी देखना दुर्लभ है तो पीछे विभंगज्ञानी को तो कहना ही क्या ? इसलिये अधोलोक विशेष न देखें.

प्रश्नोत्तर, १४

प्रश्नः——एक समय एक स्त्री के उत्कृष्ट कितने जीवों का जन्म हो ?

उत्तरः——जघन्य १–२ और उत्कृष्ट जन्मे तो ४ जन्मे. (१) पुरुष (१) स्त्री (१) नपुंसक. (१) विंब. (अनेक तरह का आकार वाला जैसे सर्पाकार नोलिया पक्षी वगैर का आकार) पुनः (२) पुरुष. और (१) विंब अर्थात् (२) स्त्री और (१) विंब जने. इसी तरह नपुंसक का समझना. परंतु एक समय ४ उपरांत गर्भ न जने (शास्त्रः—श्री "ठाणांगजी " सूत्र के तीसरे स्थान में तथा श्री " रत्न चिंतामणी " ग्रंथ)

प्रश्नोत्तर. १५

प्रश्नः—लोक कहते हैं कि—तारा टूटा तो क्या तारा टूट पडता है ?

उत्तरः—तारा टूटता नहीं है ऐसा हो तो असंख्याता काल में आकाश खाली हो जावे परंतु ऐसा नहीं है. श्री " ठाणांगजी " सूत्र के तीसरे स्थान में कहा हैं कि—तीन प्रकार से तारों का रूप चलता हैं [१] वैक्रेय करते. [२] मैथुन सेवते.] ३] एक विमान से दूसरे विमान जाता, दूसरे विमान जाता रात के समय उसके शरीर का तेज से शिखा बंधती है वैक्रेय तथा परिचारणा करतें बादर पुद्गल नीचे डालता उसकी शिखा बंधती है उसको कहते है कि—तारा टूटा.

प्रश्नोत्तर. १६

प्रश्नः—भूमि कंप होने का कारण लोक ऐसा मानते हैं कि—शेषनाग डोलने से पृथ्वी कंपती है यह कैसे है ?

उत्तरः—यह तो केवल कल्पना है. शेषनाग के फन के ऊपर पृथ्वी रही हो तो शेषनाग कौन से आधार से रहा है ? नहीं; पृथ्वी तो घनवाय [वायु] के आधार से रही है. मशक के दृष्टांत समझाने से यह बात बराबर समझेंगे. मशक के नीचे के भाग में वायु भरके ऊपर पानी भरे परंतु एक बिंदु नीचे न जावे. इस न्याय से पृथ्वी, आकाश और वायु के आधार से रही है. भूमि कंप होने के ६ कारण श्री " ठाणांगजी " सूत्र के तीसरे स्थान में उ० ४ में यह कहा है कि— ३ कारण से भूमि कंपे. [१] इस पृथ्वी पर बड़े स्थूल पुद्गल के गिरने से भूमि कंप हो जाता है जैसे पहाड़ादिकों गिरने से. [२] वाणव्यंतर देव अपने भवन में रह कर ऊंचा नीचा हो कर कंपावे. [३] नागकुमार-सोवनकुमार देव आपस में युद्ध करें इसलिये भूमि कंपती है और तीन कारण से पृथ्वी " देश से " कंपे और द्वितीय तीन कारण से " सर्वथा " कंपे [१] पृथ्वी के नीचे का आधारभूत वायु टिलने से. [२] देवता बड़ी ऋद्धि का मालिक साधुजी महाराज को अपनी ऋद्धि बल आदि बतावे. [३] वैमानिक देव और भवनपति देव आपस में युद्ध करें यह तीन कारण से " सर्वथा " भूमि कंपे.

प्रश्नोत्तर. १७

✓ **प्रश्नः**—श्री " ठाणांगजी " सूत्र के तीसरे स्थान में कहा है कि—भिक्खु की बारहवीं प्रतिमा ग्रहण करें तो उनको तीन गुण होवे अथवा तीन अवगुण होवे. परंतु श्री " भगवतीजी " सूत्र के श० २ उ० १ में स्कंदकजी ने बारहवीं प्रतिमा ग्रहण कि परंतु कोई गुण न हुआ इसका क्या कारण है ?

उत्तरः—श्री " ठाणांगजी " सूत्र में जो तीन गुण कहा है वह तो उत्कृष्ट परिसह पडे इन आश्री परंतु निश्चयवाचक नहीं है. होवे तो तीन गुण भीतर को होवे परंतु सब को ऐसा समझना नहीं. उत्कृष्ट परिसह गुण होवे है. परंतु निर्जरा तो सब को होना है.

प्रश्नोत्तर. १८

प्रश्नः—श्री " भगवतीजी " सूत्र श० २ उ० ५ में कहा है कि—देवता स्त्री का रूप विक्रोवी परिचारणा न करे.

और श्री "ठाणांगजी" सूत्र के तीसरे स्थान में उ० १ में तीन प्रकार की परिचारणा कही उसमें देवता स्त्री को रूप विक्रोवी परिचारणा करें ऐसा कहा है यह क्या परस्पर विरोध नहीं ?

उत्तर:—श्री " भगवतीजी " सूत्र में अपेक्षा निषेध किया और श्री " ठाणांगजी सूत्र में हां कही उसका कारण यह है कि—देवता स्त्री रूप विक्रोवी और देवी पुरुष रूप विक्रोवी परिचारणा करे परंतु वैक्रेय रूप करने वाले को जो वेद हो वह वेद विकार बलवान समझना.

प्रश्नोत्तर. १९

प्रश्न:—श्री " भगवतीजी " सूत्र में कहा है कि—बाहिरका पुद्गल लिये विना विक्रोवी कर सके नहीं और श्री " ठाणांगजी " सूत्र के तीसरे स्थान में उ० १ में वैक्रेय के अधिकार में कहा है कि—बाहिर अभ्यंतर लिये विना वैक्रेय करे इस दोनों का फरक का समाधान क्या है ?

उत्तरः—पुद्गल लिये विना एक पक्ष का पुद्गल ले कर वैक्रेय करें इसलिये श्री " ठाणांगजी " में निषेध किया संभव है. भवधारणी रूप को गठारे–मठारे–समारे शोभनीक करें। उसको बाहिर का पुद्गल लेने की आवश्यक्ता नहीं जैसे मनुष्य अपने हाथ से बाल मुखादिक शोभनीक करता है। इस न्याय से समझना.

प्रश्नोत्तर. २०

प्रश्नः—जिस समय देवता चवे (देवलोक से च्युत हो) उस वक्त कितने चिन्ह हो ?

उत्तरः—दश चिन्ह हो. (१) पुष्प की माला मुरझावे. (२) लज्जा न रहे, (३) शरीर की शोभा जावे. (४) विमान आभरण कान्ति रहित देखे. (५) आलस्य आवे. (६) निद्रा आवे. (७) काम रंग भंग होवे. (८) दृष्टि फिरे. (९) कल्पवृक्ष मुरझाया देखे. (१०) शरीर में अरति उपजे. यह दश लक्षण पतित समय होवे. (शास्त्र:– कितनेक भेद श्री " ठाणांगजी " सूत्र के स्थान ३ में और कितनेक ग्रंथो मे कहा है)

प्रश्नोत्तर २१

प्रश्नः—श्री "ठाणांगजी" सूत्र के स्थान ३ उ० १ में मनुष्य के विषय तीन प्रकार के नपुंसक कहे वे कर्म भूमि, अकर्म भूमि तथा अंतर्द्वीप में २ वेद है और यहां नपुंसक का भेद कहा इसका क्या कारण ?

उत्तरः—अकर्मभूमि तथा अंतर्द्वीप में सम्मूर्छिम मनुष्य आश्री नपुंसक वेद लिया है.

प्रश्नोत्तर २२

प्रश्नः—सनत्कुमार, चक्रवर्ती मोक्ष गये कि देवलोक गये ?

उत्तरः—श्री 'ठाणांगजी" सूत्र के स्थान ४ उ० १ अंतक्रिया के अधिकार में कहा है कि—सनत्कुमार मोक्ष गये.

प्रश्नोत्तर २३

प्रश्नः—लोक में ४५ लाख योजन के कितने पदार्थ हैं ?

उत्तरः—चार पदार्थ हैं, (१) रत्नप्रभा नरक की पहिले पाथडे " सीमंत " नामक नरकावास. (२) मनुष्य क्षेत्र अढाईद्वीप. (३) " उडु " नामक विमान. (४) सिद्ध शिला. (शास्त्रः—श्री "ठाणांगजी" सूत्र के स्थान ४ में)

प्रश्नोत्तर २४

प्रश्नः—एक लाख योजन का कितना पदार्थ है ?

उत्तरः—चार पदार्थ है. (१) सातवीं नरक का " अपैठाण " नामक नरकावास. (२) सर्वार्थसिद्ध विमान. (३) पालकजाण विमान. (४) जंबुद्वीप. (शास्त्रः—श्री " ठाणांगजी सूत्र के स्थान ४ में कहा है).

प्रश्नोत्तर. २५

प्रश्नः—चमरेन्द्र आदि देवता के अणीका (सेना) और अणीका का अधिपति श्री "ठाणांगजी" सूत्र में ५ कहा है और श्री " जीवाभिगमजी " सूत्र में ७ कहा है यह कैसे ?

उत्तरः—५ अणीका और ५ अधिपति है वह तो संग्रामी कहा है (शाख:–श्री " ठाणांगजी " सूत्र के स्थान ५ उ० १ में और श्री "जीवाभिगमजी" सूत्र में कहा वह तो गंधर्व नाटक मिला लिया इससे दोनों ठिकाने अलग २ कहा है.

प्रश्नोत्तर. २६

• प्रश्नः—यहां से मर के पांच गति में से किस गति में गये यह किस चिन्ह से जानने में आवे ?

उत्तरः—श्री " ठाणांगजी " सूत्र के स्थान ५ में ऐसा कहा है कि–(१) पाव मार्ग से जीव निकले तो नरक में

गये समझना. (२) जंघा से जीव निकले तो तिर्यंच गति मे गये समझना. (३) हृदय से जीव निकले तो मनुष्य गति में गये समझना. (४) उत्तमांग से (शीर) जीव निकले तो देवगति में गये समझना. (५) सर्वांग से जीव निकले तो मोक्ष गति में गये समझना. इसी तरह अंग उपांगादिक से विशेष तथा अविशेष गति समझनी.

प्रश्नोत्तर २७

प्रश्नः—श्री " ठाणांगजी " सूत्र के स्थान ७ में सात कुलगर कहे हैं तथा श्री " भगवतीजी " सूत्र के श० ५ उ० ५ में और श्री " ठाणांगजी " सूत्र के स्थान १० में दश कुलगर कहे वह कैसे ?

उत्तरः—दश कहा वह गत उत्सर्पिणी काल का समझना. सात कहा वह वर्त्तमान अवसर्पिणी काल का समझना. कारण दोनों ही ठिकाने नाम अलग २ हैं इसलिये अलग कहा है.

प्रश्नोत्तर २८

प्रश्नः—ईशान कुमारी को कौनसी जाति में गिनना ? और उनको पति होवे या कि नहीं ?

उत्तरः—भवनपति देवकी जाति में समझना उनके ऊपर पति नहीं है और वह गोलवती भी नहीं है, विषय इच्छा प्राप्ति के समय अपने शरीर में से वैक्रेय पुरुष बना ले उनसे तथा किसी देवता के साथ भोग भोगती है परंतु उनके ऊपर पति नहीं है.

प्रश्नोत्तर २९

प्रश्नः—श्री " ठाणांगजी " सूत्र के स्थान ९ में अन्न वगैरह नव प्रकार से दान देने में पुण्य हो ऐसा कहा तो जो वस्तु देते हैं वह वस्तु पुण्य है या कि नहीं ?

उत्तर:—जो वस्तु दे वह वस्तु पुगय नहीं है ऐसे ही लेनेवाले कोई पुगय नहीं है परंतु प्राणी को दुःखी देख के अनरंग अनुकंपा आवे इतना पुण्य बंधे परंतु वस्तु में पुगय नहीं समझना.

प्रश्नोत्तर. ३०

प्रश्न:—श्री " ठाणांगजी " सूत्र के स्थान १० में दश प्रकारकी गति कही है इसमें सिद्धोंकी विग्रह गति कही है वह किस कारण से?

उत्तर—यह बोल पद पूरण समझना तथा लिखने वालों ने यह अर्थ किया है "वि" अर्थात् आकाश "ग्रह" अर्थात् ग्रहो अर्थात् आकाश को स्पर्श के समश्रेणी जाते है परंतु सिद्ध विग्रह गति नहीं करते है पीछे तत्त्व केवली गम्य.

प्रश्नोत्तर. ३१

प्रश्न—श्री " ठाणांगजी " सूत्र के स्थान १० में दश अछेरा कहा है इसमें ऐसा कहा कि—"अवतरीए चंद्र

सूरगाणं " अर्थात् उतरा चंद्रमा और सूर्य इस पर कोई कहे कि--चंद्र, सूर्य लोक में विमान सहित उत्तरा फिर कोई कहते हैं कि--मूलरूप से आया, विमान वहां ही रहा ऐसा कहते हैं यह कैसे ?

उत्तर:—चंद्र सूर्य विमान सहित उतरा ऐसा कहा है उसका उत्तर यह कि—जब विमान उतरा तो लोक की स्थिति भी फिरनी चाहिये और फिर विमान नीचे आया तो कैसे समाया ? कारण कि विमान तो शाश्वत है यह संकोचने वाले पदार्थ नहीं है तो कैसे समाया ? फिर शाश्वती वस्तु मूल ठिकाने से सरके कैसे ? तो यह इस प्रकार देखता विमान सहित आया यह असंभव है.

अत्रशंका---दूसरा कहते हैं कि—मूलरूप मे आया जब कोई कहे कि—श्री तीर्थंकर के उत्सव में मूलरूप से आते हैं तो शंका कैसी ?

तत्रोत्तर—मूलरूप से आवे परंतु उत्तर वैक्रेय शरीर बना कर आवे कारण कि—जो तीर्थंकर के समय जितनी अवगाहना होवे इतनी अवगाहना बना कर आवे परंतु चंद्र, सूर्य का देव, मूलरूप अर्थात् भवधारणी शरीर जो है उस रूप

से न आवे कारण कि—वह तो नग्न भाव है तो उस रूप से आवे तो लोक में आश्चर्य लगे। इसलिये उत्तर वैक्रेय बनाकर आवे परंतु चंद्र, सूर्य का देव मूलरूप अर्थात् भवधारणी रूप से आया अर्थात् समवसरण में आश्चर्य लगा यह संभव है. पीछे तत्त्व केवली गम्य. बहुत सूत्री कहे वह सत्य.

प्रश्नोत्तर ३२

प्रश्नः---" श्री समवायांगजी " सूत्र के २३ वें समवायांगजी में २३ श्री तीर्थकरों ने सूर्योदय केवलज्ञान उत्पन्न हुआ और श्री "ज्ञाताजी" सूत्र में श्री मल्लिनाथ भगवान् को "पचानंकाल **समयंसी**" ऐसा कहा तो कैसे समझना ?

उत्तर —" पचानंकाल " अर्थात् पिछले प्रहर ऐसा नहीं समझना परंतु बारह बजे से पहिले समझना; कारण कि--बारह बजे तक सूर्योदय काल समझे. और पिछे का काल शेष समझे तो श्री मल्लिनाथ भगवान् को सूर्योदय केवल-ज्ञान उत्पन्न हुआ कहा वह ऊपर के न्याय से समझ में आता है.

प्रश्नोत्तर. ३३

प्रश्नः—श्री " समवायांगजी " सूत्र में श्री मल्लिनाथ भगवान् के ५९०० अवधज्ञानी कहा और श्री " ज्ञाताजी सूत्र " में २००० कहा सो कैसे ?

उत्तरः—श्री " समवायांगजी " सूत्र में ५९ में श्री मल्लिनाथ भगवान् का ५९०० अवधज्ञानी समुच्चय कहा और श्री " ज्ञाताजी " सूत्र में २००० कहा वह परम अवधज्ञानी जानना.

प्रश्नोत्तर. ३४

प्रश्नः—श्री "समवायांगजी" सूत्र में श्री मल्लिनाथ भगवान् के ५७०० मनःपर्यव ज्ञानी कहा और श्री "ज्ञाताजी" सूत्र के अ० ८ में ८०० कहा वह कैसे ?

उत्तर:—श्री "ज्ञाताजी" सूत्र में " ८०० कहा वह विपुलमति मनःपर्यव ज्ञानी का धनी समझना और श्री "समवायांगजी " सूत्र में ५७०० कहा वह ऋजुमति तथा विपुलमति दोनों एक साथ ही समझना.

प्रश्नोत्तर ३५

प्रश्न:—श्री " समवायांगजी " सूत्र के ३२ वें " समवायांगजी " में ३२ इंद्र कहे और श्री "जंबुद्वीप पन्नति" सूत्र में ४८ कहे और श्री " ठाणांगजी " सूत्र के स्थान दूसरे में ६४ कहे वह कैसे ?

उत्तर:—श्री " समवायांगजी " सूत्र में कहे वह वाणव्यंतर अल्प ऋद्धि वाले ३२ विना कहे और श्री "जंबुद्वीप पन्नति" में वाणव्यंतर का १६ बड़ा के ४८ कहे और सर्व मिल के ६४ कहे.

प्रश्न—श्री "समवायांगजी" सूत्र ३४ में "समवायांगजी" की टीका में लिखा है श्री भगवान् विचरे वहां २ सौ २ गाऊ तक अर्थात व्याधि और "मारी" (मृगी) रोग न हो यह कैसे ?

उत्तरः—दैवकृत अथवा ग्राम नगर देश संबंधी अतिशय भयंकर उपद्रव न हो और "विपाक" सूत्र में अभंगसेन चोर ने कुटुंब सहित मारा वह राज विरुद्ध कसुर (अपराध) होने से अतिशय नहीं लगता है, तथा गोशाला ने श्री भगवान के साधुजी महाराज को समवसरण में जला कर भस्म किया तथा श्री भगवान के छः मास तक लहू दस्त हुवे इसमें भी अतिशय नहीं लगता है और "अछेरा" आश्चर्य भूत है।

प्रश्नोत्तर ३७

प्रश्नः—श्री तीर्थंकर, चक्रवर्ती, वासुदेव तथा बलदेव यह चारों पुरुष चौथे गुणस्थान से छठे गुणस्थान में जावे परन्तु पांचवें गुणस्थान का स्पर्श न करें इसका क्या कारण है ?

उत्तरः—पांचवां गुणस्थान कायरपणे का है कैसे कि—जब आनंदजी आदि श्रावक ने व्रत ग्रहण किया तब ऐसा कहा कि धन्य है ? राजा, ईश्वर, तलवर, सेठ, सेनापति वगैरह ने आपके पास दीक्षा अंगीकार कि है, परन्तु ऐसा करने में असमर्थ हूं, इस कारण उत्तम पुरुष तो शूरा है इससे कायरपणा नहीं बतला के शूरपणे छठा गुणस्थान अंगीकार करें परन्तु पांचवां गुणस्थान स्पर्श नहीं करें. (शास्त्रः—श्री " समवायांगजी " सूत्र के ५४ वें " समवायांगजी " की).

प्रश्नोत्तर ३८

प्रश्नः—धातकीखंड और पुष्कर द्वीप का मेरू कितना ऊंचा है ?

उत्तरः—८४००० योजन का ऊंचा है मूल में प्रत्येक २ एक हजार योजन का ऊंचा है और ८४००० योजन चाहिए है. (शास्त्रः—क्षेत्र समास की तथा श्री "समवायांगजी" सूत्र की)

प्रश्नोतर ३९

प्रश्नः—सुधर्मावतंशक विमान तथा ईशानवतंशक विमान लंबा व चौड़ा कितना ?

उत्तर.—साढ़े बारह लाख योजन लंबा चौड़ा है (शास्त्रः—श्री "समवायांग" जी सूत्र की)

प्रश्नोतर ४०

प्रश्नः—नरक में परस्तर कहा है और देवलोक में परस्तर कहा उसमें क्या फरक है ?

उत्तरः—नरकमें परस्तर कहा वह चारों दिशाओं में भींतों से जड़ा हुआ है। परन्तु खुला नहीं कारण कि—पहिली

नरक मे तीन काड हैं। वह चारों बाजु की भीतोंमे विभाग रूप है उसको कांड कहा है। और देवलोक में जो परस्तर है वह चारों भीतों रहित और खुल्ला ऊपरा ऊपर रहा है उसको परस्तर कहा है (शाख:—श्री "समवायांगजी" सूत्र की)

प्रश्नोतर ४१

• **प्रश्न**—नारकी में परस्तर (पाथडा) मंजिल माफिक है तो देवलोक में अन्तर कैसे समझना ?

उत्तर:—असंख्यात योजन की क्रोड़ा क्रोड़ी ऊंचा जावे वहां पहिला देवलोक आवे और उनका पहिला परस्तर आवे वह कहते हैं. २७०० योजन का भूतला है और ५०० योजन का महेल है और उसके ऊपर ध्वजा है और उसके ऊपर दूसरा परस्तर का भूतला आवे और पीछे महेल आवे। इस भ्रांति सर्व देवलोक का परस्तर चारों तरफ खुल्ला है और नारकी का परस्तर चारों ही तर्फ है। आम की गुठली के माफिक अन्तर समझना.

प्रश्नोत्तर ४२

प्रश्न—बिना इच्छा शील पाले और क्षुधा, तृषा सहन करके यहां से मर के कहां उत्पन्न होवे ?

उत्तर:—वाणव्यंतर देव के विषय जघन्य दश हजार वर्ष की स्थितियें उपजे। उत्कृष्ट पल्योपम की स्थितियें उपजे. अकाम निर्जरावाला असंजती (शास्त्र:-श्री " भगवतीजी " सूत्र के श० १ उ०१)

प्रश्नोत्तर ४३

प्रश्न:—यहां से जीव परभव जावे जब ज्ञान, दर्शन, चारित्र साथ में ले जावे कि नहीं ?

उत्तर:—ज्ञान, दर्शन साथ में ले जावे। परन्तु चारित्र न ले जावे (शास्त्र:-श्री " भगवतीजी " सूत्र के श० १ उ० १)

प्रश्नोत्तर, ४४

प्रश्नः—देवकुरू, उत्तरकुरू का युगलीया को कब आहार की इच्छा उपजे ?

उत्तरः—देवकुरू, उत्तरकुरू का मनुष्य युगलीया को अठम भक्त (तीसरे दीन) आहार की इच्छा उपजे। परंतु उसी क्षेत्र के तिर्यच युगलीया को छठ भक्त (दूसरे दिन) आहार की इच्छा उपजे। इसलिये तिर्यच को छठ भक्त कहना और मनुष्य को अठम भक्त कहना (शास्त्रः-श्री " भगवतीजी " सूत्र के श० १ उ० २)

प्रश्नोत्तर, ४५

प्रश्नः—जीव कौन से कर्म की उदीरणा करें ?

उत्तरः—उठाणादिक पांच बोल कर के उदीरणा योग्य कर्म की उदीरणा करें। परंतु उदय हुआ पीछे उदीरणा न

करें. (शास्त्र:-श्री " भगवतीजी " सूत्र के श० १ उ० ३) ऐसे ही आकांक्षा मोहनीय कर्म की उदीरणा की है। उसको उपशांत करें. (क्रोध उत्पन्न शांतवत्) परंतु उदय आवे पीछे उपशांत न कर सके.

प्रश्नोत्तर ४६

प्रश्न:——साधुजी महाराज आकांक्षा मोहनीय कर्म कितने प्रकार से भोगवे ?

उत्तर:——१३ बोल कर के भोगवे:-मांहो मांहि अंतर पडे. वह (१) ज्ञान अंतर. (२) दर्शन अंतर (३) चारित्र अंतर (४) लिंग अंतर. (५) प्रवचन अंतर. (६) प्रवर्ज्या अंतर. (७) कल्प अंतर. (८) मार्ग अंतर. (९) मतांतरे. (१०) भंगांतरे. (११) नय अंतर. (१२) नियमांतरे. (१३) प्रमाण अंतर । यह १३ बोल कर के आकांक्षा मोहनीय कर्म वेदे. (शास्त्र:-श्री " भगवतीजी " सूत्र के श० १ उ० ३)

प्रश्नोत्तर ४७

प्रश्नः—श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० १ उ० ३ में कहा है कि–एकेन्द्रिय से चौरेन्द्रिय तक के जीव ज्ञान मनादिक विना आकांक्षा मोहनीय कर्म कैसे वेदे ?

उत्तरः—जिस तरह क्रोध, मान, माया, लोभ, सुख दुःख वगैरह अजानपणे जीव वेदे है । तैसे ही आकांक्षा मोहनीय कर्म वेदे है । परंतु संज्ञा तर्क वगैरह से नहीं वेदे और "जंजिणेहिं पवइयं" आदि पाठ है वह तो समुच्चय है। वह संज्ञी के लिये जानना । परंतु एकेन्द्रियादिक असंज्ञी के लिये यह पाठ नहीं जानना । कैसे कि–उनके मनादिक नहीं है ।

प्रश्नोत्तर ४८

प्रश्नः—मोहनीय कर्म के उदय से उत्तम गुणस्थान से नीचे गुणस्थान में आवे कि नहीं ?

उत्तरः—पले गुणस्थान से उतरते बाल वीर्यपणे और बाल पंडितवीर्यपणे आवे अर्थात् श्रावकपणा पावे तथा अज्ञानपणा पावे और मोहनीय कर्म को उपशम हो तो पले गुणस्थाने चडे। वह श्रावकपणा तथा साधुजीपणा पावे (शास्त्रः—श्री "भगवतीजी सूत्र के श० १ उ० ४)

प्रश्नोत्तर ४९

प्रश्नः—मोहनीय कर्म के उदय में क्या रुचे ?

उत्तरः—पूर्व अहिंसा धर्म रुचता था। परंतु उदय भाव से पीछे हिंसा धर्म रुचे. (शास्त्रः—श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० १ उ० ३)

प्रश्नोत्तर ५०

प्रश्नः—दान देना वह तो क्षयोपशम भाव से दे सक्ते हैं तो दान देनेवाला जीवों मिथ्यात्वी भी है और सम्यकत्वी

भी है तो दोनों में क्या फरक समझना ?

उत्तर:—दानांतराय कर्म तो दोनों के क्षयोपशम हुआ है। इनसे दान देने की रुची प्रगट हुई है। परंतु मिथ्यात्वी असंयती को दान दे के अच्छा (भला) मानता है, और समदृष्टि जीव असंयति को दान दे के भला मानता है तो दोनों में फरक यह कि—मिथ्यात्वी जीव के दानांतराय कर्म का क्षयोपशम हुआ है। परंतु मिथ्यात्व मोहनीय कर्म का उदय जानना, और समदृष्टि जीव के मिथ्यात्वी मोहनीय और दानांतराय यह दोनों का क्षयोपशम हुआ है. [शास्त्र:—श्री " भगवतीजी " सूत्र के श० १ उ० ४]

प्रश्नोत्तर ५१

प्रश्न:—मोहनीय कर्म का उदयवाला जीवों परलोक की क्रिया करें ?

उत्तर:—करें तो सही। परंतु बाल वीर्यपणे करें. [शास्त्र:—श्री " भगवतीजी " सूत्र के श० १ उ० ४]

प्रश्नोत्तर. ५२

प्रश्नः—नारकी की मध्यम स्थिति में क्रोध, मान, माया, लोभ का ८० भांगा करने का क्या कारण ?

उत्तरः—नारकी की मध्यम स्थिति का स्थानक अशाश्वता है। इसलिये क्रोधी नेगिया एक वचन भी लावे है। इस कारण से कषाय का ८० भांगा लावे है और जघन्य उत्कृष्ट स्थिति में एक वचनीय नहीं। इसलिये २७ भांगा कहा है.
[शास्त्रः—श्री " भगवतीजी " सूत्र के श० १ उ० ५]

प्रश्नोत्तर. ५३

प्रश्नः—जघन्य अवगाहना में ८० भांगा क्रोध, मान, माया, लोभ का कहा इसका क्या कारण ?

उत्तर:—जघन्य अवगाहना उत्पन्न होते वक्त होती है और कोई वक्त क्रोधी एक ही आके उत्पन्न होवे। उस आश्री ८० भांगा कहा है और मध्यम उत्कृष्ट अवगाहना में २७ लाभे। इसी तरह सब बोल में जिहां ८० भांगा कहा है। वह स्थान अशाश्वता आश्री एक वचन समझना (शाख:-श्री "भगवती जी" सूत्र के श० १ उ० ५)

प्रश्नोत्तर ५४

प्रश्न:—सूक्ष्म अपकाय सदैव वरसों करते हैं वह कैसे ?

उत्तर:—सदैव रात दिन तीन लोक में वरसों करते हैं. (शाख:-श्री "भगवती जी" सूत्र के श० १ उ० ६)

प्रश्नोत्तर ५५

प्रश्नः—श्री " भगवतीजी " सूत्र के श० १ उ० ७ में कहा है कि-जीव गर्भ में रहा हुआ चतुरंगिणी सेना बनावे है तो बाहिर निकल के बनावे कि भीतर रह कर बनावे है ?

उत्तरः—गर्भ को जीव वैक्रेय समुद्घात भीतर रह कर ही करें। परंतु मूलरूप से बाहिर न निकले क्योंकि मूलरूप से बाहिर निकलने की तथा बैठने की शक्ति नहीं और प्रदेश बाहिर निकालने की शक्ति है । आत्म प्रदेश अरूपी हैं और उसको कोई भीतर रह कर समुद्घात करके प्रदेश बाहिर निकाले, और प्रदेशों में बाहिर का पुद्गल लेकर बाहिररूप बनावे । जैसे कोई लोहे की कोठी में रहा हुआ बाहिर अनेक वैक्रेय रूप करें ऐसे जानना. वैक्रेय रूप जैसे बाहिर से बने। ऐसे ही अभ्यंतर से बन सके कैसे-कि वैक्रेय रूप करने में आत्म प्रदेश की जरूरत हैं। परन्तु मूल शरीर की जरूरत नहीं। जो मूल शरीर बदल कर ऐसा ही दूसरा रूप करने की जरूरत पड़े तो

मूल शरीर की जरूरत पड़े। परंतु अन्य दूसरा रूप करने में मूल शरीर की बिलकुल जरूरत नहीं। आत्म प्रदेश से रूप करते हैं। जैसे देवता वैक्रेय समुद्घात करके शरीर से आत्म प्रदेश बाहिर निकल कर आत्म प्रदेश से बाहिर का पुद्गल ग्रहण करके रूप बनावे ऐसे ही यह गर्भ में रहा हुआ जीव रूप बना सकते हैं.

प्रश्नोत्तर ५६

प्रश्नः—श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० उ० १ में कहा कि-वायु स्पर्श से मृत्यु होवे। परंतु बिना स्पर्श से न मरे तो घनवायु आदिक तो स्थिर हैं तो उनका मृत्यु कैसे होवे ?

उत्तरः——वायु बिना स्पर्श से मृत्यु नहीं होता। इसलिये घनवायु अस्थिर हैं(शास्त्र:-स्थान ३ में सर्वथा पृथ्वी चले) वहां कहा है कि-घनवायु गुंजे हैं। इनसे घनोदधी कंपे हैं. इनसे पृथ्वी सर्वथा चले हैं तो इस न्याय से स्पर्श से मरे. वायु-

नाम की उत्कृष्ट स्थिति तीन हजार वर्षों की है। यह वनस्पति आदिक की जाननी। क्योंकि वहां बहुत समय तक स्थिर रह सके। इसलिये स्पर्श से मरे किन्तु बिना स्पर्श से मृत्यु न होवे.

प्रश्नोत्तर ५७

प्रश्नः—श्री "भगवती जी" मूल के श० २ उ० १ में स्कंधकजी के अधिकार में कहा कि-श्री भगवान "वियट्टभोइ" इस का अर्थ नित्य भोजी ऐसा अर्थ किया है और नमोत्थुणं के पाठ में "वियट्ट छउमाणं" इस का अर्थः—वहां निवर्त्या छद्मस्थपणा से ऐसा अर्थ किया है तो स्कंधकजी के अधिकार में कैसे समझें ?

उत्तरः—स्कंधकजी के अधिकार में कहा है। इसका अर्थ यह है कि उस काल उस समय के विषय अर्थात् स्कंधक जी आया उस समय श्री भगवान "वियट्ट" नाम निवर्त्या "भोइ" नाम भोजन से इस प्रमाण से अर्थ समझना.

तथा "वियट भोइ" का अर्थः—वृत्ति में ऐसा किया है किः-सूर्य के निवृत ने २ से भोजन करते हैं अर्थात् दिन में एकवार भोजन करते हैं और भोजन करने से कैसा शरीर देदीप्यमान लगते हैं वगैरह वहां अलंकार है इस न्याय से श्री भगवान् नित्य भोइ हैं ऐसा कहने में वाधक नहीं.

प्रश्नोत्तर ५८

प्रश्नः—श्री "भगवती जी" सूत्र के श० २ उ० १मे कहा हैकिः-वारह प्रकार के वाल मरण करें तो जीव अनंत संसार को वढ़ावे ऐसा कहा है. और श्री " ठाणांगजी " सूत्र के स्थान २ में किसी कारण से २ मरण की आज्ञा है सो कैसे ?

उत्तरः—श्री "ठाणांगजी" सूत्रमें आज्ञा कही वह तो शील रखनेके लिये है। परन्तु वह वाल मरण नहीं है। किन्तु [illegible] होते हैं। इसमें आज्ञा कही है।

प्रश्नः—सकाम निर्जरा किसको कहनी ?

उत्तरः—सकाम निर्जरा का २ भेद हैं. (१) समदृष्टि सकाम निर्जरा. (२) मिथ्यात्वी को सकाम निर्जरा. जिस में समदृष्टि जीव भव घटनेकी इच्छा सहित अणसनादिक १२प्रकार की भीतर तपस्या अंगीकार करें। उसको सकाम निर्जरा कहनी और यह संसार घटाती है और मिथ्यात्वी जीव दो प्रकार के हैं(१) उर्ध्वमुखी (२) अधोमुखी. उस में जो उर्ध्वमुखी जीव है। वह परभव की सुखकी इच्छा सहित तपस्या करें। उसको सकाम निर्जरा कहनी. वह संसार घटानेमें कारणरूप होती है. (शाखः श्री "विपाक" सूत्र के अ० ११ में) सुमुख गाथापति आदिक की तरह और जो अधोमुखी जीव तो लोभ सहित इच्छा से तपस्या करे। उसको भी सकाम निर्जरा कहनी। परंतु निर्जरा से संसार वढ़ाते हैं (शाखः श्री "भगवती जी" सूत्र के श० २ उ० १)

प्रश्नोत्तर ६०

।प्रश्नः—श्री केवली महाराज के आहार संज्ञा नहीं हैं तो तेरहवां गुणस्थान मे रहा हुआ जीव आहार करते हैं तो उनको संज्ञा कहनी कि नहीं ?

उत्तरः—श्री केवली महाराज आहार करते हैं। परन्तु संज्ञा नहीं। जैसे साधुजी महाराज के फोडा आदि व्याधि होने से मोह रहित सुखशाता संयम के अर्थे जैसे उपचार करते हैं। इस न्याय से श्री केवली महाराज क्षुधा वेदनीय कर्म के उपशम करने के लिये आहार करते हैं। परन्तु वह संज्ञा नहीं।

प्रश्नोत्तर ६१

प्रश्नः—श्री केवली महाराज आहार करते हैं। ऐसा किस ठिकाने हैं ?

उत्तर:—श्री " भगवतीजी " सूत्र श० २ उ० १ में स्कंधजी के अधिकार में श्री भगवान महावीर स्वामीजी ने आहार किया तथा श्री " ज्ञाताजी " सूत्र में श्री मल्लिनाथ भगवान दो उपवासों के पारणे के वास्ते गए वगैरह। प्रथम द्वाचार तथा दान का अधिकार हैं। इस न्याय से श्री केवली महाराज क्षुधा वेदनीय के कारण आहार करते हैं। इसमें शंका नहीं है।

प्रश्नोत्तर ६२

प्रश्न:—मनुष्य के गर्भ वास में जीव की जघन्य स्थिति अंतर मुहूर्त की और उत्कृष्टि १२ वर्ष की और काय स्थिति करें तो उत्कृष्ट २४ वर्ष रहें इसी तरह (श्री भ० सू० श० २ उ० ५ में कहा है) सो कैसे ?

उत्तर:—एक जीव माता की कुंख में १२ वर्ष रहें। पीछे वहां से मर के दूसरी माता की कुंख में १२ वर्ष रहें।

ऐसे ही २४ वर्ष की काय स्थिति करें तथा उन्हीं माता के गर्भ में फिर उपजे ।

अत्र शंका—तिवारे कोई कहै कि–उसी गर्भ में उपजे वह कसे ?

तत्रोत्तरः—उसी गर्भ में न उपजे (शास्त्रः श्री " भगवतीजी " सूत्र के श० १५) में श्री भगवान ने गोशाला को कहा कि–वनस्पति में तो पोंढ परिहार हैं। परंतु मनुष्य में नहीं अर्थात् मनुष्य के कलेवर में पीछे मनुष्य न उपजे। कारण कि–माता पिता का संवध होना चाहिए। विना संयोग न उपजे और माता पिता का संबंध होवे। तिवारे नया शरीर बंधे–उस में दुसरा २२ वर्ष पूर्ण करें।२४ वर्षकी स्थिति मनुष्य के गर्भ वास में जीव करें। अर्थात् दूसरी माता की कुंख में १२ वर्ष रहें। परंतु बीच में अंतर न पड़े। ऐसा समझना।

प्रश्नोत्तर ६३

प्रश्नः—तिर्यंच गर्भ में एक भव रहें तो कितने काल रहें !

प्रश्नोत्तर ५९

प्रश्न.—तिर्यंच गर्भ में एक भव रहे तो कितने काल रहे ।

उत्तर:—जघन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्ट आठ वर्ष तक रहें (शास्त्र:-श्री " भगवतीजी " सूत्र के श० उ० ५)

प्रश्नोत्तर ६४

प्रश्न:—बाह्य तप किस को कहना और अभ्यन्तर तप किस को कहना ?

उत्तर—बाह्य तप तो शरीर को शोसन रूप हैं । इन तपश्चर्यादिक से "तो अमोस्यादिक लब्धि" की प्राप्ति होती है और अभ्यन्तर तप से शुद्ध अंतरंग भाव तप से अनंत कर्म की निर्जरा होती है ।

प्रश्नोत्तर ६५

प्रश्न:—श्री " भगवतीजी " सूत्र श० ५ उ० १ में कहा है कि:—सूर्य आठों दिशाओं में उदय होता है और आठों में अस्त होवे तो फिर पूर्व दिशा किस को कहनी ?

उत्तर:—भरतक्षेत्र की अपेक्षा से जो पूर्व दिशा कही है। उसको भी पूर्व दिशा कहनी।

शंका:—भरतक्षेत्र में तो सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है। इस लिए उनको पूर्व दिशा कहना बाधा नहीं। परन्तु बाकी के तीनों क्षेत्रों मे तो पूर्व दिशा में सूर्य उदय होता नहीं है। तो पीछे उन क्षेत्रवालों को पूर्व दिशा कौन सी समझनी।

उत्तर—निषेढ पर्वत के ऊपर पहिले मांडले की आदि है। इस से पूर्व दिशा उसको ही कहनी।

विशेष शंका:—पहिले मांडले की आदि तो निलवंत पर्वत ऊपर भी है तो वह पूर्व दिशा कैसे न कही ?

उसका उत्तर:—ऊपर के श० ५ उ० १ में श्री जिनराज देव ने कहा कि—पहिले समय आवलिका ऐसे ही यावत् युग की आदि प्रथम भरत ईरवर्त क्षेत्र में स्थापी हैं और उसके दूसरे क्षेत्रों में समय होता है। उस अपेक्षा से पूर्व उसी को ही कहा।

शंका—जिस वक्त भरतक्षेत्र में सूर्य उगे हैं। उसी ही वक्त ऐरवर्त क्षेत्र समय मानते हैं तो वहां पूर्व न कही उसका क्या कारण ?

उत्तरः—श्री "जंबूद्वीप पन्नति" सूत्र में महाविदेह क्षेत्र का २ भाग कहा है। वहां पूर्व तथा पश्चिम महाविदेह कहा है। यह पन्नवणा माहे जंबूद्वीप आश्री है तथा (श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० १६ उ० १३ में) दस दिशा कही है। परन्तु वहां मेरु पर्वत से पूर्व दिशा को पूर्व कहा है और सब कारण से सारे लोक में वह ही पूर्व दिशा संभव है और सब क्षेत्रोंवाले उनको ही पूर्व दिशा मानते होंगे। पीछे तत्वार्थ केवली गम्य।

प्रश्नोत्तर ६६

प्रश्न—श्री अनुत्तरवासी देवता को प्रश्नादि की शंका होवे जब क्या करें ?

उत्तर:-- वह देवता वहां ही रहा हुआ मन से श्री केवली भगवान् से प्रश्न पूछे जब श्री केवली भगवान् मन से उत्तर दें। श्री अनुत्तरवासी देवता वहां बैठा समझ जावें।

अत्रशंका——जब कोई शंका करे कि-श्री केवली भगवान तो केवल ज्ञान से जाने। परन्तु श्री अनुत्तरवासी देवता कैसे जाने ?

तत्रोत्तर:- श्री अनुत्तरवासी देवताओं को मनोद्रव वर्गणा लब्धि है। इस से श्री केवली भगवान् के मन की बात जाने है. (शास्त्र:- श्री " भगवती " जी सूत्र के श० ५ उ० ४)

प्रश्नोत्तर ६७

प्रश्न:-कोई मनुष्य किसी जीवके ऊपर झूठा कलंक दें तो पीछे देनेवाला मनुष्य ऐसा ही कलंक जैसे तैसे भोगे कि नहीं?

उत्तर:—जैसा कलंक जिस भव में दिया हो वैसा ही कलंक जैसे तैसे भोगना है। मनुष्य भव में दिया हो तो पीछे मनुष्य होवे तब वैसा ही कलंक भोगना पड़े (शास्त्र:- श्री "भगवती" जी सूत्र के श० ५ उ० ६ में)

प्रश्नोत्तर ६८

प्रश्न:—पांच स्थावर में विरह नहीं पड़ता है तो भी श्री "भगवती" जी सूत्र के श० ५ उ० ८ में कहा कि- स्थावर काय वृद्धि पावे, हानि पावे तथा अवस्थित रहे तो जघन्य एक समय और उत्कृष्ट आवलिका के पांच असंख्याता भाग अवस्थित रहे यह कैसे?

उत्तर:— पांच स्थावर में विरह का अभाव है। परन्तु किसी वक्त ज्यादे और मरे कम। यह आश्री अवस्थित कहा है कि—जैसे दस निकले तो दस आवे। परन्तु कम ज्यादा आवे जावे नहीं इसलिये।

प्रश्नोत्तर ६९

प्रश्नः— श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० ६ उ० ८ में कहा है कि- सुधर्मा तथा ईशान देवलोक मे बादर पृथ्वी बादर अग्नि नहीं है। ऐसा कहा तो विमान पृथ्वी दल है तो नहीं कहने का क्या कारण ?

उत्तरः— देवलोक में नहीं समझना। परन्तु "अहेत्वाम्न" देवलोक के नीचे समझे; अर्थात् आकाश में न हो। परन्तु तामसकाय की अपेक्षा से बादर पानी वनस्पति वायु है। ऐसा समझे परन्तु पृथ्वी और अग्नि यह दो बोल न गिनने।

प्रश्नोत्तर ७०

प्रश्नः—श्रावकजी त्रस जीव मारने का प्रत्याख्यान करते हैं तो अब्रह्मचर्य सेवते। त्रस जीव की विराधना होती है तो व्रत भंग हो या कि नहीं ?

६१॥

उत्तरः-स्त्री को सेवने से त्रस जीव की घात हो। इसका पाप तो लगे। परन्तु व्रत नहीं भंग होता। कारण कि- श्री " भगवती " जी सूत्र के श० ७ उ० १ में कहा है कि-श्रावकजी त्रस जीव के मारने का प्रत्याख्यान करते हैं। परन्तु पृथ्वी खोदते त्रस जीव मरें। इसका पाप लगे। परन्तु व्रत नहीं भंग होता। कारण कि- मन का संकल्प पृथ्वी खोदने का है परन्तु त्रस जीव मारने का नहीं है।

प्रश्नशंका- पृथ्वी खोदते तो अजानपणे त्रस जीव मरें तो व्रत नहीं भंगे। परन्तु मैथुन तो जान कर सेवता है तो **व्रत भंग होना चाहिये।**

तत्रोत्तरः-इस व्रत में ही आगार है कि- "जाणी पीछी" मारने का प्रत्याख्यान इसका अर्थः-" जाणी" अर्थात् ज्ञान दृष्टि से और "पीछी" चक्षु से देख कर मारने का प्रत्याख्यान है। इसलिये वह जीव दृष्टि में नहीं आते हैं। इससे व्रत नहीं भंग होता।

प्रश्नोत्तर ७१

प्रश्नः—पहिले प्रहर में साधु साध्वी जी महाराज आहार पानी लेते हैं। वह आहार पानी चौथे प्रहर में उपयोग में लेवे तो दोष लगे कि नहीं ?

उत्तरः—कालाति क्रांत दोष लगे (शाख:–श्री "भगवती जी" सूत्र के श० ७ उ० १ में)

प्रश्नोत्तर ७२

प्रश्नः—जाति आशिविष किसको कहना तथा कर्म आशिविप किसको कहना ?

उत्तरः—श्री "भगवती जी" सूत्र के श० ८ उ० २ में कहा है कि-विच्छु आदि को "जाति आशिविष" कहना। तपस्या के योग आदि से लब्धि उत्पन्न हुई हो। उसको "कर्म आशिविष" कहना।

अत्रशंका–जब कोई कहे कि मनः पर्यवादिक भी लब्धि है तो उसको "आशिविष" कैसे कहना ?

तत्रोत्तर–यहां मनः पर्यवादिक लब्धि न समझें। परन्तु जो लब्धि से मनुष्य आदि की घात करे। उसको "कर्म आशिविष" समझना। पुलाक लब्धिवत् समझें।

प्रश्नोत्तर ७३

प्रश्नः—कई एक ऐसा कहते हैं कि-श्री "भगवती जी" सूत्र के श० ८ उ० ५ में श्रावक जी को १५ कर्मादान का प्रत्याख्यान करना कहा है। ऐसा है तो भी श्री "उपाशकदशांग जी" सूत्र में "आनंद जी श्रावक" जी ने ५०० हल का आगार रक्खा तथा सकडाल पुत्र ने ५०० नाई (कुम्हार) का आगार रक्खा उसका कैसे ?

उत्तरः—जिस श्रावक जी के सब १५ कर्मादान के भीतर का कोई व्यापार नहीं करे। ऊपर लिखे श्रावकों के

घर "हल" "नाई" का व्यापार था। इसलिये उसकी मर्यादा बांध के उपरांत सर्वथा कर्मादान का प्रत्याख्यान किया है। परन्तु श्री "उपाशक दशांग जी" सूत्र में ५०० हल नहीं। परन्तु ५०० हल की भूमि है। ऐसे ही ५०० नाई नहीं। परन्तु ५०० दुकाने हैं। उसको श्री "पन्नवणाजी" सूत्र में तथा श्री "अनुयोगद्वार" सूत्र में आर्य व्यापार कहा है। उसमें कोई वाधक नहीं।

प्रश्नोतर ७४

प्रश्न—श्री "पन्नवणा जी" सूत्र में तथा श्री "भगवती जी" सूत्र के श० ८ उ० ६ में कहा है कि-उदारिक शरीर आश्री पांच क्रिया लगें और वैक्रेय शरीर आश्री चार क्रिया लगें तो सूक्ष्म जीव को उदारिक शरीर है। वह मारा मरते नहीं तो उन जीवों की पांच क्रिया कैसे लगें?

उत्तरः—सूक्ष्म जीव की पांच क्रिया अव्रत आश्री लगें। वह राग द्वेष के प्रमाण रूप नियम से पांच क्रिया लगें। पीछे तत्वार्थ केवली गम्य।

प्रश्न—बाईस परिषह किस २ कर्म के उदय से है ?

उत्तरः—बाईस परिषह चार कर्म के उदय से है। वह इस प्रकार है (१) ज्ञानावरणीय कर्म के उदय (२) वेदनीय कर्म के उदय (३) मोहनीय कर्म के उदय (४) अंतराय कर्म के उदय। इसमें एक २ कर्म के उदय कौनसे २ परिषह है।

तत्रोत्तर-ज्ञानावर्णीय कर्म के उदय दो परिषह है। (१) मज्ञान का (२) अज्ञान का। वेदनीय कर्म के उदय ११ परिषह है। (१) क्षुधा. (२) तृषा. (३) शीत. (४) उष्ण. (५) दंश मंश (६) चलने का (७) (७) शय्या का (८) वध का. (९) तृण स्पर्श का. (१०) रोग (११) मेल का. मोहनीय कर्म के उदय ८ परिषह हैं। जिसमें दर्शन मोहनीय के उदय एक दर्शन को परिषह । चारित्र मोहनीय के उदय ७ परिषह। (१) अरति (२)

अचेल (३) स्त्री (४) बैठने का. (५) जाने का. (६) आक्रोश वचन (७) सत्कार सन्मान। यह सात परिषह मोहनीय कर्म के उदय, अंतराय कर्म के उदय एक अलाभ का यह सब मिल कर बाईस परिषह चार कर्म के उदय हैं (शाख:-श्री " भगवतीजी " सूत्र के श० उ० ८ में)

प्रश्नोत्तार ७६

प्रश्न:—श्री " भगवतीजी " सूत्र के श० ८ उ० १० में जघन्य, मध्यम तथा उत्कृष्टि ज्ञान, दर्शन और चारित्र की आराधना कही व कैसे समझनी ?

उत्तर:—ज्ञान की उत्कृष्टि आराधना वाले को दर्शन और चारित्र की मध्यम और उत्कृष्टि आराधना होती है. और उत्कृष्टि दर्शन आराधना वाले को ज्ञान और चारित्र को उत्कृष्टि तथा मध्यम आराधना होती है और चारित्र की उत्कृष्टि आराधनावाले को दर्शन की आराधना उत्कृष्टि नियम से हो और ज्ञान की आराधना तीनों लगे हैं।

अत्रशंका:—चारित्र तो उत्कृष्ट अभव्य पालते हैं तो उसको दर्शन कैसे नहीं होवे । कैसे कि:—केवल चारित्र ऐसा कहा है तो दर्शन ऊपर के न्याय से लगना चाहिये.

तत्रोत्तर:—यह बोल भवी आश्री का है । कारण कि—श्री "समवायांगजी" सूत्र के २६ में समवायांगजी में अभव्य मोहनीय कर्म की २६ प्रकृति होती है । मूल से दो प्रकृति की नास्ति है । वह सम्यक्त्व मोहनीय तथा मिश्र मोहनीय यह २ प्रकृति न हो । इस न्याय से अभवी को दर्शन न मिले ।

शंका:—उत्कृष्ट चारित्र तो श्री केवली महाराज को ही होवे तो उनको उत्कृष्ट चारित्र तथा ज्ञान कहना ।

उसका उत्तर:—यहां उत्कृष्ट चारित्र, ज्ञान, दर्शन का केवली लेंगे तो वह शतक के उसी उद्देशा में उत्कृष्ट आराधनावाला जघन्य उसी भव में मोक्ष जावें और उत्कृष्ट तीन भव में मोक्ष जावें । ऐसा कहा है तो यहां श्री केवली अपेक्षा से लेंगे तो तीसरा भव कैसा होवे ? इसलिये यहां तो उत्कृष्ट आराधना नीचे अनुसार समझनी ।

ज्ञान की उत्कृष्टि आराधना तो मति, श्रुत में उत्कृष्ट प्रयत्न करना और उत्कृष्ट दर्शन आराधना वह निशंकपणे दर्शन आराधना वह और उत्कृष्ट चारित्र वह निरतीचारपणे शुद्ध प्रवर्तना वह ऐसे ३ की उत्कृष्टि आराधना समझना। ऐसी ही जघन्य और मध्यम आराधना लेनी। पीछे तत्त्वार्थ केवली गम्य।

प्रश्नोत्तर ७७

प्रश्नः—ज्ञानावरणीय कर्म की पांच प्रकृति है तो वह पहिले और पीछे बंधती है कि—एक वक्त बंधती है? जो एक वक्त बंधती हो तो एक वक्त पांचो ही ज्ञान का आवरण खुल्ला होना चाहिये। ऐसी ही अलग बंधने का कारण चला नहीं समझा जाता है तो १—२ ज्ञान कैसे कर्म सरकने से खुल्ला होते हैं।

उत्तरः—ज्ञानावरणीय कर्म बंधने का ६ कारण कहा है। उससे ज्ञानावरणीय कर्म बंधता है। परंतु उसमें भिन्नता

ऐसा संबंध है कि—श्री " भगवतीजी सूत्र " के श० ८ उ० ३२ में कहा कि—मतिज्ञान का क्षयोपशम होवे तब मतिज्ञान प्रगट होता है।

ऐसा ही यावत् केवलज्ञानावर्णीय कर्म क्षय होवे तब केवलज्ञान प्रगट होता है। उसी तरह जो २ ज्ञान का आवरण क्षय हुआ सबके वह ज्ञान प्रगट होता है। परंतु एक वक्त सबै नहीं।

दृष्टांतः—मतिज्ञान का क्षयोपशम होने तो अवधि का आवरण हो। ऐसा ही यावत् केवल तक समझना। परंतु बांधने के कारण जो ६ कहे हुये हैं वह समझना। परंतु भिन्न २ भांगा समझना। एक २ बोल साथ में ६ भांगा से सर्व ज्ञान का आवरण हो और वह आवरण टलने से पहिले पीछे ज्ञान प्रगट हो।

प्रश्नोत्तर ७८

प्रश्नः—कई एक ऐसा कहते हैं कि—मनुष्य क्षयोपशम गया केवली होके आया। ऐसा कहते हैं वह कैसे?

उत्तरः—जमाली श्री भगवान महावीर स्वामी जी की पास आया ऐसा कहा हैं कि—मैं दूसरे शिष्य की तरह नहीं परंतु मैं तो केवली होके गया और केवली होके आया ऐसा पाठ कहा है। (शास्त्रः—श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० ९ उ० ३३)

प्रश्नोत्तर ७९

प्रश्नः—कई एक ऐसा कहते हैं कि:—छद्मस्थ अर्थात् ६ बोल हैं। क्रोधादिक चार तथा राग और द्वेष इससे छद्मस्थ?

अत्र शंका—जो ६ बोल हैं इससे छद्मस्थ तो ११ तथा १२ में गुणस्थान वालों को क्या कहना? कारण कि:—उन ६ में एक भी कारण नहीं। क्योंकि वहां मोहनीय कर्म का उदय नहीं है। उसका क्या अर्थ समझना?

उत्तरः—"छद" नाम हैं "अस्थ" नाम आच्छादन है जैसे बादलों के जोर से सूर्य आच्छादन रहते हैं। ऐसे ही छद्मस्थ के केवलज्ञानावरणीय कर्म, केवलदर्शनावरणीय कर्म का आच्छादन है। इस लिये छद्मस्थ कहना

प्रश्नोत्तर ८०

प्रश्नः—ईशान इंद्र के वरुण नामा महाराजा की अग्र महिषी कितनी ?

उत्तरः—नव अग्र महिषी (शास्त्र: स्थान ९ में) श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० १० उ० ५ में चार अग्र महिषी कही सो कैसे ?

तत्रोत्तरः—यह पाठ आचार्यों के मतांतर का फरक समझना। पीछे तत्त्वार्थ केवली गम्य।

प्रश्नोत्तर ८१

प्रश्नः—जो सर्व आत्म प्रदेश साग में ऊपरा ऊपरी थोक लगा है तो भीतर का कर्म प्रथम कैसे निकल सके।

कारण कि पहिला ऊपर के थोक का निकलना चाहिये तो प्रथम कर्म किस न्याय से निकले ?

उत्तरः—जैसे पानी मिश्रित दूधवत् अग्नि लगें तो जैसे नीचे का पानी जलता है। इस न्याय से प्रथम लगेला कर्म " चल नामे चलिए " के न्याय से प्रथम का कर्म जलते हैं। परंतु ऊपरा ऊपरी का थोक रूप समझें नहीं। कैसे कि–कर्म चोफरशी है (शास्त्रः–श्री " भगवती जी सूत्र " के श० १२ उ० ५) में कहा है कि–इससे स्थिति पाके निकलना बाधक नहीं।

प्रश्नोत्तर ८२

प्रश्नः—मिथ्यात्व और मिथ्यात्व दृष्टि में इन दोनों में क्या फरक है ?

उत्तरः—मिथ्यात्व और मिथ्यात्व दृष्टि इन दोनों में फरक है। जो मिथ्यात्व हो वह चोफरशी है (शास्त्रः–श्री " भगवतीजी " सूत्र के श० १२ उ० ५) और अठारहवां पाप हैं मिथ्यात्व मोहनीय कर्म के उदय भोक्ता है और

दृष्टि है वह जीव है। वह मिथ्यात्व मोहनीय के उदय रूप श्रद्धा रखे। वह क्षयोपशम भाव से (साक्षी—श्री "अनुयोगद्वार" सूत्र की)

दृष्टांतः—कुदेव को सेवे, पूजे यह मिथ्यात्व दृष्टि का उदय है और कुदेव को सेवना रुचि उपजे और उसको सच्चा श्रद्धे यह मिथ्यात्व दृष्टि क्षयोपशम भाव में है। ऐसे ही मोहनीय कर्म समझना।

प्रश्नोत्तर ८३

प्रश्नः—श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० १२ उ० ५ में पुद्गल को रूपी तथा अरूपी भी कहा है। परंतु पुद्गल रूपी है अरूपी नहीं तो अरूपी कहने का क्या कारण?

उत्तरः—यह बोल अधिक पद पूर्ण को संभव है। दूसरे मत में कहा है कि—सूक्ष्म पुद्गल देखने में नहीं आता इससे अरूपी कहा और देखने में आवे वह पुद्गल रूपी समझना।

प्रश्नोत्तर ८४

प्रश्नः—एक आकाश प्रदेश ऊपर अजीवका कितना बोल पावे ?

उत्तरः—जघन्य पद ४ पावें। (१) धर्मास्तिकाय का प्रदेश. (२) अधर्मास्तिकाय का प्रदेश. (३) आधा समयकाल. (४) परमाणु. यह चारों उत्कृष्ट पद ७ पावें। चारों ऊपर के और पुद्गल का स्कंध, देश, प्रदेश यह तीनों बढ़ाकर सब मिल कर ७ पावें, (शास्त्रः—श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० १२ उ० ६)

प्रश्नोतर ८५

प्रश्नः—राहु तथा चंद्रमा की ऋद्धि (संपदा) समान है याकि नहीं ? राहु का विमान कैसे रंग का है और कितना छोटा है ?

उत्तरः— चंद्रसे राहुकी वृद्धि कहती है। कारण कि—चंद्र का विमान को सोलह हजार देवता उठाते हैं और राहुका विमान को चार हजार देवता उठाते हैं। इससे राहु का विमान छोटा है और चंद्र का विमान बड़ा है। (शास्त्रः—श्री "जीवाभिगमजी" सूत्र की तथा श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० १२ उ० ६ में) राहु का विमान चंद्र से चार अंगुल नीचा है और राहु का विमान पांच वर्णका है।

प्रश्नोत्तर ८६

प्रश्नः—सूर्य के विमान को कौन से ग्रह सन्मुख आते हैं जिससे सूर्य का ग्रहण हो ?

उत्तरः—केतु नाम का ग्रह सन्मुख आता है। उस कारण से ग्रहण होता है।

प्रश्नोत्तर. ८७

प्रश्नः—चक्रवर्ती की आगति ८१ बोल की कही उसमें १५ परमाधामि और ३ किलविषी वर्जना उसका क्या कारण ?

उत्तरः—श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० १२ उ० ९ में कहा है कि—चक्रवर्ती सर्व देव का निकला कितनेक चक्रवर्ती हों कितनेक न हों ऐसा कहा है तो इस अपेक्षा से १५ परमाधामि तथा किलविषी महामिथ्यात्वी जान के वरजा संभव हैं कारण कि—ऐसे उत्तम पुरुष यहां का निकला न होना चाहिये। इस हेतु से वर्जना संभव हैं। पीछे तत्त्वार्थ केवली गम्य।

प्रश्नोत्तर. ८८

प्रश्नः—वासुदेव की आगति ३२ बोल की कही तो वासुदेव पांच अनुत्तर विमान वर्जना। सर्व वैमानिक का निकला होता हैं। दूसरे देवों का निकला न हो उसका क्या कारण ?

उत्तर:—सर्व वासुदेव पूर्व चारित्र पाल के नियाणा करके देवलोक में जाते हैं। वह आवी देवलोक का निकला वासुदेव होता है कारण कि—वासुदेव महाराज की गति जघन्य पहिला देवलोक की और उत्कृष्ट सर्वार्थसिद्ध की कही है। इस न्याय से वासुदेव वैमानिक का निकला हो सकता कहा कारण से नरक का आयु बंधा हुआ हो तो नरक में जाने के पीछे वासुदेव हो। नियाणा बंधा पीछे नरक का बंध समझना।

प्रश्नोत्तर ८८

प्रश्न:—श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० १२ उ० ६ में कहा है कि—नरदेव का जघन्य अन्तर एक सागर अधिक तो पहिली नारकी में जघन्य दश हजार वर्ष की स्थिति नरदेव उपज के वहां से निकलने पीछे चक्रवर्ती हो तो जघन्य अन्तर कैसे मिले ?

उत्तर:—नरदेव आदि ६३ शलाका का पुरुष है। वह आगामि गति के स्थान का संपूर्ण आयु भोग के ही हो

कारण कि—जघन्य, मध्यम आयु उत्तम पुरुष भोगवे नहीं और पहिली नारकी स्थिति एक सागर की है। वह एक सागर स्थिति पहिली नारकी भोगवे। पीछे चक्रवती हों। परंतु चक्र रत्न उत्पन्न होवे नहीं। वहां तक मंडलीक राजा कहलाते हैं। पीछे चक्र रत्न उत्पन्न हो जब चक्रवर्ती कहलाते हैं। वह आश्री एक सागर अधिक जघन्य अन्तर जाने।

प्रश्नोत्तर ८०

प्रश्नः—उरपर समूर्छिम की उत्कृष्टि अवगाहना प्रत्येक योजन की कही हैं तो आशालिया उरपर समूर्छिम १२ योजन की काया करतें हैं। ऐसा श्री " पन्नवणाजी " सूत्र के प्रथम पद में कहा है सो कैसे ?

उत्तरः—यह प्रत्येक अर्थात् २ से ९ तक नहीं समझना; कारण कि--श्री " भगवती जी" सूत्र के श० १२ उ० ९ में कहा है कि-टीका में २ से ९९ तक प्रत्येक कहा है। इससे यहां आशालिया १२ योजन की काया करते हैं वह विरुद्ध नहीं।

प्रश्नोत्तर ८१

प्रश्नः-श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० १२ उ० १० में कहा है कि-ज्ञान आत्मा में दर्शन की अपेक्षा कम हो तो समकित नहीं पड़ता है तो उसको ज्ञान होने से दर्शन होना चाहिये ?

उत्तरः—समकिती के व्यवहार ज्ञान है। परंतु निश्चय ज्ञान नहीं तो यह बोल भजी आश्री है। परंतु समकिती को नहीं लगता है।

प्रश्नोत्तर ८२

प्रश्न—सम्यक्त्व जीव मनुष्य बिना दूसरी गति में उपजे या नहीं ?

उत्तरः—सम्यक्त्व जीव दूसरी गति में उत्पन्न होवे. (शास्त्र: श्री "भगवती जी" मूल के श० १२ उ० ९ में) श्री

गौतम स्वामीजी ने पूछा कि-अहो महाराज ? रत्न प्रभा नरक के अंदर सम्यकत्व जीव उपजे या कि मिथ्यात्वी जीव उपजे, मिश्र दृष्टि जीव उपजे ऐसा पूछा तव श्री भगवान् महावीर स्वामीजी ने सम्यकत्व जीव तथा मिथ्यात्वी जीव की हां कही और मिश्र दृष्टि जीव की ना कही और निकलने आश्री ऐसा ही कहा और "अविराहिया" आश्री मिश्रदृष्टि जीव की कही तो इस आश्री वहां सम्यकत्व जीव उत्पन्न होता है। ऐसे ही छट्ठी नरक में एक मिथ्यात्वी जीव उपजे और मिथ्यात्वी जीव एक निकले परंतु "अविराहिया" आश्री सम्यकत्व जीव, मिथ्यात्वी जीव और मिश्र दृष्टि जीव यह तीनों बोल की हां कही और तीनों बोलोंवाला जीवों वहां है तो वह आश्री। नारकी, देवता में सम्यकत्व जीवों उत्पन्न होता है।

प्रश्नोत्तर ९३

प्रश्न:—नारकी, देवता में सम्यक्त्व जीव हो। वह मिथ्यात्वपणा पावे कि नहीं ? ऐसे ही मिथ्यात्वी जीव सम्यकत्व पावे कि नहीं ?

उत्तरः—नारकी, देवता में सम्यक्त्व जीव मिथ्यात्व पावे और मिथ्यात्वी जीव सम्यक्त्व पावे ।

अत्रशंका—जो कोई ऐसा कहै कि—श्री "पन्नावणी" सूत्र के पद ३३ में ऐसा कहा है कि—नारकी, देवता में अवधिज्ञान का अनुगामी आदि आठ बोल हैं। उस में "अनुगामी अपडवाई अवस्थित" यह तीनों बोलों की बात कही तो नारकी देवता को अवधिज्ञान अवस्थित कियो हायमान वर्धमान नहीं तथा पडवाई भी नहीं तो नरकादिक में सम्यक्त्व तथा मिथ्यात्व पावे तो अवधिज्ञान को विभंग हुआ तो प्रमाण की हानि होवे कि नहीं ? ऐसेही मिथ्यात्व वाले सम्यक्त्व पावे तो विभंग की अवधि हुआ कि नहीं ? यह देखने से सम्यक्त्व जीव सम्यक्त्वपणे ही रहना चाहिये और मिथ्यात्वी मिथ्यात्वपणे रहना चाहिए। ऐसा मालूम होता है।

तत्रोत्तरः—यह बात सत्य है। परंतु पद ३३ में कहा वह क्षेत्र आश्री। इसको हानि वृद्धि होनेकी नहीं। ऐसे ही विभंग की अवधि और अवधि को विभंग हो। वह दोनों ही द्रव्यांग एकही हैं अर्थात् अवस्थित और अपडिवाई यह आश्री कहा है। परंतु सम्यक्त्व मिथ्यात्व नहीं पावनेरूप देवता नारकी में नहीं। वह बोल आश्री है और श्री "पन्नवणाजी"

सूत्र के पद ३४ का न्याय देखने से नीचे अनुसार संभव है। नारकी देवता का परिणाम नरक क्षेत्र में रहा हुआ प्रशस्थ तथा अप्रशस्थ कहा है। फिर श्री गौतम स्वामीजी ने पूछा कि-नरक क्षेत्र में रहा हुआ जीव सम्यक्त्व सन्मुख हो तथा मिथ्यात्व सन्मुख मिश्रदृष्टि सन्मुख हो। तिहां श्री भगवान् ने तीन दृष्टि की हां कही है अर्थात् सम्यक्त्व में से मिथ्यात्व हो और मिथ्यात्व में से सम्यक्त्व होता है। वह आश्री नारकी देवता में समझना।

प्रश्नोत्तर ८४

प्रश्नः--श्री "भगवती जी" सूत्र के श० १३ उ० १ में ऐसा कहा है कि-पुरुष मर के नरक में उपजे तथा स्त्री मर के नरक में न उपजे। एक नपुंसक मर के नरक में उपजे तो पुरुष स्त्री की गति नरक की कही है तो न कहनेका क्या कारण ?

उत्तरः—आयु बांधने आश्री, कारण कि-नरक का आयु बांधे जब नरक का जीव गिनते हैं। वह आश्री जाने।

[illegible] है । परन्तु उनमें से जाता नहीं समझना । कारण कि—पार्श्व में नाना एक ही शक्ति नहीं है ।

प्रश्नोत्तर ८५

प्रश्नः—देवलोक में देवता को उत्पन्न होने की शय्या है सो सर्व देवता की शय्या एक ही है कि—प्रत्येक २ देवता के लिये शय्या अलग २ है ?

उत्तरः—देवलोक में देवता को उत्पन्न होने की शय्या अलग २ है । परंतु एक नहीं जैसे सूर्य के विमान में देवता संख्याता है तो शय्या भी संख्याती है और असंख्याता योजन के विस्तार वाले विमान में असंख्याती शय्याएँ हैं ।

नवग्रैवेयेक और पांच अनुत्तरवासी देवता असंख्याता हैं तो अपनी २ शय्या में से उठते नहीं और अपनी २ शय्या में ही रहते हैं तो एक शय्या में असंख्या वा देवता कैसे रह सके ? इस हिसाब से सर्व देव की शय्या अलग २ माननी. श्री " भगवतीजी " सूत्र के श० १३ उ० २ में कहा है कि—एक विमान में एक समय जघन्य १–२–३ उत्कृष्टि असंख्याता देवता उपजते हैं तो असंख्याता देवता एक समय एक शय्या में कैसे समाय और कैसे उपज सकें ? इस न्याय से तो प्रत्येक २ देवता की शय्या अलग २ माननी। संख्याता योजन के विमान में संख्याती शय्या, असंख्याता योजन के विमान में असंख्याती शय्या जाननी चाहिये।

प्रश्नोत्तर, ९६

प्रश्नः—धर्मास्ति काय, अधर्मास्ति काय, आकाशास्ति काय। यह तीनों द्रव्यों मांहो मांहे भेदाते या कि नहीं ?

उत्तरः—श्री " भगवतीजी " सूत्र के श० १३ उ० ६ में कहा है कि—धर्मास्ति काय, अधर्मास्ति काय, आका-

साबित हुआ। यह तीनों द्रव्यें लोक में दूध पानी की तरह शामिल रहते हैं। परंतु हर एक का स्वभाव अलग २ हैं। परंतु भेलाते नहीं। इसलिये एक आकाश प्रदेश ऊपर धर्मास्ति काय का एक प्रदेश, अधर्मास्ति काय का एक प्रदेश रहा है। वैसा अन्यो अन्य तीनों द्रव्यों में रहा है. (आगमः—श्री " भगवतीजी " सूत्र के श० २५ उ० २ में वर्ती का दृष्टांत दिया है। जैसे एक वर्ती एक मकान में ऐसे ही २–३–४ वर्तीयें रक्खें। इन सब वर्तीयों का प्रकाश रक्खें। दूध पानी के समान मिला हुआ है। परंतु अपने २ का स्वभाव से प्रकाश अलग है (२) दृष्टांतः—दूध में खांड, रंग, चिकनापणा, इत्यादि सब मिला हुआ है। परंतु सब का गुण अलग २ हैं। इस न्याय से तीनों द्रव्यों सत्ता रूप से न्यारा २ समझना। ऐसे ही एक प्रदेश में पुद्गल गुणों के समाय कैसे कि–एक परमाणु यावत् सूक्ष्म अनंत प्रदेशी स्कंध एक आकाश प्रदेश गुणों से समाता है कारण कि–आकाश का विकाश गुण है श्री " नंदीजी " सूत्र में कहा है कि–सब से सूक्ष्म काल, इससे छोटा क्षेत्र, उससे छोटा द्रव्य और इनसे छोटा भाव। यह अपेक्षा से समझना।

प्रश्नोत्तर, ८७

प्रश्न—श्री " [illegible] " सूत्र के [illegible] १४ [illegible] में कहा है कि–एक [illegible] में [illegible] महाराज

वाणव्यंतर स्थान की "तेजु लेश्या" को अतिक्रमे। ऐसे ही बारह मास की पर्यायवाला सर्वार्थसिद्ध विमान के देवता की "तेजु लेश्या" को अतिक्रमे तो तीसरा देवलोक में "तेजु लेश्या" नहीं तो किस रीति से अतिक्रमे ?

उत्तर:—तेयं लेश्या अर्थात तेजु लेश्या समझने की नहीं है।-परंतु उसका सुख वैभव समझना अर्थात एक मास की पर्यायवाला साधुजी महाराज वाणव्यंतर का देव जितना-सुख अनुभवे। इससे विशेष सुख अनुभवे। ऐसे ही यावत् पांच अनुत्तर विमान तक समझें।

अत्रशंका:—एक मास की पर्यायवाला वाणव्यंतर के स्थान को व्यतिक्रमे तो पुंडरीक अणगार गजसुकुमालजी और धन्नाजी अणगार वगैरह मोक्ष तथा अनुत्तर विमान में अल्प चारित्र होने से कैसे गये ?

तत्रोत्तर:—पूर्वोक्त बोल केवल चारित्र आश्री है। तप आश्री नहीं है। पुंडरीक वगैरह उत्कृष्ट तप किया इससे भी अनुत्तर विमान में तथा भी मोक्ष में गये। और केवल चारित्र पाले और तप न करें तो पूर्वोक्त अनुसार सुख को अनुभव करें।

प्रश्नोत्तर ९८

प्रश्नः—अवधिज्ञान वाला अगले पिछले कितने काल की बात करे ?

उत्तरः—असंख्याता काल की बात करे। शास्त्रः—श्री "नंदीजी" सूत्र की तथा श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० १८ में श्री सुदंसन मुनिराज)

प्रश्नोत्तर ९९

प्रश्नः—श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० १६ उ० ६ में श्री जिनराज देव ने पांच प्रकार के स्वप्न दर्शन प्ररूपणा किया है सो वह स्वप्न में जो २ पुद्गल देखने में आते है। वह तीनों प्रकार के पुद्गलों पांहिला कौनसी जाति का पुद्गल समझना ?

उत्तरः—मनः पर्याय से उदारिक पुद्गल का प्रेरकपणा से स्वप्न में (विश्रसा) पुद्गल का भास होता है कैसे कि—वह पुद्गल का भास जलदी पिछा विखर जाता है। इससे विश्रसा पुद्गल का ऐसा ही स्वभाव है। इस कारण स्वप्न में पुद्गल ही देखने में आता है।

प्रश्नोत्तर १००

प्रश्नः—श्री " भगवतीजी " सूत्र के श० १७ उ० ६ में कहा है कि—यहां से एकेन्द्रिय जीव मर के देवलोक में पहिले उत्पन्न होवे और पिछे आहार करें तथा पहिले आहार करें और पिछे उत्पन्न होवे। ऐसा कहा वह कैसे ?

उत्तरः—एकेन्द्रिय जीव मरणांतिक समुद्घात देश से करें तो वह जीव पहिले पुद्गल ग्रहण कर के पिछे उपजे और सर्वथा समुद्घात करें तो पहिले उपजे और पिछे पुद्गल ग्रहण करें।

अथशंका:—श्री " भगवतीजी " सूत्र के श० १ उ० ७ में कहा है कि—" सव्वेणं सव्वं आहारेइ " इति भगवान तो कैसे सब प्रदेश आहार करें ?

तत्रोत्तरः—यह प्रदेश सभी आहार करते हैं। जैसे बिजली की बत्ती बहुत दूर से भाफ खींच लेती है इस न्याय से सभी प्रदेश से आहार करें। पिंड उपजते हैं।

प्रश्नोत्तर १०१

प्रश्नः—विभंगज्ञान और अवधिज्ञान में क्या फरक समझना ? विभंगज्ञान वाला मनुष्य विपरीत देखते हैं (श्री "भगवतीजी" सूत्र की शाख से) तो देवलोक में विपरीत कौनसे न्याय से देखें ?

उत्तरः—जैसे मनुष्य विपरीत भद्रे है। ऐसे ही श्री ' भगवतीजी" सूत्र के श० १८ उ० ५ में कहा है कि—"माइ

मिथ्या दृष्टि" देवता विभंगज्ञान वाले देवता देवीयों का रूप बनाते हैं। परन्तु श्रद्धने में फरक समझने कि है। जैसे गह रूप बहुत देवता का हुआ। परंतु स्त्री सहित है। ऐसा यथातथ्य नहीं श्रद्धे कारण कि-पर्याय में हीनता है। इससे कर्ता आप है और क्षय में पर्याय की हानि के लिये विभ्रम मानते हैं।

प्रश्नोत्तर १०२

प्रश्नः—बारह देवलोक आदि देवता मन मान्या वैक्रेय रूप मनोवाञ्छित कर सके या कि नहीं?

उत्तरः—सम्यकत्व जीव मनोवाञ्छित रूप कर सकें। परंतु मिथ्या दृष्टि मन मान्या रूप करने की समर्थ नहीं है. (शास्त्रः-श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० १८ उ० ५ में कहा है)

प्रश्नोत्तर १०३

प्रश्न - नारकी की कुंभी में एक जीव आकर उत्पन्न हुआ है और वह जीव निकल गये पिछे जबतक जीता रहता दूसरा जीव उस कुंभी में आवे कि नहीं ?

उत्तर :— नारकी की कुंभी में उत्पन्न हुआ जीव बाहिर निकला और जबतक जीता है। परंतु उसी कुंभी में दूसरा नारकी आवे कारण कि नारकी में कुंभी का मालिक पना नहीं है (शास्त्र-श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० १८ उ० ६) नारकी को २ उपाधि कही तथा २ परिग्रह कहा है. (१) शरीर. (२) कर्म. यह दो कहा है। परंतु बाह्य उपकरण उपका नहीं और भुवनादिक के ३ उपधि तथा ३ परिग्रह कहा है: (१) शरीर. (२) कर्म. (३) बाहिर उपकरण इनमें देवता को भवन का मालिकपना है। परंतु नारकी के कुंभी का मालिकपना नहीं। इसलिये नारकी जीता हो तोभी उस कुंभी में दूसरा नारकी उत्पन्न हो सकता है।

प्रश्नोत्तर १०४

प्रश्न:—अठारह पाप का वेरमणं तथा पांच समिति, तीन गुप्ति वगैरह धर्म कर्तव्य श्री भगवान् ने श्री "भगवती" जी सूत्र के श० २० उ० २ में धर्मास्ति काय कहके बुलाया वह कैसे ?

उत्तर:—यह बोल धर्म के सहचारी शब्द रूप से हैं। इसलिये धर्मास्ति काय कहा है। ऐसे ही अधर्मास्ति काय उनका प्रतिपक्षी समझना। अधर्मास्ति काय अधर्म सहचारी शब्द रूप से समझना।

प्रश्नोत्तर १०५

प्रश्न:—प्रत्येक मास अर्थात् एक वर्ष और ग्यारह महिने तक का मनुष्य गर्भज मरके कौनसे देवलोक में जावें ?

उत्तरः—पांचवें देवलोक तक जावें (गाम्वः-गमा की है)

प्रश्नोत्तर १०६

प्रश्नः—पृथक् वर्ष अर्थात् दो वर्ष से लेकर आठ वर्ष तक का मनुष्य गर्भज मरके कौनसे देवलोक तक जावें ?

उत्तरः—आठवें देवलोक तक जावें (गाम्वः-गमा की है)

प्रश्नोत्तर १०७

प्रश्नः—नव वर्ष उपरांत के मनुष्य गर्भज मरके कौनसे देवलोक तक जावें ?

उत्तर:—श्री अनुत्तर विमान तक तथा मोक्ष में भी जावें (शाख:-गमा की है)

प्रश्नोत्तर १०८

प्रश्न:—प्रत्येक मास का मनुष्य गर्भज मरके कौनसी नरक में जावे ?

उत्तर:—पहिली नरक में जावे [शाख: गमाकी है]

प्रश्नोत्तर १०९

प्रश्न —प्रत्येक वर्ष का मनुष्य गर्भज मरके कौनसी नरक में जावें ?

उत्तर:—कम स्थिति वाला असंख्याता पृथ्वी काइया उपजे और वाईस हजार वर्षकी स्थितिवाला संख्याता उपजे। इस अपेक्षा से कहा है (शाख:-श्री "पन्नवणाजी" सूत तथा श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० २४ उ० १२)

प्रश्नोत्तर, ११२

प्रश्न:—पांच लेश्या केवल कौनसी जगह में पाइये ?

उत्तर:—संज्ञी तिर्यंच का पर्याप्ता जघन्य अंतर मुहूर्त की स्थिति वाला मरके तीसरे, चौथे तथा पांचवें देवलोक में उपजे। वह जीवको पांच लेश्या पावे. (शाख:-श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० २४ तथा गमा की)

उत्तरः—उत्कृष्ट तीन भव करें। पीछे तीसरे भव में जरूर मोक्ष में जावे. (शास्त्रः—श्री "भगवतीजी" जी सूत्र के श० २५ उ० ६) इसी तरह सर्व संसार में आकरखा उत्कृष्टि पांच वार करके मोक्ष में जावे ऐसा कहा है।

प्रश्नोत्तर ११५

प्रश्नः—एक भव में ग्यारहवें गुणस्थान से एक जीव पड़ कर पीछे ग्यारहवें गुण स्थान में जाकर पीछे फिर पड़े कि नहीं?

उत्तरः—पडे। परन्तु वहुत भव करने वाला पडे। परन्तु उसी भव में मोक्ष जाने वाला एक वार पड के दूसरी वार दशवां गुणस्थान से सीधा बारहवां गुणस्थान में जाकर तेरहवां गुणस्थाने केवल पावे। परन्तु पांच आकरखा वाला जीव एक भव में दो वार उपशम श्रेणी करें (शास्त्रः— श्री " भगवती जी " सूत्र के श० २५ उ० ६)

अर्थः- " संज्या " नाम साधुजी महाराज और " नियंठा " नाम निर्ग्रंथ। परन्तु दोनों का भावार्थ एक ही है तो अलग अलग मरूप ने का क्या कारण समझना ?

उत्तरः---दोनों का गुण अलग २ है। " संज्या " का गुण चारित्र की क्रिया कर्ता रूप है और " नियंठा " का गुण जिम जिम क्षयोपशम होता जावे तिम तिम "नियंठा" का गुण चढ़ता जावे तो "नियंठा" का घर का है। जैसे कि- सामायिक चारित्र तो एक ही है। परन्तु उस चारित्रवाले जीव के "नियंठा" का क्षयोपशम हुआ। इस अपेक्षा से दोनों का गुण अलग २ समझना।

प्रश्नोत्तर ११८

प्रश्नः—अभी वर्तमान काल में साधुजी महाराज के कितना नियंठा पावे ?

उत्तर:— ३ नियंठा पावे (१) बकुश (२) पड़ी सेवणा (३) कषाय कुशील। यह तीनों नियंठा पावे।

अत्रशंका—कषाय कुशील नियंठा वाला जीव मूल उत्तर गुण मपदी सेवी कहा है और बकुश, पडी सेवणा तीनों लेश्या विरुद्ध कही है यह कैसे ?

तत्रोत्तर:—कषाय कुशील नियंठा वाला जीव साधुजी महाराज के सर्व गुण से वर्तता हुआ पूर्व मोहनीय कर्म के उदय कषाय करे। इस से उस समय अशुद्ध अयम की तीनों लेश्या में वर्ते। परन्तु यह नियंठा वाला उत्तर गुण में दोष लगावे नहीं और बकुश, पडी सेवणा नियंठा वाला जीव मूल उत्तर गुण के दोष को सेवे। यह चारित्र मोहनीय कर्म के उदय असमर्थपणे उदासी भावे पश्चात्ताप करता हुआ। इस कारण उस नियंठा में ऊपर की तीनों शुभ लेश्या होती है। इस लिये इस न्याय से ऊपर के प्रमाण-अनुसार नियंठा तीनों वर्तमान काल में पावे (शास्त्रः श्री "भगवती" जी सूत्र के श० २५ उ० ६)

प्रश्न.-श्री " भगवती " जी सूत्र के श० २५ उ० ७ में सूक्ष्म संपराय चारित्र की प्राप्ति करे। वह जीव जघन्य एक भव करें और उत्कृष्ट तीन भव करें और उसका अंतर अर्द्ध पुद्गल का कहा यह कैसे ?

उत्तर-अंतरा पडवाई आश्री है।

अत्रशंका तिवारे-पडवाई जीव पड कर पीछे अवश्य तीसरे भव में मोक्ष में जाना चाहिये तो अंतरा कैसे मिले ?

तत्रोत्तर-तीन भव कहा वह तो सर्व संसार आश्री जानना। सर्व संसार में एक जीव सूक्ष्म संपराय चारित्रपणे भव करें तो उत्कृष्ट तीन भव करें और तीसरे भव में अवश्य मोक्ष में जावे। पीछे पडे नहीं। ऐसे ही आकर्षा भी सर्व

प्रश्नोत्तर १२१

प्रश्न-—श्री सामायिक चारित्र की स्थिति तथा गति कितनी ?

उत्तर——श्री "भगवती"जी सूत्र के श० २५ उ० ७ में जघन्य स्थिति एक समय और उत्कृष्ट क्रोड पूर्व देशे उणी कही है और गति जघन्य पहिले देवलोक और उत्कृष्ट बारहवें देवलोक तक जावे ऐसा कहा है।

प्रश्नोत्तर १२२

प्रश्न—चौदह पूर्व संपूर्ण पढ़ने वाला मर के कहां जावे ?

उत्तर:—जघन्य छठे देवलोक उत्कृष्ट सर्वार्थसिद्ध विमान तक और मोक्ष में भी जावे।

नीय बांधे, दूसरे समय वेदे और तीसरे समय निर्जरा करें तो जिस समय वेदे तिस समय बांधे अथवा निर्जरा करें अथवा बांधे उस समय वेदे, अथवा निर्जरा करें, और जिस समय निर्जरा करें उस समय बांधे अथवा वेदे उसका क्या विवरण है।

उत्तर—शातावेदनीय का बंध पहिले समय में बांधे, उस समय में वेदे नहीं और निर्जरा करें भी नहीं। परन्तु दूसरे समय में बांधे उस के संयुक्त पहिले समय की शातावेदनीय बंधी हुई वेदे। तैसे ही तीसरे समय निर्जरा करें और दूसरे की वेदे। इसी अनुक्रम से होते हुए ३ बोलों संयुक्त बांधे, वेदे तथा निर्जरा करें। एक समय में समझना, परंतु पहिले समय में बांधने का समझना और चर्म समय निर्जरा का समझना।

अत्रशंका—कोई कहै कि "श्रीभगवतीजी" सूत्र में कहा कि- एक समय में दो क्रिया न होवे और करें तो निन्ह कहावे वह कैसे ?

तत्रोत्तर—श्री "भगवतीजी" सूत्र में कहा है उसका कारण यह है कि—पहिले समय २ कृतिप आश्री जीव एक समय में जावे नहीं। इसलिये २ की ना कही है। परन्तु कर्म के बंध आश्री नहीं है। श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० २६ उ० १ में कहा है कि—केवलज्ञान में वेदनीय कर्म का बंध आश्री तीसरे भांगे की ना कही है उस कारण से विशेष पूर्व का बंधा आयु भोक्ता हुआ नया ७—८ कर्म बांधता है। इस न्याय से देखते हुए एक समय २ में कर्म क्रिया कृतिप संभव है।

प्रश्नोत्तर १२४

प्रश्न—माता पिता की आज्ञा में वर्ते तथा दूसरा विनय आदि का काम करें तो मर के कहां उत्पन्न होवे ?

उत्तर—देवताओं में जावे। परंतु वाणव्यंतर देवता में बारह हजार वर्ष की स्थिति में उपजे (शास्त्र: श्री "उवाईजी" सूत्र तथा श्री "भगवती" जी सूत्र के श० ४१ उ० १ में कहा है)

प्रश्नोतर १२५

प्रश्न—देवता के चलने की गति कितना प्रकार की है ?

उत्तर:—पांच प्रकार की है। [१] सर्पाया [२] चंडा [३] जाया [४] वेगा [५] शीघ्र यह पांच प्रकार की चलने की गति समझना।

प्रश्नोत्तर १२६

प्रश्न:—असंख्याता योजन के विमान में देवता छः महीने तक चले। परन्तु पार नहीं पावे वह गति किस प्रकार की समझना ?

उत्तर—उपमा प्रमाण से चार प्रकार की गति से मान दिया है। समीया की गति हमेशा उग्र नग्र एक रोज में सूर्य जितने योजन चले उसका तीन गुणा करें, जितने योजन हो उतने योजन का एक पगुला कर के चले उसको "सर्माया गति" कहते हैं। और पांच गुणा करें उसको "चंडा गति" कहते हैं और सात गुणा करें उसको "जाया गति" कहते हैं और नव गुणा करें उसको "वेगा गति" कहते हैं। इस उपमा प्रमाण से गति कही है।

अत्रशंका:—श्री तीर्थंकर के जन्मादि समय बारहवां देवलोक का देवता थोडा काल में असंख्याती योजन पर होते हुये भी आये सो कैसे ?

तत्रोत्तर:—यहां शक्रेन्द्र, चमरेन्द्र वज्रवत् समझना। परंतु यहां चार गति कही वह तो एक देवलोक का विमान कितना बडा है तथा तीन लोक मापने के लिये उस न्याय देखाने के लिये ऊपर की चार गति उपमा प्रमाण से श्री जिनराज देव ने बताई है। परंतु शीघ्र गति की चाल तो मन इच्छित प्रमाण से है। इसलिये बारहवां देवलोक का देवता तिर्छा लोक में आना बाधक नहीं है. (शास्त्र:-श्री "भगवतीजी" सूत्र की)

प्रश्नोत्तर १२७

प्रश्नः——नो श्वासोश्वास सिद्ध विना किसको होवे ?

उत्तरः——एकेन्द्रिय अपर्याप्त को होवे (शास्त्रः-श्री " भगवतीजी " सूत्र की)

प्रश्नोत्तर १२८

प्रश्नः——श्री " भगवतीजी " सूत्र में ऐसा कहा है कि-रत्न प्रभा पृथ्वी विषय पृथ्वी का जीव मर के पहिले देव-लोक में पृथ्वीपणे उपजे? इस रीति से श्री "गौतम स्वामीजी" ने पूछा तिवारे श्री "भगवान् महावीर स्वामीजी" ने कहा कि-उपजे; यावत् ईषत प्रभा पृथ्वी तक पृथ्वीपणे उपजे, तैसे ही अपना जीव उपजे तब नव ग्रैवेयेक में तथा श्री अनुत्तर विमान में पानी नहीं हैं तो वहां अपना जीव के उपजने की हां क्यों की हैं ?

उत्तर:—सूक्ष्म जीव उपजने आश्री हां क्यों की है ?

प्रश्नोत्तर १२

प्रश्न:—ज्ञानावरणीय कर्म तथा दर्शनावरणीय कर्म बांधने का ६ कारण कहे है। उसमें कितना दंडक जीव बांधते होंगे ?

उत्तर:—१२ दंडक देवता का, मनुष्य तथा तिर्यंच यह १५ दंडक जीव बांधते है।

अत्रशंका:—नारकी, पांच स्थावर तथा विकलेन्द्रिय न बांधे उसका क्या कारण है।

तत्रोत्तर:—उसके ६ कारण का अभाव है। इसलिये न बांधे।

शंका:---यदि कोई कहै कि--वह जीव ६ कर्म ही बांधे ?

उसका उत्तर:----वह जीव समय २ सात आठ कर्म बांधते है। परंतु श्री " ठाणांगजी " सूत्र में कर्म बांधने के ६ कारण कहे है। उन चारों (एक कर्म का कारण) जीवों में मुख्यतापणा है उसीसे सात आठ कर्म बांधते है। परंतु " नाण पडणीयादिक " ६ कारणों का उन जीवों में अभाव है. (शास्त्र:--श्री " भगवतीजी " सूत्र की)

प्रश्नोत्तर १३०

प्रश्न:--श्री " ज्ञाताजी " सूत्र का अध्ययन पहिला मे श्री मेघकुमार का जीव हाथी के भव में शशक बचा के काल कर के " **धारणी रानी** " के कुंख में ज्येष्ठ मास में आ के उत्पन्न हुआ और उसके बाद तीसरे महीने अकाल मेघ का दोहिला उत्पन्न हुआ है। परंतु ज्येष्ठ महीने से गिनते हुये तीसरा मास भाद्रवा आवे तो उस समय वर्षाऋतु होनी चाहिये ऐसा होते अकाल कैसे कहा ?

उत्तर:—श्री मेघकुमार का जीव "धारणी रानी" की कुंखमें ज्येष्ठ वदीमें आकर उत्पन्न हुआ है और वहां से तीन महीने गिनते भाद्रवा वदीमें (आसोज वदीमें पुनर्मांगा महीनेके हिसाब से) दोहिला उत्पन्न हुआ है उस समय सूर्य की गति अनुसार श्रावण शुदी १५ और भाद्रवा शुदी १५ यह दो महिने वर्षाऋतु का आता है और आसोज शुदी १५ और कार्तिक शुदी १५ शुदी १५ यह दो मास शरद ऋतु का है इसी तरह सक्रांति प्रमाण से देखते ऊपर कहे अनुसार मास में ऋतु बैठती है और दोहिला भी शरद ऋतु में प्रगट हुआ है। इसलिये उस समय वर्षा कम होती है और ममोला और हंस का जोडा तथा वारीक अंकुर जीवों वगैरह होवे नहीं। इसलिये श्री अभयकुमार ने देव आराधी अकाल दोहिला संपूर्ण किया है। इस हेतु से अकाल में दोहिला " पाउ भूया " ऐसा कहा है।

प्रश्नोतर १३१

प्रश्न:—श्री " ज्ञातार्जी " सूत्र के अध्ययन प्रथम में श्री मेघकुमार का जीव हाथी के भव में शशक की दया से सम्यकत्व रत्न की प्राप्ति कि हुई कहते है सो किस प्रकार से ?

उत्तरः—सम्यकत्वी मनुष्य और तिर्यंच देवगति में ही जाना चाहिये ऐसा श्री " भगवतीजी " सूत्र के श० ३० उ० १ में कहा है कि–ऐसा होते भी यहां मनुष्य भव में श्री मेघकुमारपणे उपजा, उसका कारण यह है कि–हाथी के भव में शशक बचाया। इसलिये सम्यकत्व आने का संपूर्ण कारण प्रगट हुआ है। परंतु सम्यकत्व प्राप्त हुआ नहीं उसका पाठ " अपडिलब्ध सम्म चरयण लभेणं " उसका अर्थः–सम्यकत्व रत्न का लाभ नहीं मिला। परंतु तुझने तिर्यंच भवमें समभावसे परिषह सहन किया है तो क्या कहना, यह मनुष्य भव आदि सर्व योग पा कर क्यों कायर होवे अर्थात् संयम के विषय कायरपणा न करना इत्यर्थ।

प्रश्नोत्तार १३२

प्रश्नः—श्री " ज्ञाताजी " सूत्र के अध्ययन पांचवें में कहा है कि–" शेलग राज ऋषीजी " ने "मज्ज" पानी लिया उसको कितनेक मदिरा [शराब] कहते हैं सो कैसे ?

उत्तरः—उसको मदिरा नहीं समझना। कारण कि–"निशीथ" आदि सूत्रों में मदिरा लेने की निषेध किया है तो उस वस्तु को वहोरा (लिया) ऐसा नहीं समझना। परंतु ऐसा कहा है कि- " मज्ज " मर्दन किया है। मक्खन आदि वलिष्ट वस्तु को और पानी भी वैसा वलिष्ट शरबत आदि वहोरा है लेकिन मदिरा नहीं समझना, कारण कि ज्वर आदि दुःख में जो मदिरा पीवे तो विशेष ज्वर आना संभव है। इसलिये मदिरा पीना नहीं।

प्रश्नोत्तर १३३

प्रश्नः—श्री अनुत्तरवासी देवता यहां स्त्रीपणे कैसे उपजते है ?

उत्तरः—श्री अनुत्तरवासी देवता सर्व सम्यगदृष्टि हैं और विपाक उदय में पुरुष वेद वेदता है। परंतु पूर्व किसीने मनुष्य भव में माया कपट कर स्त्री वेद उपार्जन किया है, उसको प्रदेश उदय में भोक्ते हैं। इसलिये देवता का आयु

संपूर्ण होने पर स्त्री वेद जो प्रदेश उदय में था वह विपाक उदय में आया। इसलिये वहां से मरके वहां मनुष्य भव में स्त्री पणे उपजे हैं। परंतु श्री अनुत्तरवासी देवता में स्त्री वेद वंधने का कारण जो माया कपट है सो वहां नहीं है और स्त्री वेद मिथ्यात्व भाव में बांधते हैं, वह भाव तिहां भी नहीं है। इसलिये यहां मनुष्य भव में वे स्त्री वेद बांधते हैं ऐसा समझना (शास्त्रः- श्री " ज्ञाताजी " सूत्र के अध्ययन ८ में) श्री मल्लिनाथ भगवान के अधिकार में, श्री महाबल मुनि ने माया का स्थानक सेवी स्त्री वेद बांधा, और वहां से मर के श्री अनुत्तरवासी देवता हुआ तो वहां पुरुष वेद का विपाक उदय था। परंतु स्त्री वेद का प्रदेश उदय था कारण कि-स्त्री वेद का आवाधा काल डेढ हजार वर्ष का है। पीछे अवश्य उदय आवे। इसलिये डेढ हजार वर्ष पीछे स्त्री वेद का उदय हुआ। परंतु वेद का विपाक उदय है। इसलिये स्त्री वेद प्रदेश उदय में सहन किया पीछे वहां से मर के श्री मल्लिकुंवरीपणे उपजा, वहां स्त्री वेद का जो प्रदेश उदय था वह विपाक उदय हुआ। परंतु श्री मल्लिनाथ भगवान् ने वहां श्री अनुत्तरवासी देव में स्त्री वेद बांधा नहीं है। श्री महाबल मुनि के भव में बांधा है। ऐसे ही श्री मल्लिकुँवरी के भव में उदय आया, इस कारण से श्री अनुत्तरवासी देवता यहां स्त्रीपणे उपजा है।

प्रश्नोत्तर १३४

प्रश्नः—श्री "ज्ञाताजी" सूत्र में श्री मल्लिनाथ भगवान के साथ ३०० पुरुष और ३०० स्त्रियां और ८ ज्ञात कुमार दीक्षा ली है ऐसा कहा है और श्री "ठाणांगजी" सूत्र में छठे स्थान में ६ मित्रों के साथ दीक्षा ली है यह कैसे ?

उत्तरः—श्री "ज्ञाताजी" सूत्र में ६०८ कहा है वह अलग है और ६ मित्रों तो श्री केवली हुआ पीछे ली है, तो ८ और ६ दोनों ही अलग २ जानना। परंतु केवलज्ञान उत्पन्न हुआ और ६ जनों आया है तो वह भी साथ ही कहा जावे कारण कि- यह काल अपेक्षा वाची है।

प्रश्नोत्तर १३५

प्रश्नः—सम्यक्त्व का नाश देव, गुरु, धर्म की श्रद्धा जाने से होवे कि—कोई दूसरा कारण है ?

उत्तर:-देव, गुरु, धर्म की श्रद्धा जाने से भी नाश होवे तथा उत्कृष्टि मोहनीय कर्म के उदय भी सम्यकत्व का नाश हो तथा तीव्र कषाय के उदय से नाश हो।

अत्र शंका—श्री "ज्ञाताजी" सूत्र के अध्ययन ८ में श्री महाबल मुनि को क्या देव गुरु की श्रद्धा गई ?

तत्रोत्तर:—माया सेवने से मिथ्यात्व मोहनीय कर्म उदय हुआ तथा भाव मिथ्यात्व आया इस कारण से स्त्री वेद का बंध पड़ा, इत्यर्थ।

प्रश्नोत्तर १३६

प्रश्न:-श्री कृष्ण महाराज घातकीखंड में गया तब गंगा नदी सन्मुख नहीं आई, और पीछे आता गंगा नदी सामने आई इसका क्या कारण ?

उत्तरः-श्री कृष्ण महाराज धातकीखंड में जब जाते गंगा नदी के दक्षिण किनारे होके पूर्व समुद्र दे होके गया और पीछे आता गंगा नदी के उत्तर के किनारे लवण समुद्र में से पूर्व के तीसरा खंड में आया और वहां से मध्य खंड में आना नदी उतरनी पड़ी। इसलिये बीच में आई।

अत्रशंका-जंबुद्वीप के नकशे में गंगा सिंधु नदी का आकार दक्षिण समुद्र मिलाया है और श्री " ज्ञाताजी " सूत्र में कहा है कि- पूर्व की तरफ गया तो पीछे जाते वक्त और आते दोनों ही वक्त नदी उतरनी चाहिये ?

तत्रोत्तरः-श्री " जंबुद्वीप पन्नति " सूत्र में कहा है कि- गंगा नदी, गंगा प्रपात कूट के दक्षिण के तोरण में से निकल के वैताढ भेद दक्षिणार्ध भरत में वनिता नगरी तक एक लाईन में दक्षिण दिशा में चली और वनिता नगरी की सीमा से सीधी पूर्व दिशा में गई उस कारण से जाते वक्त नदी नहीं आई, किनारे होकर गया इसलिये [शाख:- श्री " ज्ञाताजी " सूत्र के अध्ययन १५]

प्रश्नोत्तर १३७

प्रश्नः—श्री पार्श्वनाथ भगवान् की आठ साध्वीजी महाराज विराधिक हो के दूसरे देवलोक मे कैसे गई ?

उत्तरः—श्री पार्श्वनाथ भगवान् की साध्वीजी महाराज देश से विराधिक हैं। परतु वंकुश नियंठा संभव है। उसका लक्षण शुश्रूषा करने का है उस कारण से सर्व से विराधिक नहीं कारण कि- एक अवतारी है। इसलिये देश से विराधिक दूसरे देवलोक में उत्पन्न हुई है। उसमें कोई बाधा नहीं।

(शाखः श्री "ज्ञाताजी" सूत्र के अध्ययन १६ में सुकुमालिका साध्वीजी महाराज दूसरे देवलोक मे गई इस न्याय से)

प्रश्नोत्तर १३८

प्रश्नः—श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० २ उ० १ में कहा है कि—विराधिक संयमी उत्कृष्ट पहिले देवलोक में

जावें। श्री "ज्ञाताजी" सूत्र के अध्ययन १६ में सुकुमालिका साध्वीजी महाराज विराधिक तो भी दूसरे देवलोक में गई यह कैसे?

उत्तरः—यह देश से विराधिक है और भद्रिक परिणाम से गई। ऐसे ही पहिला और दूसरा देवलोक सहचारी हैं, इसलिये गई है।

प्रश्नोत्तर १३९

प्रश्नः—नाग श्री ब्राह्मणी कब हुई?

उत्तरः—गत अनंतकाल में हुई (शास्त्रः गोशाला की) पांच स्थावर में परिभ्रमण किया। इसलिये अनंतकाल में हुई समझ है (शास्त्रः श्री "ज्ञाताजी" सूत्र में नाग श्री ब्राह्मणी के अधिकार में अध्ययन १६ में है)

प्रश्नोत्तर १४०

प्रश्न:—श्री "उपाशक" दशांगजी" सूत्र के प्रथम अध्ययन में श्री आनंदजी श्रावक के अधिकार में ५०० हलवा जमीन खुली रक्खी तो ५०० हलवा का कोस कितने और छठा व्रत की मर्यादा कितनी कि ?

उत्तर:—५०० हलवा जमीन का ओरस चौरस १२५० कोस जमीन खुली रखी है उसकी गणना १० हाथ का १ विस्वा। २० विस्वा का १ नियत। १०० नियत का १ हलवा। ऐसा ५०० हलवा जमीन खुली रक्खी है। ऐसे ही छठा पांचवां व्रत के शामिल संभव हैं।

अत्रशंका—यदि कोई ऐसा कहै कि—ऊंची, नीची, तिरछी दिशा का प्रमाण कहा नहीं। इसलिये छठा व्रत नहीं गणना चाहिये ?

तत्रोत्तर—छठा व्रत पांचवां व्रत के भीतर नहीं गिनते हो तो पिछे छठा व्रत के अतिचार की जरूरत नहीं

ऐसे ही ऊपर के व्रतों का उच्चार किया नहीं। एक दूसरा व्रतों में शामिल है। इस न्याय से यहां छट्ठा व्रत में शामिल संभव है और ऊपर कहे अनुसार क्षेत्र फिरने की खुल्ली रक्खी संभव है। पीछे बहुत सूत्रीजो कहे वह सत्य।

प्रश्नोत्तर १४१

प्रश्न:—श्री "उपाशक दशांग" जी सूत्र में श्री "आनंदजीश्रावक" ने शरद ऋतु का घी खुल्ला रक्खा है तो शरद ऋतु किसको कहना चाहिये ?

उत्तर:—कोई ऐसा कहते हैं कि—प्रातःकाल में तपाया हुआ घी सदैव लिया है। परन्तु कोई ऐसा कहे कि—शरद ऋतु की प्रसूत (बियाई) हुई गौ का घी खाते हैं। कोई २ ऐसा कहते हैं कि—शरद ऋतु का पक्का भाग तैयार हुआ उसको खावे और उसका घी खावे। पिछे तत्वार्थ केवली गम्य।

प्रश्नोत्तर. १४२

प्रश्नः–श्री "उपाशक दशाग" जी सूत्र में कहा है कि–श्री सकडाल पुत्रने गोशाला को पाट, पाटीया दिया, वह छः आगार में से कौनसे आगार से दिया?

उत्तरः–"गुरु निग्गहेणं" इसका अर्थः–गुरु का गुणग्राम किया इसलिये दिया है तो ६ आगार में से ऊपर के बोल में गुण स्तुति मालूम होती है। इसलिये वह बोल के आगार से दिया है।

अलशंका——धर्म जान के नहीं दिया?

तत्रोत्तर–तो क्या पाप जान के दिया? जो पाप जान के मिथ्यात्व सेवे तो सम्यकत्व जावे, पाप जानके मिथ्यात्व सेवता सम्यकत्व न जावे, तो छः आगार रखने का क्या कारण। अहो? हमारे प्रिय बन्धु अति विचार करके देखिये।

प्रश्नोत्तर १४३

प्रश्नः—श्रावकजी संथारा में अठारह पाप और चारों आहार का प्रत्याख्यान करते हैं तो उनको साधुजी महाराज कहना चाहिये कि नहीं ?

उत्तरः—साधुजी महाराज नहीं कहा जावे, कारण कि—साधुजी पणा होना तो छेदोपस्थानिक चारित्र में तथा मोहनीय कर्म की प्रकृति ऊपर है जैसे २ प्रकृति का क्षयोपशम होता है जब गुण श्रेणी में चढ़ते तो धारा करने वाला श्रावकजी ने छेदोपस्थापनिक चारित्र उचारा नहीं। ऐसे ही पांचवां गुणस्थान में रहा हुआ जीव ग्यारह प्रकृति की क्षयोपशम की है। परन्तु प्रत्याख्यान की चार प्रकृति क्षयोपशमाइ नहीं। इसलिए छट्ठा गुणस्थान पावे नहीं अर्थात् साधुजी महाराज नहीं कहना।

प्रश्नोत्तर १४४

प्रश्नः—श्रावकजी का प्रतिक्रमण का दोष कितना और कौन २ से ?

उत्तरः—दोष १२४ कहते हैं। ज्ञान का अतिचार ८५। तप का १२। वीर्य का ३। यह १००' अतिचार ज्ञान का ८ कहते हैं। (१) काल के काल पढ़ें (२) विनय से पढे (३) बहुत मान कर के पढे (४) सूत्र सिद्धांत पढते तप करें। (५) उपकारी का उपकार छिपावे नहीं। (६) व्यंजन सहित पढे। (७) अर्थ सहित पढे (८) सूत्रार्थ संयुक्त पढे। यह ज्ञान का आठ हुआ। अब दर्शन का ८ कहते हैं (१) तत्त्व की शंका न लावे। (२) अन्य का धर्म न वांछे (३) फल का संदेह न लावे (४) मिथ्यात्व का धर्म की महिमा देख कर वांछा न कर (५) धर्मवंत का गुण ग्रा करें (६) धर्म से गिरते को स्थिर करें (७) स्वामीजी का हितकारी हों (८) आठ प्रवचन माता की प्रभावना करें। यह आठ दर्शन का हुआ। अब चारित्र का ८ कहते हैं। पांच समिति, तीन गुप्ति। यह आठ चारित्र का हुआ। सर्व मिल कर १२४ दोष टाल के श्रावकजी को प्रतिक्रमण करना चाहिये।

प्रश्नोत्तर १४५

प्रश्नः—माण् वंदणा में श्री अंधक विष्णु के गौतमादिक १८ पुत्रों कहा है वह कैसे ?

उत्तरः—श्री " अंतगडजी " सूत्र में कहा है कि—श्री अंधक विष्णु के दश कुमार गौतम विष्णु आदि दश पुत्रों कहा है और विष्णु कुमार के अक्षोभादिक आठ पुत्रों कहा वह अंधक विष्णु का पिता श्री समझना। इसलिये दोनों ही अलग २ समझें। परन्तु श्री अंधक विष्णु के १८ कुमार समझना न चाहिये।

प्रश्नोत्तर, १४६

प्रश्न—श्री " ज्ञाताजी" सूत्र में श्री कृष्ण महाराज की बत्तीस हजार स्त्रियां कही और श्री" अंतगडजी" सूत्र में सोलह हजार स्त्रियों कही वह कैसे ?

उत्तरः——श्री ज्ञाता जी" सूत्र में बतीस हजार स्त्रियां कही वहां "महिला" ऐसा पाठ है, इसलिये राज पुत्री तथा सेठ साहुकार सामानिक राजा की पुत्री सर्व जाने तथा श्री "अंतगडजी" सूत्र में सोलह हजार स्त्रियों कही वहा "देवी" ऐसा पाठ है इसलिये बड़ा राजा की पुत्री समझना चाहिये।

प्रश्नोत्तर १४७

प्रश्नः——प्राणातिपात आदि पांच प्रकार के पाप और पांच प्रकार के आश्रव। यह दोनों में क्या फरक समझना?

उत्तर—— प्रथम हिंसा करने का जो भाव वर्ते वह भाव आश्रव और हिंसा कि इसलिये पाप हुवा और और वह पाप से आया कर्म उसको द्रव्य आश्रव समझना। इस अनुसार दोनों का गुण अलग २ समझना (शारव: श्री व्याकरण" जी सूत्र की प्रथम अध्ययन)

प्रश्नोत्तर. १४८

प्रश्न:—जैन शब्द के अर्थ कितने होते हैं ?

उत्तर:—(१) जैन नाम तीर्थंकर. (२) जैन नाम वृक्ष "राय प्रश्नेणी" सूत्र में. (३) जैन नाम प्रासाद स्तूप "राय प्रश्नेणी" सूत्र में. (४) जैन नाम अंतराय तन श्री "उववाई" जी सूत्र में. (५) जैन नाम ज्ञान श्री "उववाईजी" सूत्र में (६) जैन नाम भगवानर्तीक श्री "उपासक दशांग जी" सूत्र में (७) जैन नाम याग श्री "उत्तराध्ययनजी" सूत्र में (८) जैन नाम वन श्री "उत्तराध्ययनजी" सूत्र में. (९) जैननाम प्रतिमा श्री "प्रश्न व्याकरणजी" सूत्र में. (१०) जैन नाम स्तूभ श्री "जंबूद्वीप पन्नति" सूत्र में। विशेष नाम "हैमी नाम माला" ग्रंथ में हैं।

प्रश्नोत्तर १४९

प्रश्न—नाभि राजा की ५२५ धनुष की काया है तो श्री मरुदेवी माताजी की भी इतनी होनी चाहिये, तो श्री मरुदेवी माताजी कैसे मोक्ष में गई ?

उत्तर—श्री मरूदेवी माताजी की अवगाहना नाभि राजा से छोटी है कारण कि-उत्तम स्त्री की अवगाहना पुरुष से चार अंगुल, आत्म अंगुल से छोटी होती है-श्री "प्रश्न व्याकरणजी" सूत्र के अ० ४ में कहा है इसलिये श्री मरूदेवी माताजी मोक्ष में गई वह विरुद्ध नहीं है तथा अन्य मतवाले ऐसा कहते हैं कि-हाथी के होदा ऊपर बेठे मोक्ष में गई है। इससे "मज्झम घन पडे" इसलिये विरुद्ध नहीं।

प्रश्नोत्तर १५०

प्रश्नः—श्री केवली महाराज जिस जगह बेठे उसी जगह बेठे हुये कपाटादिक करें कि-मेरु पर्वत पास जाकर पीछे कपाटादिक करें?

उत्तर—श्री केवली महाराज जिस जगह बेठे उसी जगह दंड कपाटादिक, मंथाणादिक में मेरुपर्वत आजाता है. स्पर्श के आश्री. (शास्त्र:-श्री "उववाईजी" सूत्रकी)

प्रश्नोत्तर १५१

प्रश्न—श्री केवली महाराज दंडादिक करके सर्व प्रदेश निकालते हैं तो रुचक प्रदेश बाहिर निकले या नहीं ?

उत्तर:—आठ रुचक प्रदेश बाहिर न निकले और जो आठ रुचक प्रदेश बाहिर निकले तो फिर पीछे आवे नहीं क्योंकि परगा होजावे। इसलिये रुचक प्रदेश परगा सिवाय बाहिर न निकले. (शाख:-श्री "उववाईजी" सूत्र की)

प्रश्नोत्तर १५२

प्रश्न —श्री "उववाईजी" सूत्र में कहा है कि-जघन्य सात हाथ वाला मोक्षे और श्री "नवतत्त्व" में कहा कि-दो हाथ वाला मोक्षे और सिद्धों की अवगाहना जघन्य एक हाथ और आठ अंगुल की कही तो दो हाथ वाला जैसे मोक्षे तो जघन्य कही हुई का "घन" कैसे पड़े तथा सात हाथ वाला की अवगाहना मान हाथकी किसप्रकार से हो ?

उत्तर:—सात हाथ वाला वैंटे सीझे तथा वामन रूप वाला और सोता यह तीनों ही जाडपणे सीझे तब जघन्य "घन" पडे। परन्तु नव वर्ष वाला सीझे तो उभा सीझे, परन्तु वैंटे न सीझे। दो हाथ वाला न सीझे।

प्रश्नोतर १५३

प्रश्न:—अकाम निर्जरा किसको कहना चाहिये ?

उत्तर—अकाम निर्जरा के २ भेद. (१) सम्यग् दृष्टि जीव–इच्छा विना परवशपणे दुःख सहन करें उसको अकाम निर्जरा कही (२) मिथ्यात्वी जीव इच्छा–विना परवशपणे दुःख सहन करें उसको भी अकाम निर्जराकही (शास्त्र:-श्री "उववाई जी" सूत्र की) उसका फल पुद्गलीक सुख मिलें।

प्रश्नोत्तर १५४

प्रश्न:— श्री सिद्ध भगवान् किस उपयोग में होवे ?

उत्तरः—सागार उपयोग में अर्थात् ज्ञान के उपयोग में होवे। (शाख:-श्री "उववाईजी" सूत्र की तथा श्री "उत्तराध्ययनजी" सूत्र के अध्ययन ३६ वां की गाथा "सागरोवउत्ते सीज्झइ")

प्रश्नोत्तर १५५

प्रश्नः—श्री "उववाईजी" सूत्र में कहा है कि-"निह्नवमति" नवग्रैवेयक तक जावे और इसी सूत्र में तथा श्री "भगवतीजी" सूत्र में कहा है कि-श्री आचार्यजी उपाध्यायजी प्रतिनीक छठे देवलोक तक जावें यह कैसे ?

उत्तरः—मत चलाने वाला छठे देवलोक तक जावें कारण कि-वह गाढ़ा मिथ्यात्वी है इसलिये उनका साधु की तरह अल्प मिथ्यात्वी तथा अल्प द्वेषी होने से नव ग्रैवेयक तक जावें।

प्रश्नोत्तर १५६

प्रश्नः—कितनेक ऐसा कहते है कि–श्रावक के १४ प्रकार के दान में ६ प्रकार की वस्तु पाढीहारी लेनी कल्पे है। यह कौनसे सूत्र में लिखा है ?

उत्तरः–श्री "उववाईजी" सूत्र में श्रावक के प्रश्नोत्तर का अधिकार में कहा है कि–"पाढीहारीयं पीढ फलग सेज्या संठारयणं उसह भेसजेणं" यह छः वस्तु पाढीहारी लेनी कल्पे। परंतु आहार पानी मुखवास फल आदि लेना न कल्पे (शाखः–श्री "उववाईजी" सूत्र की)

प्रश्नोत्तर १५७

प्रश्नः—आहार मजा जीव पास है तो भी अणाहारिक कहा वह किसको समझना चाहिये ?

उत्तरः—श्री केवली महाराज को समुद्घात का तीसरा, चौथा तथा पांचवां यह तीनों समय आश्री अणाहारिक कहा है (शाखः—श्री "उववाईजी" सूत्र की)

प्रश्नोत्तर १५८

प्रश्नः—श्री "राय पसेणी" जी सूत्र में श्री केशी कुमार के चार ज्ञान कहा है। वह केशी कुमार तथा श्री "उत्तराध्ययन जी" सूत्र के अध्ययन २३ में केशी कुमार के तीन ज्ञान कहा है। वह दोनों ही केशी कुमार अलग २ जानना वह कैसे ?

उत्तरः—चार ज्ञानवाला श्री केशी कुमार हुआ, उन्हों ने चार महाव्रत रूपी धर्म "परदेशी राजा" को पास प्ररूपणा किया और तीन ज्ञानवाला श्री केशी कुमार श्री गौतम स्वामीजी से मिला।

अत्रशंका—यहां कोई ऐसा कहै कि--श्री म स्वामीजी गौतके शामिल हुये पीछे चौथा ज्ञान उत्पन्न हुआ और पीछे "परदेशी राजा" को समझाया ?

तत्रोत्तर—जो श्री गौतम स्वामीजी मिले पीछे "परदेशी राजा" को उपदेश दिया हो तो पांच महाव्रत रूपी धर्म प्ररूपणा करते, परंतु वह तो नहीं है वहां तो चार महाव्रत रूपी धर्म प्ररूपणा किया है। इसलिये दोनों ही श्री केशी कुमार अलग २ समझना चाहिये।

प्रश्नोत्तर १५९

प्रश्नः---श्री "राय प्रश्नेणी" जी सूत्र में कहा है कि--मृत्यु लोक की गंध चारसों पांचसों योजन उछलते है तो दोनों ही बोल अलग २ कहने का क्या कारण हैं ?

उत्तरः—चारमां योजन की गंध कही वह तो रोज आश्री समझें और पांचमो योजन की गंध कही वह तो काल अकाल में मनुष्य पुद्गल अधिक होने से पांचमो योजन तक गंध उछलते है, तथा चौथा पांचवां भाग आश्री समझना, और काल अकाल की आश्री दो बोल अलग २ समझना चाहिये। पीछे तत्त्वार्थ केवली गम्य।

प्रश्नोत्तर १६०

प्रश्नः—दश प्रकार के कल्पवृक्ष पांच स्थावर काय मांहिली कौनसी काय का है तथा तीन प्रकार के पुद्गल मांहिला किस जाति का पुद्गल कितने हैं?

उत्तरः—यह कल्पवृक्ष एक वनस्पति काय का संभव है कारणकि--"श्री जीवाभिगमजी" सूत्र में प्रत्येक २ कल्पवृक्ष का (वहुवेकवा) कहा है ऐसे ही "कुसविकुस रहीयां चिठंती" यह कर्म भी अकर्म भूमि में द्रव्यार्थ शाश्वत् और पर्यायार्थ अशाश्वत् संभव है (देवलोक के वागवत) और पुद्गल के लिये श्री "भगवतीजी" सूत्रके श० ८ उ० १ में

तीन प्रकार का पुद्गल कहा है (१) उगसा. (२) मीसा. (३) वीससा. तो यह कल्पवृक्ष "पउगसा" पुद्गल का है कैसे कि-जीव ग्रहा वह पउगसा इसलिये पउगसा प्रणित है।

अत्रशंका:——कितनेक ऐसा कहते है कि--वह वृक्ष देव कृत है कि--देव प्रेरक विना युगलियां को इच्छित वस्तु कैसे मिल सक्ती है ?

तत्रोत्तर:——इसी सूत्र में कहा है कि--दश प्रकार का कल्पवृक्ष "वीससा" प्रणित कहा है अर्थात् स्वाभाविक है। परन्तु किसी का बनाया हुआ नहीं है। इसलिये देव कृत संभव नहीं है।

विशेष शंका:——तो क्या दश प्रकार की वस्तु वृक्ष में टांगी हुई है कैसे ?

उसका समाधान:——उसी ही सूत्र में श्री जिनराज देव ने "पुढवी पुप्फ फलाहारा" कहा है अर्थात् पृथ्वी, पुष्प तथा फल यह तीनों वस्तु रूप सर्व वस्तु रोज रहें ऐसा संभव है और वह वृक्ष ऐसा गुण रूप से प्रगमे, जैसे महुडा

महान् केन के त्रिकूट में रोजर्या स्थान् देश में राजित्रयन। यह न्याय से संभव है। पीछे तत्त्वार्थ केवली गम्य (शास्त्र: "श्री जीवाभिगमजी" सूत्र की चौथी प्रति प्रति)

प्रश्नोत्तर १६१

प्रश्न:—छठे आरा के थोकड़े में युगलिया के बेर तथा चणा की दाल जितना आहार कहा तो तीन कोस का युगलिया को इतना आहार से संतोष कैसे हो?

उत्तर:—श्री "जीवाभिगमजी" सूत्र में युगलिया के शरीर प्रमाण आहार श्री जिनराज देव ने कहा है तो बेर तथा चणा की दाल जितना आहार से क्षुधा उपसमे नहीं। इसलिये युगलिया के अपने २ का शरीर प्रमाण आहार होना चाहिये।

अत्रशंकाः—युगलिया के आहार की सरसाई उसी सूत्र में बहुत ही वर्णन की है। इससे अल्प आहार करने से बहुत संतोष पावे है। इस लिये बेर प्रमाण आहार करना विरुद्ध नहीं समझना चाहिये।

तत्रोत्तरः—उसी सूत्र में वारुणी समुद्र का पानी का वर्णन किया है कि--उसकी हवा केवल मनुष्य इन्द्रिय से ले तो बहुत ही नशा आजावे कहा है तो उसी समुद्र में रहने वाला तिर्यंच वह ही पानी रोज पीते हैं। परन्तु उन तिर्यंचों के नशा चढ़ता नहीं तो इस न्याय से जोर क्षेत्र का आहार रस वाला है तो उसी क्षेत्रों का मनुष्य भी ऐसा रस वाला आहार पचने की तीव्र शक्ति है इस लिये युगलिया के बेर जितना आहार घटे नहीं परन्तु अपने २ का शरीर प्रमाण आहार समझना चाहिये।

प्रश्नोत्तर १९२

प्रश्नः—'श्री मृगा पुत्र के अधिकार में नरक में मांस, खून खिलाया कहा और श्री 'पन्नवणा जी'' सूत्र में

नारकी, देवता के संघयण कहा सो कैसे ?

उत्तरः— श्री " जिवाभिगमजी " सूत्र में नारकी, देवता को असंघयणी कहा वह वैक्रिय शरीर आश्री, कारण कि— संघयण तो उदारिक शरीर वालों के है और उदारिक शरीर वालों के हड्डी, मांस तथा खून है और वैक्रिय शरीर वालों के हड्डी, मांस तथा खून नहीं। इसलिये असंघयणी कहा है। श्री " पन्नवणाजी " सूत्र में कहा वह पुद्गल संघयणा पणे प्रणमें हैं और श्री " उत्तराध्ययनजी " सूत्र के अ० १९ में नारकी को खून कहा वह नारकी का शरीर अशुद्ध पुद्गल का बना हुआ है वह ही शरीर को छेद के उसको खावे। इसलिये मांस खून समान कहा जैसे कि—बादर अग्नि तो केवल अढाई द्वीप है और उसी अध्ययन में नारकी के विषय हुताशन अर्थात् अग्नि कही है वह जैसे वैक्रिय अग्नि जानना। ऐसे ही नारकी के शरीर का अशुभ पुद्गल का मांस कहा है।

प्रश्नोत्तर १६३

प्रश्नः— नारकी का जीव वैक्रिय रूप बहुत कर सक्ते हैं या कि नहीं ?

उत्तर:— पांचवीं नरक तक एक रूप वैक्रेय करें तथा बहुत रूप शस्त्र का बनाते हैं और छट्ठी सातवीं नरक वाला कुंथु आदिक का रूप बनाते हैं। परंतु संख्याता करें और असंख्याता न करें (शास्त्र:– श्री " जीवाभिगमजी " सूत्र में चौथे बोल के अधिकार में है)

प्रश्नोत्तर, १६४

प्रश्न:— नारकी, तिर्यंच मनुष्य तथा देवता का बनाया हुआ वैक्रेय रूप कितना काल रहें ?

उत्तर:— नारकी को एक अन्तर मुहूर्त रहें। मनुष्य तिर्यंच को एक प्रहर, और देवता का १५ दिन रहें (शास्त्र: श्री " जीवाभिगमजी " सूत्र की चौथी प्रति छति नारकी के अधिकार में उ० ३)

प्रश्नोतर १६५

प्रश्न.— युगलिया के निहार को लेप लगते हैं या नहीं ?

उत्तर.— न लगे (शास्त्र: श्री " जीवाभिगमजी " सूत्र की युगलिया के अधिकार में)

प्रश्नोत्तर १६६

प्रश्न:—आहारिक शरीर का सर्व जीव आश्री अन्तर पड़े तो कितना पड़े ?

उत्तर:—जघन्य एक समय उत्कृष्ट छः मास का (शास्त्र: श्री " जीवाभिगमजी " सूत्र की छपी टीका का पन्ना २७ में है)

प्रश्नोत्तर. १६७

प्रश्नः— तिर्यंच पचेन्द्रिय का २० भेद है उस मे युगलिया के क्षेत्रों में कितने भेद पावे ?

उत्तरः– स्थलचर गर्भज का २ भेद तथा खेचर का २ भेद। यह चार भेद तिर्यंच का युगलिया में पावे।

शंका— जब कोई कहै कि– दूसरा कैसे नहीं पावे ?

उत्तरः– बाकी का तिर्यंच की स्थिति कम है अर्थात् उत्कृष्टि पूर्व क्रोड की कही है तो स्थिति वाला तो कर्म भूम में ही है और स्थलचर खेचर की स्थिति पूर्व उपरांत की है तो वह आश्री युगलिया पणे पावे है। इसलिये चार भेद लिये है, परंतु दूसरा भेद तिर्यंच का पावें। युगलिया में तो ऊपर का बताये हुए ही चार भेद पावे। (शास्त्रः- श्री " जीवाभिगमजी " सूत्र की)

उत्तर:— श्री केवली महाराज उत्कृष्ट पूव क्रोड देश उणा आहार करें इस प्रकार से कहा है।

अत्रशंका—— श्री केवली महाराज तथा श्री तीर्थंकर देव संथारा करते हैं। अणाहारिक हुआ कैसे समझना चाहिये ?

तत्रोत्तर:—श्री केवली महाराज कवल आहार से पुद्‌गल ले रहे हैं अर्थात् संथारा करें, परंतु रोम आहार लेते हैं इस आश्री देश उणा पूर्व क्रोडी, श्री केवली महाराज आहारिक रहते हैं (शास्त्र:- श्री " जीवाभिगमजी सूत्र में कहा है)

प्रश्नोतर १७०

प्रश्न:—- श्री " जीवाभिगमजी " सूत्र में कहा है कि- साधु जी महाराज का साहारण करके अकर्म भूमि में मेले तो वहां साधुजी महाराज बहुत काल विचरें कि- जल्दी काल करें, जो बहुत काल विचरे तो सूझता आहार किस प्रकार से करें ?

उत्तरः— साधुजी महाराज हुआ पीछे प्रायः तत्काल करें और यदि जो बहुत काल की स्थिति हो तो समयकाल देखना पीछे उपाड़ कर कर्म भूमि में मेले, परन्तु विशेष तो थोड़े मुहूर्त में भी काल करना चाहिये। पीछे तत्वार्थ केवली गम्य।

प्रश्नोत्तर १७१

प्रश्नः— श्री " जीवाभिगमजी " सूत्र की चौथी प्रति पत्ति में सर्व जीव ४ - ५ प्रकार का है उसमें अवधि दर्शन उत्कृष्ट कहे तो १३२ सागर कहें ऐसा कहा और उसी सूत्र की आठवीं प्रति पत्ति में अवधिज्ञान की स्थिति ६६ सागर की कही विभंगज्ञान की स्थिति उत्कृष्टि ३३ सागर पूर्व क्रोडी अधिक कही तो अवधिज्ञान की तथा विभंगज्ञान की मिलके ९९ सागर की स्थिति हुई तो अवधि दर्शन की स्थिति १३२ सागर की कैसे मिले? कारण कि विभंगज्ञान तथा अवधिज्ञान मिलके १३२ सागर उत्कृष्ट अवधि दर्शन पणो रहना चाहिये। वह यहां नहीं मिले वह कैसे ?

उत्तर:—एक जीव मनुष्य में से विभंगज्ञान से मरके नव ग्रैवेयक में उत्कृष्टि स्थितिये ३१ सागर में उत्पन्न हुआ, और, अंत समय अवधिज्ञान ले के चव के मनुष्य में आया और मनुष्य के पीछे अवधिज्ञान छोड़ के विभंगज्ञान पावे। पहिले देवलोक में २ सागर की स्थितियें गये और वहां से अंत समय अवधिज्ञान लेकर मनुष्य में आया वहां से पीछे अवधिज्ञान लेकर बारहवां देवलोक में तीन भव ऊपरा ऊपर अवधिज्ञान का किया अर्थात ६६ सागर अवधिज्ञान का भोगवी मनुष्य भव में आकर विभंगज्ञान की प्राप्ति की। महा आरंभ तथा महा परिग्रह शामिल किया विभंगज्ञान से मरके सातवीं नरक में ३३ सागर उत्कृष्टि स्थिति विभंगज्ञान से भोगवे। ऐसे ही सर्व मिलके १३२ सागर की स्थिति अवधि दर्शन की स्थिति समझना चाहिये।

प्रश्नोत्तर १७२

प्रश्न:—मनुष्य से मनुष्यणी सताईस गुणी किस न्याय से मिले ?

प्रश्नोत्तर १७४

प्रश्न:—छपा हुआ "बाईस थोकडे" में नव तत्व में कहा है कि–छप्पन अंतर द्वीप का मनुष्य किसको कहना चाहिये ? नीचे समुद्र है और ऊपर अधर डाढा में द्वीप के रहने वाला है ऐसा कहा वह कैसे ?

उत्तर:—छप्पन अंतरद्वीप का मनुष्य-डाढा ऊपर नहीं है। सात २ द्वीप की पंक्ति है और टेडी टेडी होने से डाढा के आकार से रहेल है और जो तुम्ह डाढा कहते हों तो कौन से पर्वत में से निकली कैसे कि--चूलहिमवंत पर्वत तथा शिखरी यह दो पर्वत में से निकली हो तो वह पर्वत लंबा ३३ हजार ३३२ योजन लंबा चाहिये वह तो नहीं कहा परंतु लंबा तो श्री जिनराज देव ने २४९३२ योजन कहा है। इसलिये समझे नहीं और द्वीप उसका अर्थ यहां पर ऐसा समझना कि--चारों तरफ पानी हो और बीच में जो पर्वत ऊपर गांव हो उसको द्वीप कहते है ऐसे ही लौकिक में उसको भी द्वीप कहते हैं (शास्त्र: श्री "जीवाभिगम जी" सूत्र की)

१ प्रश्नः—लवण समुद्र में मनुष्य का वास कितने योजन तक है ?

उत्तर—१८०० योजन तक है।

अत्रशंका:—छप्पन अंतर द्वीप ८४०० योजन लवण समुद्र में है। ऐसा कहा वह कैसे ?

तत्रोत्तरः—श्री "जीवाभिगम जी" सूत्र में अंतर द्वीप के अधिकार में कहा है कि जंबु द्वीप की जगति से ३०० योजन लवण समुद्र में जावे जिहां पहिला द्वीप आवे वह द्वीप ३०० योजन लंबा चौड़ा है और जगती से ४०० योजन के छेटे (दूर) ऐसा ही दूसरा द्वीप है और ऐसे ही जगती से ५०० योजन का लंबा तीसरा द्वीप है और ६०० योजन का चौथा द्वीप है और ७०० योजन का पांचवां द्वीप है और ८०० योजन का छठा द्वीप है। और जंबुद्वीप की जगती से ९०० योजन लवण समुद्र में सातवां द्वीप है। इस अपेक्षा से जगती से १८०० योजन तक मनुष्य का

वास कहा परन्तु ८४०० योजन का कहा वह द्वीपा द्वीप की परस्पर अपेक्षा से समझना। परन्तु लवण समुद्र में मनुष्य का वास १८०० योजन तक है कैसे कि-९०० योजन का सातवां द्वीपा और ९०० योजन जगती से लंबा है। सर्व मिलके १८०० योजन होता है।

प्रश्नोत्तर १७६

प्रश्नः--लवण समुद्र में पाताल कलसा हैं वह लाख योजन का कहा हैं वह कौनसी जगह रहा हैं ?

उत्तरः—श्री जीवाभिगमजी" सत्र में कहा है कि-सम पृथ्वी भाग में पानी के नीचे उसका मुख है और लाख योजन का पाताल कलसा पहिले पाथड में तथा आतरा भेद क रहा है। परन्तु समभूतल से ऊपर नहीं समझना। नरक में सामीया भाव से रहा है (शाखः - "श्री जिवाभिगमजी" सूत्र की)

हजार योजन जावे तव गोस्थूभ द्वीप आदि वेलंधर अणु वेलंधर नाग राजा का पर्वत १७२१ योजन का ऊंचा कहा है तो उस ठिकाने जल वृद्धि पण सात हजार योजन के अनुमान होना चाहिये तो पीछे वह द्वीप डूब जावे और देवता के क्रीडा करने का स्थान वगैरह भी डूब जावे और उस द्वीप के अधिकार में तो जल के अंदर हो ऐसा नहीं समझा जाता है। ऐसे ही चंद्र सूर्य का विमान भी समुद्र में तपा तपे है तपेंगे ऐसा पाठ "श्री जीवभिगम जी" सूत्र मे है तो उसकी ऊंचाई से जल की ऊंचाई वृद्धि हो तो तपने संबंधी के पाठ के पाठ में भी बाधक लगे हैं ?

उत्तर—उस सर्व के समाधान के लिये ऊपर का कहा हुआ बारह हजार योजन का लंबा चौड़ा गोतम द्वीप की गणना प्रमाण से ९५ हजार योजन जगती से लवण समुद्र में जावे तव सातसों योजन की जल वृद्धि समझी जाती है और उस गणना से गोस्थुभ द्वीप तथा चंद्र, सूर्य का मंडल बाहिर रहते हैं। पीछे तत्वार्थ केवली गम्य।

प्रश्नोत्तर १७८

प्रश्नः—असंख्याता द्वीप समुद्र में चंद्र सूर्य की गणना किस प्रकार से समझनी ?

प्रश्नोत्तर १८०

प्रश्नः—अढाईद्वीप के बाहिर के चंद्र, सूर्य का संठाण कैसा ?

उत्तरः—पक्की इंट का है (शास्त्र:-श्री "जीवाभिगमजी" सूत्र की तथा श्री "जंबुद्वीप पन्नति" सूत्र की)

प्रश्नोत्तर १८१

प्रश्नः—सूर्य सूर्य के एक लाख योजन का अंतर कहा है तो जंबुद्वीप का मांडला का अंतर कैसे मिले ?

उत्तरः—जंबुद्वीप का सूर्य का अंतर जघन्य ९९६४० योजन का और उत्कृष्ट १००६६० योजन का अंतर समझे। परंतु लाख योजन का अंतर वह अढाईद्वीप के बाहिर आश्री समझना। परंतु अढाईद्वीप में नहीं समझना

(शास्त्र—श्री " जीवाभिगमजी " सूत्र की)

प्रश्नोत्तर १८२

प्रश्न—कितनेक आसालिया को द्वीन्द्रिय कहते हैं और कितनेक पंचेन्द्रिय कहते हैं वह कैसे ?

उत्तर—आसालिया और असंज्ञी पंचेन्द्रिय मिथ्यात्वी कहा है वह चक्रवर्ती आदि का कटक का तथा बड़े नगर का नाश होवे तब जो नीचे उपजे। परन्तु अन्तर मुहूर्त में उपज कर विनाश पावे हैं ऐसा कहा है (शास्त्र-श्री " पन्नवणाजी " सूत्र के प्रथम पद में)

प्रश्नोत्तर १८३

प्रश्न—गर्भज मनुष्य की स्थिति कितनी और मर के कहाँ जावे ?

उत्तर--तांडुल मच्छकी स्थिति ७७ लव की है उसमें ११ लव गर्भ में रहते हैं, पीछे जन्म हुआ बाद ६६ लव को आयु पाले उसमें महा खराब अध्यवसाय कर के अन्तर मुहूर्त में काल कर के वज्रऋषभनाराच संघयण का धणी तांडुल मच्छ मर के सातवीं नरक में जावे (शाखः श्री "पन्नवणाजी" सूत्र के प्रथम पद में कहा है)

प्रश्नोत्तर १८४

प्रश्न—सोलह वाणव्यन्तर देवता कौन से जगह रहते हैं ?

उत्तर—रत्नप्रभा पृथ्वी का पिंड १८०००० योजन का जाडा है उसमें एक हजार योजन नीचे छोडिये और एक हजार योजन ऊपर छोडिये, बीच में नरकावासा है और ऊपर एक हजार योजन के पिंड में सौ योजन नीचे छोडिये और सौ योजन ऊपर छोडिये, बीच में ८०० योजन की पोलार है उसमें वाणव्यन्तर देवता रहते हैं (शाखः-श्री " पन्नवणाजी " सूत्र के दूसरा पद की)

प्रश्नोत्तर १८५

प्रश्न-व्यन्तर जाति के देवता कहां पर रहते हैं ?

उत्तर-रत्नप्रभा पृथ्वी का हजार योजन का ऊपर पिंड है उसमें १०० योजन नीचे छोड़िये और सौ योजन ऊपर है उसमें दस योजन ऊपर छोड़िये और दस योजन नीचे छोड़िये, बीच में ८० योजन की पोलार में रहते हैं।

प्रश्नोत्तर १८६

प्रश्न-श्री " पन्नवणाजी " सूत्र के दूसरे पद में कहा है कि-बादर पृथ्वी काय लोक के असंख्याता भाग में है। अपर्याप्त सर्व लोक में कहा यह कैसे संभव है ?

उत्तर-सूक्ष्म जीव का बादर का आयु बन्धा हुआ और वह काल करके पृथ्वी में अपर्याप्त पणा पाता है तथा समुद्घात आश्री सर्व लोक में अपर्याप्त कहा ।

प्रश्नोत्तर १८७

प्रश्न–पहिली नरक १७८००० योजन की पोलार कही वह कैसे ?

उत्तर–श्री " पन्नवणाजी " सूत्र में पोलार कही परन्तु ऐसा कहा है कि-पहिली नरक का पिंड १८०००० योजन का है उसमें एक हजार योजन ऊपर और एक हजार योजन नीचे छोडिये, बीच में १७८००० योजन में पाथडा तथा आंतरा में भवनपति देवता रहते हैं ऐसा कहा है। परन्तु सर्व पोलार है ऐसा नहीं कहा है। परन्तु थोकडा वालों ने कहा है उसमें ऐसा सम्भव है कि–बीच २ भाग में थोडी २ पोलार है उस अपेक्षा से कहा समझना। परन्तु पाठ में ऊपर कहै अनुसार है। शाख:-श्री " पन्नवणाजी " सूत्र के दूसरा पद की)

प्रश्नोत्तर १८८

प्रश्न—किसी वक्त अढाई द्वीप में २४ मुहूर्त का विरह पडे या कि नहीं ?

उत्तर—समूर्छिम मनुष्य को २४ मुहूर्त्त को विरह है तो सम काले आयु पूरे है तब विरह पड़ते हैं। दूसरे कमवाले ऐसे कहते हैं कि-दूसरी गति में से कोई जीव आकर उत्पन्न नहीं होता उस आश्री विरह पड़ता है। सर्व-था जो २४ मुहूर्त्त तक निरलेप हो तो श्री "पन्नवणा जी" सूत्र के पद ३४ वां ९८ बोल का अल्पा बहुत्व में २४ वां बोल को बाधक लगे। इस लिये दूसरा मत सर्वथा अंगत है। पीछे तत्वार्थ केवली गम्य।

प्रश्नोत्तर १८९

प्रश्न—बादर निगोद से पृथ्वी का जीव ज्यादा कहा वह कैसे ?

उत्तर—निगोद का शरीर असंख्याता है। परन्तु जीव तो अनंत है। श्री "पन्नवणाजी" सूत्र के पद ४ में कहा है कि-वह शरीर समझना। इसलिये पृथ्वी का जीव विशेषीया लेना।

प्रश्नोत्तर १९०

प्रश्न—तिर्यंच जलचर को जल में अक्षरादिक संज्ञा से तथा ज्योतिषी का विमान देखने से जाति स्मरेण ज्ञान उत्पन्न होवे जब नियाणा करें (शास्त्र- श्री " पन्नावणाजी " सूत्र के पद ४ में) जब श्रावक का व्रत पाले तथा जल में रहा हुआ श्री सामायिक, पोषा कैसे करें ?

उत्तर—तिर्यंच जलचर को जल में रहना यह तो उनका जन्म समुद्र में है और योनि भी यह ही है। परन्तु सामायिक, पोषा में अपने शरीर के कारण बिना हिलाते नहीं और शरीर का चपलपणा बन्ध करे। द्रष्टांत--किसी पुरुष ने गडे में बैठा ही एकासणु किया करें, परन्तु गडे का स्वभाव फिरने का है तो गडा फिरता आप ही रहा किन्तु आप एक आसन रूप रहा उस द्रष्टांत से जल में मच्छ आदि का रहना यह तो योनि रूप है। परन्तु सामायिक पोषा के अवसरे चपलपणा रुके प्रवर्ते इत्यर्थ।

प्रश्नोत्तर १९१

प्रश्न—ज्ञान, दर्शन और चारित्र यह तीनों की पर्याय कैसे समझनी चाहिये ?

उत्तर—पर्याय का फिरने का स्वभाव है और वह वस्तु अरूपी है और पर्याय अर्थात् ऋद्धि अथवा शक्ति ज्ञान से एक वस्तु जाने और उसी वस्तु को फिर दूसरे रूप में जाने उस अपेक्षा से ज्ञान की पर्याय पलटी हुई समझना चाहिये। एक वस्तु को दर्शन कर के देखे उसको ही दूसरी वार दूसरे रूप में देखे उसके अपेक्षा से दर्शन की पर्याय पलटी हुई समझे। श्री सामायिक चारित्र वाला सूक्ष्म संपराय चारित्र पर चढे उसके पश्चात् श्री सामायिक चारित्र की पर्याय पलटी और सूक्ष्म संपराय की नई पर्याय में प्रवेश किया। इस अपेक्षा से चारित्र की पर्याय जानना (शास्त्र श्री " पन्नवणा जी " सूत्र के पदपूरां तथा श्री " भगवती जी " सूत्र की)

प्रश्नोत्तर १९२

प्रश्न—बादर पानी तथा बादर वनस्पति कहां तक है ?

उत्तर—श्री " पन्नवणा जी " सूत्र के पद २ में कहा है कि-उर्ध लोक में १२२ में कल्प तक विमान के विषय विमान वल्या के विषय विमान पाथडा के विषय अप तथा वनस्पति कही है।

प्रश्नोत्तर १९३

प्रश्न—जीव विग्रह गति से वर्तता मन रहित है तो उनको संज्ञी कैसे कहा है ?

उत्तर—जीव विग्रह गति वर्तता संज्ञी का आयु वेदता है इस कारण से संज्ञी कहा है।

प्रश्नोत्तर १९४

प्रश्न—नारकी में तथा देवता में संज्ञी का अपर्याप्ता और पर्याप्ता है और पहिली नरक में तथा भवनपति,

वाणव्यन्तर में जीव के तीन भेद कहा है उसका क्या कारण ?

उत्तर—असंज्ञी जीव मर के नरक में तथा भवनपति वाणव्यन्तरपणे उत्पन्न होता है। इससे असंज्ञी कहा है जहां तक भवविज्ञान नहीं उपजे तथा अपर्याप्तापणा है वहां तक असंज्ञीपणा कहा है। परन्तु जीव का भेद तेरहवां है किन्तु चउदहवां नहीं (बारह) श्री "पन्नवणाजी" सूत्र पद छट्ठा की भोलामणी में मर के उपजे उसको संज्ञी कहा है

प्रश्नोत्तर ११५

प्रश्न—सचित्त अचित्त और मिश्र योनि किस को कहना ?

उत्तर—जो जीव के उत्पन्न होने का स्थान है वह सचित्त हो तथा वह जीव सचित्त का आहार लेवे उसको सचित्त योनि कहते हैं ऐसे ही अचित्त और मिश्र समझना।

अत्रशंका—मनुष्य के मिश्र योनि कही तो जीव उत्पन्न होना शुक्र शरीर का अचित मुद्गल का आहार करते हैं तो उसको मिश्र किस रीति से समझना चाहिये ?

तत्रोतर—स्त्री सचित्त स्थान है और आहार अचित्त है। इसलिये मिश्र ही समझना (शास्त्र-श्री "पन्नवणा जी" सूत्र पद ९ में)

प्रश्नोतर १९६

प्रश्न—शीत, उष्ण, शीतोष्ण योनि किस को कहनी उचित्त है ?

उत्तर—उत्पन्न होने का स्थान ठंडा और आहार का पुदगल भी ठंडा उसको शीत योनि कहनी। ऐसे ही उष्ण, शीतोष्ण योनि समझनी (शास्त्र: श्री "पन्नवणाजी" सूत्र पद ९ में)

प्रश्नोत्तर १९७

प्रश्न—भाषा का पुद्गल लोकांत कदाचित् स्पर्श करें परन्तु थोडी दूरवाला तथा ज्यादा दूरवाला मनुष्य नहीं सुने किन्तु वह किस कारण से ?

उत्तर—सूक्ष्म पुद्गल लोकांत तक पहुंचते । वह सूक्ष्म श्रोतेन्द्रिय अग्राह्य है । इस कारण से नहीं सुनते हैं (प्रमाण—श्री पन्नवणा जी " सूत्र के ग्यारहवें पद में कहा है)

प्रश्नोत्तर १९८

प्रश्न—एक जीव सर्व संसार के बीच में विजय आदि चार विमान में कितनी बार जावें ?

उत्तर—दो वक्त जाकर पीछे अवश्य मोक्ष में जावे और सर्वार्थ सिद्ध विमान के विषय एक वक्त जाकर पीछे अवश्य मोक्ष में जावे (प्रमाण—श्री " पन्नवणा जी " सूत्र के पद १५ में कहा है)

प्रश्नोत्तर १९९

प्रश्न—विजय आदि चार विमान का देवता कितना भव करें ?

उत्तर—श्री " भगवती जी " सूत्र के श० ८ उ० ९ में कहा है कि-सर्व बंधका उत्कृष्ट असंख्याता सागर का तो उस अपेक्षा से विजयादि विमान का देवता संख्याता भव करें तथा श्री " उत्तराध्ययन जी " सूत्र के ३६ वां की गाथा २५ वीं विजयादि विमान के देवता का आंतरा संख्याता सागर का पडता है। उस अपेक्षा से तथा विजयादिक विमान के विषय गये हुए जीव संख्याती इन्द्रिय करें तो कितेनेक संख्यात भव करने को कहते हैं। कोई ७--८ भव करने का कहते है। कोई तीन भव करने को कहते है। परन्तु ज्यादा से ७--८ भव करने का संभव है। पीछे तत्वार्थ केवली गम्य (शाखः श्री " पन्नवणा जी " सूत्र के पद १५ वें इन्द्रिय पद में कहा है)

प्रश्नोत्तर २००

प्रश्न—सर्वार्थ सिद्ध विमान का देवता कितना भव करें ?

उत्तर—मुक्त नर हुए और वहाँ से पर के मनुष्य होकर मनुष्य लोक में आवे (शास्त्र श्री "पन्नवणा जी" सूत्र के पद १५)

प्रश्नोत्तर २०१

प्रश्न—श्री " पन्नवणा जी " सूत्र के पद १५ में पांच इन्द्रिय का विषय कहा है उसमें घ्राणेन्द्रिय का विषय ९ योजन का है और " राय प्रसेणी " सूत्र में देवता को ५०० योजन तक गंध आवे ऐसा कहा है सो किस न्याय से ?

उत्तर—पांच इन्द्रिय का विषय की बात मनुष्य तिर्यंच का उदारीक शरीर आश्री बताया है। परन्तु देवता के वैक्रेय शरीर आश्री नहीं समझें !

प्रश्नोत्तर २०२

प्रश्न—श्री " पन्नवणाजी " सूत्र के पद १७ उ० ४ में कहा है कि-कृष्ण लेश्या २-३-४ ज्ञान पावे तो कृष्ण

लेश्या में मनः पर्यवज्ञान किस रीति से पावे ?

उत्तर--कोई जीव अप्रमतपणे सातवें गुणस्थान में जाकर मनः पर्यवज्ञान प्राप्ति करके छट्टे गुणस्थान में आकर स्थिर रहे और वहाँ छट्ठे गुणस्थान में रहा हुआ जीव कृष्ण लेश्या का प्रणाम प्रगम्या। परन्तु मनः पर्यवज्ञान स्थित रहा है। इसलिए कृष्ण लेश्या में चार ज्ञान पाना सम्भव है।

प्रश्नोतर २०३

प्रश्न-श्री तीर्थंकर के बिना दूसरा जीव देवलोक से अवधिज्ञान लेकर आवे या कि नहीं ?

उत्तर--आता है (शास्त्रः श्री " नन्दीजी " सूत्र की तथा कायस्थिति की और श्री " जीवाभिगमजी " सूत्र आदि में कहा है) अवधिज्ञान की स्थिति ६६ सागर झाझेरी कही है। उस अपेक्षा से अवधिज्ञान दूसरे जीव की श्री तीर्थंकर बिना लेकर आता है (शास्त्रः श्री " पन्नवणाजी " सूत्र के पद १८) पीछे तत्त्वार्थ केवली गम्य।

प्रश्नोत्तर २०६

प्रश्न---ज्ञानी का ज्ञान तथा सम्यकत्व कितने काल तक रहें ?

उत्तर---जघन्य अन्तर मुहूर्त उत्कृष्टि ६६ सागर रहते हैं पीछे अवश्य सम्यकत्व को तथा ज्ञान को छोडे यह क्षयोपशम सम्यकत्वका पडवाई आश्रो जानना (शाखः श्री " जीवाभिगम जी " सूत्र के तथा श्री " पन्नवणाजी " सूत्र के पद १८)

प्रश्नोत्तर २०७

प्रश्न---द्रव्य प्राण किस को कहना और भाव प्राण किस को कहना ?

उत्तर--पांच इन्द्रिय, तीन बल, श्वासोश्वास और आयु यह १० द्रव्य प्राण कहा है। ज्ञान और प्रणाम को भाव प्राण कहा है (शाखः श्री " पन्नवणाजी " सूत्र के पद १८ वें वृति में कहा है)

प्रश्नोत्तर २०८

प्रश्न—मन योग की स्थिति कितनी ?

उत्तर—जघन्य एक समय की उत्कृष्टि ८ समय की स्थिति है श्री " पन्नवणाजी " सूत्र के पद १८ वें में अन्तर मुहूर्त कहा यह २ समय से २ घड़ी तक अन्तर मुहूर्त समझना। परन्तु यहां छोटा अन्तर मुहूर्त समझना।

प्रश्नोत्तर २०९

प्रश्न—बादर निगोद की काय स्थिति कितनी ?

उत्तर—७० कोड़ा क्रोड़ सागर की (शास्त्र श्री " पन्नवणाजी " सूत्र के पद १८ वें में)

प्रश्नोत्तर २१०

प्रश्न—मिथ्यात्व का पद पदवाई किस को समझना ?

उत्तर---सम्यकत्वी जीव समझना (शाखः श्री " पन्नवणाजी " सूत्र के पद १८ वें में)

प्रश्नोत्तर २११

प्रश्न---मनः पर्यव ज्ञानवाळा पड कर पीछे मनः पर्यव ज्ञान कब पावे ?

उत्तर--जघन्य अन्तर मुहूर्त और उत्कृष्ट अनन्तकाल से पावे (अर्ध पुदगल से) ऐसे ही अवधिज्ञान का समझना (शाखः-श्री " पन्नवणाजी " सूत्र के पद १८ वां की)

प्रश्नोत्तर २१२

प्रश्न--श्री " पन्नवणा जी " सूत्र के पद २० में ऐसा कहा है कि--किल्विषी जघन्य पहिले देवलोक जावे और उत्कृष्ट लन्तक देवलोक तक जावे और श्री " भगवती जी " सूत्र के श० १ उ० २ में ऐसा कहा है कि--जघन्य भवनपति में और उत्कृष्ट लन्तक देवलोक में जावे तो यहां इन बोलों में भिन्नता किस रीति से समझना ?

प्रश्नोत्तर २१२

प्रश्न–२४ दंडक में मरणांतिक तेजस समुदघात गति आश्री कहते हैं और तीसरा देवलोक की पूछा की वहां तेजस समुद्घात जाडपणे और चौडापणे अपना शरीर प्रमाण से कहा और लम्बा पणे नीचा अधोगामिनी दूसरी तक और तिरछा स्वयँभूरमण समुद्र तक और उर्द्धलोक बारहवें देवलोक तक समुदघात करनी कही तो बारहवां देवलोक वाला मर के तीसरा देवलोक वाला नहीं जाता है, तो उर्ध्वलोक से किस कारण से तेजस समुदघात करनी कही ?

उत्तर–तीसरे देवलोक का देवता अन्त समय तेजस समुदघात को करट बारहवां देवलोक तक करते हैं और वहां से पीछे जिस गति में जाना हो वहां जाकर उत्पन्न होता है। परन्तु सर्व करें ऐसा नहीं। कोई जीव आश्री समझना। दूसरे मतवाले ऐसा कहते हैं कि—कोइ मित्र देवी के साथ वहां गया हुआ वहां से काल करें उसे आश्री समझे। दूसरे मतवालों का अर्थ ठीक समझने में आता है। पीछे तत्त्वार्थ केवलीगम्य,.(शाख:-श्री "पन्नवणाजी " सूत्र के पद २१ में।

प्रश्नोत्तर २१४

प्रश्न—दर्शनावरणीय कर्म के उदय से कौनसा कर्म भोगवे ?

उत्तर—दर्शनमोहनीय कर्म भोगता है (शास्त्र: श्री " पन्नवणाजी " सूत्र के पद २३ में)

प्रश्नोत्तर २१५

प्रश्न—श्री उत्कृष्ट ३३ सागर के स्थिति के जी अनुत्तर विमान में उपजे या कि नहीं ?

उत्तर—उपजे, (शास्त्र: श्री " पन्नवणाजी " सूत्र के पद २३ उ० २ में कहा है कि—नारकी, तिर्यंच, तिर्यंचणी, मनुष्य मनुष्यणी, देवता देवी, यह सात में उत्कृष्ट स्थिति कौन २ बांधे ?

प्रश्नोत्तरः—नारकी, तिर्यंचणी, देवता देवी, उत्कृष्ट आयु नहीं बांधते और बाकी के मनुष्य, मनुष्यणी, तिर्यंच यह ३ बांधते हैं वह प्राणी स्त्री भी अनुत्तर विमान में जाती है (शास्त्र: श्री " पन्नवणाजी " सूत्र के पद २३)

प्रश्नोत्तर २१६

प्रश्न–छट्ठे गुणस्थान में पचीस क्रिया में से कितनी क्रिया लगे ?

उत्तर—एकीस क्रिया लगे मिथ्यात्व अप्रत्याख्यान परिग्रहिक इरियावही यह चार क्रिया छोडकर २१ क्रिया लगे और थोकडा में २ क्रिया कही उसका खुलासा यह है कि–आरंभिया क्रिया में सर्व क्रिया समाती है। इससे २ क्रिया कही है, (शास्त्र: श्री: " भगवतीजी " सूत्र तथा श्री पन्नवणाजी " सूत्र के पद २३ में क्रियापद कही है)

प्रश्नोत्तर २१७

प्रश्न–सागारो वउता का अन्तर जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर मुहूर्त का कौनसी अपेक्षा से समझना ?

उत्तर–चौथे गुणस्थान में आता है कि–दर्शन मोहनीय की प्रकृति खपाने में तीव्र उपयोग दर्शन का है उस

प्रश्नोत्तर २१९

प्रश्न--पचेन्द्रिय तिर्यंच को क्षेत्र से अवधिज्ञान कितना हो ?

उत्तर-जघन्य अंगुल का असंख्याता वां भाग उत्कृष्ट असंख्याता द्वीप समुद्र देखे (शास्त्र: श्री "पन्नवणा जी" सूत्र के पद ३३ में)

प्रश्नोत्तर २२०

प्रश्न—मनुष्य क्षेत्र प्रमाण अवधिज्ञान से कितना देखे ?

उत्तर—जघन्य अंगुल का असंख्याता भाग उत्कृष्ट लोक प्रमाण अलोक में असंख्याता खंड अवधिज्ञान से जाने (शास्त्र:-श्री " पन्नवणा जी " सूत्र के पद ३३ में)

प्रश्नोत्तर २२१

प्रश्न—भवनपति का देवता क्षेत्र प्रमाण अवधिज्ञान से कितना देखे ?

उत्तर—जघन्य २५ योजन उत्कृष्ट असंख्याता द्वीप समुद्र जाने (शास्त्र:-श्री " पन्नवणा जी " सूत्र के पद ३३ में)

प्रश्नोत्तर २२२

प्रश्न— असुर कुमार छोड़ के नवनीकाय का देवता तथा वाणव्यंतर देवता अवधिज्ञान से कितना देखे ?.

उत्तर—जघन्य २५ योजन और उत्कृष्ट संख्याता द्वीप समुद्र देखे, पल्योपम का आयु इस कारण से (शास्त्र-श्री " पन्नवणा जी " सूत्र के पद ३३ में)

प्रश्नोत्तर २२३

प्रश्न—ज्योतिषी का देवता क्षेत्र प्रमाण अवधिज्ञान से कितना देखे ?

उतर—जघन्य संख्याता द्वीप समुद्र देखे उत्कृष्ट संख्याता द्वीप समुद्र देखे (शास्त्र श्री " पन्नवणा जी " सूत्र के पद ३३ में)

प्रश्नोत्तर २२४

प्रश्न—वैमानिक देवता का जघन्य अवधि अंगुल का असंख्यातवें भाग कहा वह कैसे समझना ? कारण कि भवनपति तथा वाणव्यंतर जघन्य २५ योजन देखते हैं तो भवनपति से वैमानिक कम देखे तो यह बात कैसे मिले ?

उतर—भवनपति, वाणव्यंतर देखे वह स्थूल बादर वस्तु २५ योजन में देखे। परन्तु सूक्ष्म न देखे और वैमानिक तो सूक्ष्म से सूक्ष्म अपना जन्म स्थानक भी जाने तथा बारीक से बारीक पदार्थ जान सकता है। इसमें विशेष समझना (शास्त्र--श्री " पन्नवणा जी " सूत्र के पद ३३ में)

प्रश्नोत्तर २२५

प्रश्न—पहिला देवलोक में अपरिग्रहित देवी का विमान कितना है ?

उत्तर—६ लाख है यह देवीयों के ऊपर मालिक नहीं है। स्वइच्छाचारी है ३–५–७–९—११ वां देवलोक के देवता के भोग में आती है।

प्रश्नोत्तर २२६

प्रश्न—दूसरे देवलोक में अपरिग्रहित देवी का विमान कितना है ?

उत्तर—४ लाख है यह भी ऊपर अनुसारहै परन्तु विशेषता यह हैकि–४-६-८-१०-१२इतना देवलोक का देवता का भोग में आती है

प्रश्नोत्तर २२७

प्रश्न—देवांगना कहां तक ऊंची जाती है और किस रीति से भोग भोगती है ?

उत्तर—भवनपतिवाणव्यंतर, ज्योतिषी पहिला दूसरा देवलोक का देवता काया से मनुष्य की तरह भोग करते हैं। परन्तु मनुष्य की स्त्री के साथ भोग करने से वीर्य खरे अर्थात् काम से निवृत्ति पावे और देवता का वीर्य हो परन्तु गर्भ धारण वीर्य न हो और उसका वीर्य देवी के ५ इन्द्रिय पणे प्रगमे (शास्त्र:—श्री "पन्नवणा जी सूत्र के पद ३४ में) तीसरा चौथा देवलोक का देवता मुंह, हाथ, नख, स्तन आदि का स्पर्श भोग करके सुख" पावे पाचवां छट्ठा देवलोक का देवता देवांगना का रूप देख कर संभोग सुख पावे ७–८ देवलोक का देवता देवी का गीत हास्य का शब्द सुनकर संभोग सुख पावे और ९–१०–११–१२ यह चार देवलोक का देवता अपना स्थानक पर रहा हुआ जो देवी को जो मनमें चिंतवना करें तिवारे वह देवी भी अपने स्थानक पर बैठी हुई भली बुरी काम चेष्टा मन में धरती भोग के लिये सावधान हो तब वह देवता वहां ही रहा हुआ मन संकल्प कर जलदी सुख पावे नव-ग्रैवेयक तथा श्री अनुत्तर विमान का वासी देवताओं को उपशांत विषय विकार होता है। इससे वह किसी रीति से देवियों को नहीं भोगते हैं तथापि उनको दूसरे देवताओं से सुख अनंत गुणा है। सुधर्म, ईशान देवलोक की

देवीयों को कौन से देवलोकवालों के कितने आयुवाली भोग में आवें उन देवताओं को भोग की इच्छा कैसे पूर्ण हो उसका यंत्र लिखते हैं।

पहिले देवलोक की अपरिग्रहित देवी कौन २ से देवलोक तक काम आती है।

उसका यंत्र नीचे अनुसार

देवी की स्थिति	भोग कौन सी इन्द्रिय से	देवलोक का देवता
१ पल्य की	काया	१
१ पल्य से १ समय अधिक १० पल्य तक	स्पर्श	३
१० पल्य १ समय अधिक से २० पल्य तक	शब्द	५
२० पल्य १ समय अधिक से ३० पल्य तक	रूप	७

३० पल्य १ समय अधिक से ४० पल्य तक — मन — ९

४० पल्य १ समय अधिक से ५० पल्य तक — मन — ११

दूसरे देवलोक की अपरिग्रहित देवी कौन २ से देवलोक तक काम आती है। उसका यंत्र

देवी की स्थिति	भोग कौनसी इन्द्रिय से	देवलोक का देवता
जघन्य स्थिति की	काम	२
ज० स्थिति १ समय अधिक से १५ पल्य तक की	स्पर्श	४
१५ पल्य १ समय अधिक से २५ पल्य तक की	शब्द	६
२५ पल्य १ समय अधिक से ३५ पल्य तक की	रूप	८
३५ पल्य १ समय अधिक से ४५ पल्य तक की	मन	१०
४५ पल्य १ समय अधिक से ५५ पल्य तक की	मन	१२

(शास्त्रः–श्री " पन्नवणा जी " सूत्र के पद ३४)

सुधर्म देवलोक की देवी का गमना गमन ३-५-७ देवलोक तक जावे।

ईशान देवलोक की देवी का गमना गमन ४-६-८ देवलोक तक जावे।

(शास्त्रः-श्री " ठाणांगजी " के स्थान ५ उ० १ पांच प्रकार की परिचारणा कही है)

प्रश्नोत्तर २२८

प्रश्न–वैमानिक देवता, देवी ऊन्ची अपनी ध्वजा तक देखते हैं तो तीसरे देवलोक से बारहवें देवलोक तक की देवीयों पहिले दूसरे देवलोक में है तो वहां का देवता को देवी की इच्छा हो तो पहिले दूसरे देवलोक की देवियों कैसे जाने कि—मुझे बुलाते हैं इससे मैं वहां जाऊं और वहां किस रीति से जा सके ?

उत्तर-आसन कंपता है अर्थात् अङ्ग फरकने से जानती है कि—मुझे ऊपर का देवता याद करते हैं जब आप उत्तर वैक्रिय शरीर बना करें तयार हो तब ऊपर का देवता वहां बैठा हुआ ही खींच लेते हैं।

अत्रशंकाः-वहां बैठे कैसे देवी को खींच लेवे तथा दूर रहे वीर्य का (पुदगल देवी कैसे) ग्रहण करें ?

तत्रोत्तर-जैसे नागर बेल की बेल पर्वत में उत्पन्न होती है और वहाँ उनका मालिक सवेरे पान तोड कर छावडा में भर के परदेश हजार कोस ऊपर भेजे अब वह छावडा हजार कोस आया तदापि पान तो हरा बना रहता है और उस में एक भी खंडित नहीं होता है तो वह शक्ति वेल की है क्योंकि बेल का पुदगलों यहां आता है और पान में प्रक्षेपाय होता है। इससे पान हरा रहता है। परन्तु सत्ता वेल की है। ऐसे ही ऊपर का चार देवलोक का देवता का वीर्य का पुदगल यहां ही बैठी हुई देवी बेल के पान के न्याय से ग्रहण करती हैं कि पान के अनुसार समझे वह पान वेल से दूर हजार कोस आया है उस वक्त उस बेल को एक में से कोई मनुष्य निकाल

दे तो उस बेल का प्रभाव से आया हुआ छाबडे में एक भी पान अच्छा हरा नहीं निकले और टुकड़ा टुकड़ा हो जावें। यह गुण किस का है? उस बेल को है। हजार कोस से ऊपर बेल की शक्ति से पान पहुंच गया इस न्याय से देवी को ऊपर का देवता खेंच लेते हैं। इस से बेल का न्याय बराबर समझना चाहिये।

प्रश्नोत्तर २२९

प्रश्न—मनुष्य पंचेन्द्रिय के शरीर में चौदह स्थानक में समूर्छीम जीव उत्पन्न होता है। तो तिर्यंच पंचेन्द्रिय के शरीर में कैसे नहीं उपजे?

उत्तर—तिर्यंच के मल मूत्रादिक में तिर्यंच समूर्छिम जीव उत्पन्न होता है। ऐसा श्री "पन्नवणा जी" सूत्र वगैरह में कहा है। परन्तु उस स्थान में मनुष्य समूर्छिम न उत्पन्न हो।

अत्रशंका—मनुष्य की अशुचि में मनुष्य उत्पन्न होता है और तिर्यंच की अशुचि में तिर्यंच उत्पन्न होता है (समाधान:-श्री "पन्नवणाजी" सूत्र के प्रथम पद में कहा है कि—अश्व यो पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच समूर्छिम घोडा की लीद वगैरह की अशुचि में उपजता है। ऐसे ही सर्व तिर्यंच संबंधी अशुचि में तिर्यंच समूर्छिम कीडाओं वगैरह अपने स्थान में उत्पन्न होता है और वह बहुत वर्षों तक जीता है। परन्तु मनुष्य समूर्छिम नहीं उत्पन्न होने का कारण यह कि—मनुष्य संबन्धी चौदह स्थानक है वह रस सहित और कोमल हैं। इससे उसमें उपजता है और तिर्यंच में मनुष्य उत्पन्न नहीं होने का कारण यह कि वह स्थान बहुत कठिन स्पर्श वाला है। इस लिये अपने २ स्थान में समझना चाहिये। न्याय गोबर का तीक्ष्ण स्पर्श ऐसा है कि—सचित पानी में वह पदार्थ डालने से पानी शीघ्र अचित कर देता है ऐसे ही तिर्यंच की अशुचि का स्पर्श कठिन है। इस कारण से उस स्थान में मनुष्य समूर्छिम नहीं होते है। परन्तु स्वजाति अर्थात् तिर्यंच की अशुचि में तिर्यंच होता है और मनुष्य की अशुचि में मनुष्य समूर्छिम होता है।

प्रश्नोत्तर २३०

प्रश्न—लोक में सर्व परमाणु हैं उसमें चार स्पर्श कहा है वह २ प्रदेशी से यावत् असंख प्रदेशी होते हैं तो भी चार स्पर्शी हैं तो पुदगल में आठ स्पर्श श्री जिनराज देव ने किस न्याय से कहा ?

उत्तर—सर्व पुदगल चार स्पर्शी हैं। परन्तु बहुत पुदगल के संयोग से चार स्पर्श उत्पन्न होता है जैसे कि—बहुत पुदगल मिला उसमें ऊंची नीची श्रेणी रूप रहे हैं तो उनका स्पर्श खरखरा लगे तो उसकी अपेक्षा से खरखरा उत्पन्न हुआ। ऐसे ही समान सम श्रेणी होने से सुंहाले लगे, ऐसे ही ज्यादा की अपेक्षा से भारी, हलका स्पर्श पाता है। इस न्याय से चार स्पर्श संयोग से उत्पन्न होता है। परन्तु शाश्वत रूप से तो चार ही है (शास्त्र:— श्री "पन्नवणा जी" सूत्र की)

प्रश्नोत्तर २३१

प्रश्न—प्रदेश और परमाणु यह दो निर्विभाग रूप हैं तो दोनों में विशेषता क्या समझी जावे ?

उत्तर—जो स्कंध प्रतिबन्ध निर्विभाग का चरमांत वह प्रदेश और एकाकी विकलपीत स्कंध परिणाम रहित एसा जो लोक के विषे अलग २ वर्तते हैं वह प्रमाणु जानना। (शाखः—श्री " पन्नवणाजी " सूत्र की)

प्रश्नोत्तर २३२

प्रश्न—श्री केवली महाराज समुद्घात करते हैं वह करने से होती है कि-स्वभाव से ?

उत्तर—स्वभाव से ही होती है कारण कि-करें तो असंख्याता समय निकल जावे और यह तो आठ समय में बन्ध हो जाती है। तेरहवां गुणस्थान में वेदनीय कर्म की उदीरणा नहीं तो उदीरणा किये विना कैसे करें ! इस लिये न्याय देखता श्री केवली समुद्घात स्वभाव से ही होती है (शाखः—श्री " पन्नवणाजी " सूत्र की)

प्रश्नोत्तर २३३

प्रश्न—निगोद का जीव एक श्वासो श्वास में उत्कृष्ट १७॥) भव करते हैं तो एक श्वासोश्वास में कितना काल जाने ?

उत्तर—असंख्याता समय का श्वास और संख्याता समय का उश्वास समझना और २४८० आवलिका में एक श्वास, उश्वास समझना। और इतनी आवलिका में १७॥) भव निगोद का जीव करते हैं (शास्त्रः—श्री "पन्नवणाजी" सूत्र की)

प्रश्नोत्तर २३४

प्रश्न—क्षुल्लक भव किसको कहना चाहिये ?

उत्तर—२५६ आवलिका की स्थितिवाले जीव को क्षुल्लक भव श्री जिनराज देव ने कहा है (श्री "पन्नवणाजी" सूत्र की)

प्रश्नोत्तर २३५

प्रश्न–श्री " पन्नवणाजी " सूत्र में शातावेदनीय कर्म की जघन्य स्थिति १२ मुहूर्त की कही और श्री " उत-राध्ययन जी " सूत्र में अंतर मुहूर्त की कही वह किस रीति से कही ?

उत्तर---श्री " पन्नवणाजी " सूत्र में १२ मुहूर्त की स्थिति कही है वह सँपराय बन्ध की कही है और श्री " उत्तराध्ययन जी " सूत्र में अंतर मुहूर्त की कही वह इरियावही बन्ध आश्री जघन्य उत्कृष्टि २ समय की कही वह जघन्य अंतर मुहूर्त २ समय का समझें।

प्रश्नोत्तर २३६

प्रश्न---एक जीव सर्व संसार में आहारिक शरीर कितने वार करें ?

उत्तर--चार वार करें। नारकी के विषय अतीत अर्थात् पूर्व आहारिक समुद्घात कितनी करी हुई हैं तिवारे श्री " भगवान् महावीर स्वामी जी " ने कहा कि–किसी ने करी है, किसी ने ना करी है और जघन्य तो १-२-३

उत्कृष्टि तीन वार कही है। ऐसे ही मनुष्य छोड़ के २३ दंडक के विषय में कहा है और मनुष्य के पीछे वध उत्कृष्टि आहारिक समुद्घात चार वार करे और चार वार अवश्य ही मोक्ष में जावें (शास्त्र—श्री "पन्नवणाजी" सूत्र के पद ३६ में)

प्रश्नोत्तर २३७

प्रश्न—चौदह पूर्व का पढ़ा हुआ नरक में जावे या कि नहीं ?

उत्तर—संपूर्ण चौदह पूर्व का पढ़ा हुआ नरक में नहीं जाता है। किंचित् कमवाला जाता है (शास्त्र—श्री "पन्नवणाजी" सूत्र के पद ३६ वाली वृत्ति की)

प्रश्नोत्तर २३८

प्रश्न—श्री केवली महाराज समुद्घात करते हैं। वह थोड़ी स्थितिवाला, केवली समुद्घात करें या बहुत काल की स्थिति वाला श्री केवली महाराज केवल समुद्घात करें ?

उत्तर--शेष में ६ मास आयु बाकी रहें तब केवल उत्पन्न हुआ हो वह केवली उस वक्त सदृश कर्म को करने के लिये केवल समुदघात करते हैं। परन्तु वहुत स्थितिवाला नहीं करें ऐसा श्री " पन्नवणाजी " सूत्र के पद ३६ वां की टीका में कहा है। पीछे तत्वार्थ केवली गम्य।

प्रश्नोत्तर २३९

प्रश्न--श्री ' जंबुद्वीप पन्नति " सूत्र में कहा है कि--जघन्य दो तीर्थंकर का जन्म महोत्सव हो ओर उत्कृष्ट चार श्री तीर्थंकर का जन्म महोत्सव हो ऐसा कहा यह कैसे समझे ?

उत्तर--श्री "जंबुद्वीप पन्नति" सूत्रमें जघन्य दो तीर्थंकर का जन्म महोत्सव हो वह एक भरत क्षेत्र में और एक ईरवर्त क्षेत्र में समझें और चार का जन्म हो तो श्री महाविदेह क्षेत्र आश्री जानना।

अत्रशंका—कोई ऐसा कहै कि--एक भरतक्षेत्र में और एक ईरवर्त क्षेत्र में और २ महाविदेह क्षेत्र में ऐसे

चार तीर्थंकर का जन्म महोत्सव हो कि नहीं ?

उत्तर:—इस प्रमाणसे न हो कारण कि-भरत ईरवर्त में जन्म हो तब महाविदेह क्षेत्र में दिन हो और महाविदेह क्षेत्र में जन्म हो तब भरत ईरवर्त क्षेत्र में दिन हो इससे यह प्रमाण से जन्म न हो कैसे कि-उत्तम पुरुष का जन्म रात्रि के समय हो परन्तु दिन में नहीं हो इस लिये दो का जन्म महोत्सव भरत ईरवर्त क्षेत्र में जानना और चार का महाविदेह क्षेत्र में जानना। (शाख:-श्री " जंबुद्वीप पन्नति " सूत्र की)

प्रश्नोत्तर २४०

प्रश्न—कई एक लोक ऐसा कहते हैं कि-श्री तीर्थंकर महाराज के जन्म समय "हरण गवेषी" देवता श्री इन्द्र महाराज के हुकम से सुघोषा घंटा बजा के पीछे सर्व विमानों में आप फिरके खबर देता है ऐसे प्ररूपण करते हैं वह कैसे?

उत्तर—श्री " जंबुद्वीप पन्नति " में कहा है कि-सुघोषा घंटा बजा के पीछे सर्व विमानों में कोई खबर नहीं दे।

परन्तु उसी घंटा में मुँह रख के वहां २ देश २ के विषय जोर शब्द करके महोत्सवादिक सर्व कार्य की बात घंटे में कहते हैं (तार की तरह) अर्थात् सर्व देवता अपने २ घंटा मार्फत शब्द सांभल के हर्षयुक्त होके महोत्सवादिक कार्य करने को आते हैं। परन्तु "हरण गवेषी" देवता विमानों में फिर के खबर दें ऐसा नहीं समझे। पीछे तत्वार्थ केवली गम्य (शास्त्रः—श्री " जंबुद्वीप " पन्नति " सूत्र में जन्म अधिकार में)

प्रश्नोत्तर २४१

प्रश्न—देवता, तीर्थंकर महाराज के उत्सव पर आवे तब मूल रूप से आवे किंवा वैक्रेय रूप बनाके आवे ?

उत्तर—मूल रूप से आवे। परन्तु वैक्रेय रूप तथा उत्तर वैक्रेय रूप अर्थात् प्रधान वैक्रेय बना के आवे परन्तु तीर्थंकर महाराज के वक्त जितना देह प्रमाण हो उतना देह प्रमाण बना के आवे कारण कि—नारद ऋषी जी महाविदेह क्षेत्र में गये तब वहाँ के मनुष्यों को आश्चर्य लगा कारण कि-वहाँ के मनुष्य का देह प्रमाण ५०० धनुष का है और नारद ऋषी जी का देह प्रमाण दश धनुष का है। इससे आश्चर्य लगा और श्री " ऋषभदेव भगवान "

के समय ५०० धनुष का देह प्रमाण था तो वही उनके आगे देवता वैक्रेय रूप किये बिना आवे तो वहां के मनुष्यों को आश्चर्य लगे। इससे मूल रूप से आवे। परन्तु उत्तर वैक्रेय रूप बना के आवे। परन्तु मूल रूप वहां रहे। ऐसा अधिकार नहीं और श्री "जंबुद्वीप पन्नति" में हरण गवेषी देवता के अधिकार में कहा है कि—जब श्री इन्द्र महाराज भी तीर्थंकर महाराज का महोत्सव करने को जाते हैं तब पहिले हरण गवेषी देवता ने ३२ लाख विमानों में शब्द किया और कहा कि—श्री तीर्थंकर महाराज का महोत्सव श्री इन्द्र महाराज करने को जाते हैं। इस लिये जिसको आना हो वह चला आवो तब सर्व देवता भी इन्द्र महाराज के पास दाखिल होते हैं। परन्तु कोइ २ मूलरूप छोड़ के आया नहीं। इन्द्र भी उत्तर वैक्रेय रूप बना के पोथा पालक विमान में बैठे। परन्तु मूल रूप छोड़े नहीं तो निश्चय होता है कि—मूल रूप से आते हैं, उसमें शंका नहीं।

प्रश्नोत्तर २४२

प्रश्न—देवता वैक्रेय रूप में से वैक्रेय रूप बना सके कि नहीं?

उत्तर–वैंक्रेय रूप में से वैंकेय रूप करें तब कितने एक ना कहते हैं कि—वैक्रेय रूप में से वैंक्रेय रूप नहो।

उसका उत्तर—अढाई द्वीप में समकाल में जघन्य २० श्री तीर्थंकर महाराज का उत्सव होता है तो श्री शक्रेंद्र महाराज आदि ६४ इन्द्र अपनी २ हद प्रमाण से जम्बुद्वीप में मुल रूप से आवे और बाकी सर्व ठिकाने वैक्रेय रूप बना के भेजें, और वह इन्द्र तीर्थंकर महाराज की माता पास से लेके मेरूपर्वत जाता हुआ बीच में पांचरूप करें तो वैक्रेय रूप में सेवैक्रेयरूपहुआ फिर मेरूपर्वत ऊपर जन्म महोत्सव करना फटकरत्नमय चार बलद वैक्रेयवे हैं। इसलिये वैक्रेय रूप में से वैक्रेय रूप होता है उसमें शंका नहीं (शास्त्रः–श्री "जम्बुद्वीप पन्नति" सूत्र की)

प्रश्नोत्तर २४३

प्रश्न—देवता समवसरण में कितना बडा रूप बना के आवे और भवधारणी शरीर से आवे कि नहीं ?

उत्तर–देवता भव धारणी शरीर से नहीं आवे और जब समवसरण में आना हो तब जिस तीर्थंकर महाराज का समय हो उस समय मनुष्यों के शरीर जितना हो इतना विक्रोवी करके समवसरण में तथा तीर्थंकर के

भगवान के जन्म समय में तथा जिस २ कार्य के लिये आया हो तब इस प्रमाण से आवे और इससे विपरीत रीति से आवे तब आश्चर्य कहा जाता है।

प्रश्नोत्तर २४४

प्रश्न—कौन से देवताओं का आना जाना होता है?

उत्तर—भवनपति से बारहवां देवलोक तक के देवताओं का आना जाना होता है वहां तक ही नौकर चाकर पणा है। ऊपर के देवताओं का आना जाना नहीं है और नौकर चाकरपणा उनको नहीं है। सर्व अहम इन्द्र हैं (साक्षः-श्री "जम्बुद्वीप पन्नति" सूत्र के ६४ इन्द्र आये उसकी)

प्रश्नोत्तर २४५

प्रश्न—पालक विमान एक लाख योजन का है और अरुणोदय समुद्र में एक लाख योजन का दादरा है जो उसमें कैसे बाहिर निकले?

उत्तर-दादरा शास्वत् योजन का है और पालक विमान शास्वत् योजन का लम्बू समान हैं। परन्तु संकोचा जाता है, परन्तु श्री तीर्थंकर महाराज का जन्म नगर में होता है वहां संकोच लेवे हैं (शास्त्रः—श्री " जंबुद्वीप पन्नति " सूत्र की)

प्रश्नोत्तर २४६

प्रश्न- युगलिया को श्री भगवान ने श्री " जम्बुद्वीप पन्नति " सूत्र में भद्रिक कहा है तो देवकुरु का युगलिया किल्विषी में कैसे जावे कारण कि-वहां अवर्णवाद आदि बोलने का कारण नहीं ?

उत्तर-युगलीया की जाति भद्रिक हैं। परन्तु कोई वक्त देवकुरु उत्तर कुरु में भी " जंघाचारादि " मुनि को देख के पूर्व भव के वैर उदय के अवर्णवाद बोले। इससे किल्विषी में उत्पन्न होता है।

प्रश्नोत्तर २४७

प्रश्न—कांगणी रत्न आदि चौदह रत्न शाश्वत् कि कैसे ?

उत्तर—अशाश्वत् है कारण कि—सर्व चक्रवर्ती के समय में उत्पन्न होते हैं फिर कांगणी रत्न से मांडला लिखते हैं तो जो शाश्वत हो तो कैसे समाय ? इससे अशाश्वत हैं और पृथ्वीकाय हैं और चक्रवर्ती उत्पन्न हो तब उपजे और चक्रवर्ती न हो तब भी विनाश पाते हैं (शास्त्र:—श्री " जम्बुद्वीप पन्नत्ती " सूत्र की)

प्रश्नोत्तर २४८

प्रश्न—दक्षिण आदि भरतक्षेत्र में श्री तीर्थंकर देव युगलीया धर्म मिटा के ७२ कला आदि तीन प्रकार का व्यापार पता के कर्म भूमि प्रवर्तावे तो उत्तरार्ध भरतक्षेत्र में तीन प्रकार का व्यापार कौन चलावे ?

उत्तर—क्षेत्र स्वभाव से फलादिक रूप होने से जाति स्वभाव से कर्म भूमिपणा पाता है तथा है अन्यान्तर में ऐसा कहा है कि-श्री तीर्थंकर देव का तथा चक्रवर्ती का पुण्य का योग से तथा क्षेत्र स्वभाव से श्री इन्द्र महाराज के हुक्म से देवता आके उद्घोषणा करके कर्मभूमि प्रवर्ते है। ऐसा श्री " कल्प सूत्र " में तथा श्री " जम्बुद्वीप पन्नत्ति " सूत्र की टीका में कहा है। पीछे तत्त्वार्थ केवलीगम्य।

प्रश्नोत्तर २४९

प्रश्न—चक्रवर्ती के स्त्रियों कितनी समझना चाहिये ?

उतर—६४ हजार स्त्रियों कही है।

अत्रशंकाः—ग्रन्थों में तो १९२ हजार स्त्रियों कही वह कैसे ?

तत्रोतर—श्री " जंवुद्वीप पन्नति " सूत्र में ६४ हजार महिला ऐसा कहा है और ग्रंथीवालों ने १९२ हजार स्त्रियों कही वह एक २ स्त्री के साथ में दो २ वारांगना है इस कारण से कही हैं।

विशेष शंका—ग्रंथवालो कहते हैं कि—वह वारांगना साथ चक्रवर्ती कारण वश संभोग करते हैं। ऐसा कहा उसका कैसे ?

उसका उत्तरः-श्री " समवायांग जी " सूत्र के ५४ में समवायांग जी में ५४ उत्तम पुरुष कहा है तो चक्रवर्ती उत्तम पुरुष हैं तो उत्तम पुरुष पान्नी ग्रहण किया विना भोग भोग वे नहीं कारण कि-लोक विरुद्ध कर्तव्य उत्तम पुरुष करें नहीं। इस लिये चक्रवर्ती वारांगना के साथ भोग भोगवे नहीं।

प्रश्नोत्तर २५०

प्रश्न—तमस गुफा में मांडला ४९ किसते हैं वह किस रीति से ?

उत्तर—एक भीत में २४ और दूसरी भीत में २५ कांगणी रत्न से उत्सेध अंगुल से ५०० धनुष का एक २ मांडला गोलाकार में है मांडले से मांडला योजन का अंतर है गो मूत्र का आकार में लिखते है (शास्त्र—श्री " सेन प्रश्न की तथा श्री " जंबुद्वीप पन्नति " सूत्र की चक्रवर्ती के अधिकार में)

प्रश्नोत्तर २५१

प्रश्न—वनिता नगरी बारह योजन की लंबी और ९ योजन की चौडी कही वह शाश्वत् योजन की कैसे ?

उत्तर—शाश्वत् योजन की है कारण कि श्री " जंबुद्वीप पन्नति " सूत्र में कहा है कि-वैताढ से दक्षिण में ११४-योजन जावे तथा लवण समुद्र से उत्तर में ११४ योजन जावे वहाँ मध्य भाग में वनिता इन्द्र के हुकम को आदेश

सेवतीय हैं तो उस ऊपरसे वनिता का टिकानः शाश्वत् समझा जाता है।

प्रश्नोत्तर २५२

प्रश्न—श्री " जंबुद्वीप पन्नति " सूत्र में कहा है कि चक्रवर्ती का स्कंधावर बारह योजन लंबा और ९ योजन चौडा इतनी जमीन में पडाव करते हैं तो चक्रवर्ती का लश्कर ८४ लाख हाथी, ८४ लाख घोडा, ८४ लाख रथ, ९६ क्रोड पैदल इतना बडा लश्कर इतनी जमीन में कैसे समाय ?

उतर—श्री " जंबुदीप पन्नति " सूत्र में जो कहा है वह सत्य हैं उसका हिसाब चार कोष का योजन है तो १२×४=४८ कोष लंबी जमीन हुई और ९×४=३६ कोष चौडी जमीन हुई ऐसा एक २ कोष का खांडवा कितना हो वह ४८×३६=१७२८ कोष का खांडवा हुआ ऐसा एक २ कोष का धनुष २ हजार धनुष का एक गाऊ लंबा चौडा है २०००×२०००=४०००००० धनुष हुआ। एक घोडा को उत्कृष्ट से उत्कृष्ट चार धनुष जगह चाहिये तो

एक गाऊ का खांडे में दश लाख घोडा समाय तो ८४ लाख घोडा ९ कोष के ९ खांडवे में समाय। इस से तीन गुणी जगह ८४ के लिये चाहिये सो २७ कोष के २७ खांडवा और हाथी के लिये रथ से दूनी जगह तो ५४ कोष का ५४ खांडवा हाथी के लिये, ऐसे सब मिल के कुल ९० खांडवा रथ घोडा हाथी के लिये समजना तो बाकी खांडवा १४१८ खाडवा कोष २ का रहा तो उस जमीन में ९६ क्रोड पैदल यह गणीत प्रमाण से सुखी से समाय। ऐसी ही द्वारिका नगरी में वसी उसी गणित के न्याय से समाती हैं। इससे शास्त्र विरुद्धसमझे नहीं।

प्रश्नोत्तर २५३

प्रश्न—श्री " जंबुद्वीप पन्नति " सूत्र में चक्रवर्ती का बाण ७२ योजन तक ऊंचा जावे ऐसा कहा है तो चुल्लहिमवंत पर्वत के सौ योजन ऊंचा है वहां उनका बाण कैसे पहुंच गया ?

उत्तर—चुल्लहिमवंत देवता का स्थान पर्वत ऊपर है वहां बाण डालता चक्रवर्ती चुल्लहिमवंत पर्वत पास आकर अगम्य लाख योजन की कोशा बनाता है।

अत्रशंकाः--लाख योजन का वैक्रेय शरीर चक्रवर्ती करें तो वह अधिकार कहा है ?

तत्रोत्तरः--श्री " भगवती जी सूत्र " के श० १२ उ० ९ में कहा है कि—नरदेव के वैक्रेय शक्ति ज्यादा है। इस न्याय से रुप बनावे वह भणित चुलहिमवंत पर्वत प्रमाण अंगुल का है और चक्रवर्ती की वैक्रेय शरीर की अवघेणा लाख योजन का उच्छेद अंगुल से है तो यह लाख योजन का हजार योजन का भाग देता श्री भरत महा-राज की काया प्रमाण अंगुल से सौ योजन की हुई तो चुलहिमवंत पर्वत का ऊपर का भाग तथा भरत महाराज को मुख बराबर हुआ और वहां से वाण ऊंचा फेंका जिससे ७२ योजन ऊंचा जाके सभा के बीचोंबीच वाण पडा वह सूत्र विरुद्ध नहीं है।

प्रश्नोत्तर २५४

प्रश्न—श्री " जंबुद्वीप पन्नति " सूत्र में कहा है कि—सकिलावती विजय हजार योजन की ऊंची है तो उस क्षेत्र की नदीयां सीतादा नदी को किस रीति से मिले ? कारण कि-यह नदी ऊंची है और गंगा सिंधु यह दो

नदीयां नीची हैं सो उसका कैसा ?

उत्तर—पानी का नीचे जाने का स्वभाव है। परन्तु न्याय दृष्टि से देखने से ऐसा संभव है कि—जितने ऊंचे से पानी गिरे उतना ही उत्कृष्ट पानी किसी वक्त ऊंचा चढे गंगा प्रपात कुंड तथा सिंधु प्रपात कुण्ड गए दोनों निषेध के नीचे सम भूतल है वहां विजय ऊन्ची नहीं है पीछे प्रदेश २ उतरती है इस कारण से शीतोदा नदी का मिलनी है इसका दाखला यह है कि—जो नल है उसका स्वभाव है कि जितना पानी पहिले ऊंचा चढाया जाय उतना पानी नीचे उतर कर ऊन्चे मजले में चढता है। इस न्याय देखने से उसी प्रमाण से पानी ऊन्चा चढ कर शीतोदा नदी में नदी का मिलना संभव है। पीछे तत्वार्थं केवलीगम्य।

प्रश्नोत्तर २५५

प्रश्न—श्री " जम्बुद्वीप पन्नति " सूत्र में कहा है कि—शीतोदा नदी का पानी लवण समुद्र में ४२००० योजन चल कर और पीछे २ लवण समुद्र में मिला, ऐसा कहा तो लवण समुद्र के किनारे पृथ्वी के पास शीता

शीतोदा नदी मिलती है तो उसका क्या कारण समझना चाहिये ?

उत्तर—नदी के पानी का यह स्वभाव है कि प्रथम तो अतिबल होने से जीव का वर्ण, गंध, रस, स्पर्श और बदलना पणा पाता नहीं है और जब अपना वेग कम पडते हैं तब वर्ण, गंधादिक गुण के बदल देते हैं। इस कारण से शीतोदा नदी बराबर सीधी जाकर पीछे लवण समुद्र में मिले अर्थात खाराश गुण को पाते हैं उस आश्री समझना तथा नदी ५०० योजन ऊन्ची समुद्र में मिले हैं और समुद्र का पानी तो ऊन्चा है नदी नीचे से जाती है तो नीचे मीठा पानी और खारा पानी ऊपर रहता है।

प्रश्नोत्तर २५६

प्रश्न—कितनेक ऐसा प्ररूपण करते हैं कि--श्री श्री ऋषभदेव भगवान ने दीक्षा ली उस वक्त चार मुष्टि लोच कर और पांचवी मुष्टि लेती वक्त श्री इन्द्र महाराज ने कहा कि--एसा उत्तमांग शोभता नहीं इस लिये रहने दो ऐसा ग्रंथवाला कहता है सो कैसे ?

उत्तर—श्री " जंबुद्वीप पन्नति " सूत्र में यह बात नहीं और श्री इन्द्र महाराज ने कहा भी नहीं है। परन्तु यहां चार मुष्टि लोच करने का हेतु ऐसा है कि भगवान ने प्रथम भाग में [illegible] केश के [illegible] से चार मुष्टि लोच किया है—ऐसा ही श्री " समुद्रिक " सूत्र में कहा है कि—गुणवान उत्तम पुरुष के बाल होवे।

प्रश्नोत्तर २५७

प्रश्न—चौदह पूर्वी मुनि को शंका के लिये श्री महाविदेह क्षेत्र में आहारिक का पुतला भेजते हैं वह दिन में भेजते हैं कि रात्रि में ?

उत्तर—यहां से पुतला दिन में भेजे परन्तु रात्रि में नहीं भेजे।

शंका—यदि कोई कहे कि—दिन में भेजे उस वक्त श्री महाविदेह क्षेत्र में तो रात्रि होवे, तो आहारिक का पुतला साधु जी के रूप में है तो उसमें रात्रि में कैसे चलाय ?

तत्रोतर—चौदह पूर्व आहारिक का पुतला जब करें तब संध्या हैं तथा ६ घडी दिन रहें तब पुतला करके भेजे और प्रश्न पूछ कर अन्तर मुहूर्त से पीछे आता है श्री "जम्बुद्वीप पन्नति" सूत्र में कहा है कि—श्री भरत क्षेत्र में ६ घडी दिन बाकी रहें तब श्री महाविदेह क्षेत्र में दिन उदय हो उस अपेक्षा से यहां से संध्या में पुतला बनाकर श्री महाविदेह क्षेत्र भेजते है। इसलिये दिन में भेजे। परन्तु रात्रि मे नहीं भेजे। पीछे तत्त्वार्थ केवलीगम्य।

प्रश्नोत्तर २५८

प्रश्न—ज्योतिष मण्डल की जघन्य व्याघात २६६ योजन की हैं और उत्कृष्टि १२२४२ योजन की व्याघात पडे ऐसा कहा वह किस रीति से समझना ?

उत्तर-जघन्य व्याघात तो निषेढ तथा नीलवन्त पर्वत ४०० योजन का ऊन्चा है और उसके ऊपर ५०० योजन का कूट हैं और वह कूट २५० योजन का चौडा हैं तो वैसे ही २५० योजन और उससे आठ २ योजन दूर हैं ऐसेही सब मिल कर २६६ योजन की जघन्य व्याघात हुई और उत्कृष्टि व्याघातमें

इग्यारह योजन का मेरु पर्वत मूल में कहा है और उसमें दोनों तर्फ ११२१ योजन दूर रहते हैं। ऐसे ही सब विस्तार १२२४२ योजन की उत्कृष्ट व्याघात समझनी (शाख:—श्री " जंबूद्वीप पन्नति " सूत्र की)

प्रश्नोत्तर २५९

प्रश्न—श्री " उत्तराध्ययन जी " सूत्र के ३० वें में कहा है कि—६ तिथि घटे और श्री " ठाणांग जी " सूत्र के छट्ठे ठाणे में कहा है कि—६ बढ़े और ६ तिथि घटे यह कैसे ?

उत्तर—श्री " चंद्र पन्नति " सूत्र में कहा है कि—ऋतु संवत्सर से आदित्य संवत्सर की ६ तिथि बढ़ती है और ऋतु की अपेक्षा से चंद्र संवत्सर की ६ तिथि उसकी अपेक्षा से श्री " ठाणांगजी " सूत्र में ६ तिथि घटने की तथा ६ तिथि बढ़ने की कही है। परन्तु किसी वक्त १ तिथि २ वक्त न आवे जैसे २ अष्टमीवत् ।

आशंका—कोई कहे कि दो अष्टमीवत दो तिथि न हो तब ६ दिन बढ़ाता मगर कोई तिथि दो वक्त

होनी चाहिये वह कैसे ?

तत्रोतर–एक तिथि को ५९ घडी २ पल की कहते हैं और दिन रात ६० घडी की होती हैं तो एक तिथि दो दिन में किस रीति से आवे अर्थात् न आवे और जो ६ दिन ऋतु से वढते हैं वह और ६ दिन चन्द्र संवत्सर से वढते हैं वे अथवा हर एक संवत्सर दोनों मिल कर १२ दिन वढे । इस क्रम से तीसवें महीने एक चन्द्र मास अधिक होता है । उस अपेक्षा से ६ दिन वढते थे वे वहां सम्पूर्ण हुये (शास्त्रः- श्री " चन्द्र पन्नति " सूत्र की)

प्रश्नोत्तर २६०

प्रश्न–चन्द्र मांडला से पीछे वह मांडले कितने दिन में आवे ?

उत्तर–जघन्य तीसरे दिन उत्कृष्ट तीसवें दिन कारण कि ६२ मुहूर्त मंडल स्पर्शी रहते हैं इसलिये (शास्त्रः- श्री " चन्द्रपन्नति " सूत्र की)

प्रश्नोत्तर २६१

प्रश्न-सूर्य मांडल से पीछे वह मंडल कितने दिन में आवे ?

उत्तर--जघन्य तीसरे दिन और उत्कृष्ट ३६७ वें दिन में आवे (शास्त्र:-श्री "सूर्य पन्नति" सूत्र का)

प्रश्नोत्तर २६२

प्रश्न-अढाई द्वीप का सूर्य उदय होते हुए कितने दूर से नजर में आवे ?

उत्तर—सदैव सूर्य जितना सारे दिन में चले वह अर्ध भाग की संख्या का योजन से नजर में आवे न्याय जैसे कि पहिले [illegible] युगे हावत अठारह मुहूर्त का दिन होवे तब एक मुहूर्त में ५२२१ योजन साठीया २९ भाग एवं सारे दिन में सब मिल कर ९४५२६ योजन साठीया ४२ भाग चलें और ४७२६३ योजन साठीया २१ भाग में उदय हो तो सूर्य नजर में आवे। उसी रीति से सारे ही दिन में सूर्य चलता होवे, उसमें अर्ध भाग उदय हो तो सूर्य नजर में आवे।

प्रश्नोत्तर २६३

प्रश्न—पुष्कर द्वीप में चन्द, सूर्य कितनी दूर से दिखता है ?

उतर—२१३४५३७ योजन प्रमाण क्षेत्र से पुष्करार्ध द्वीप का मनुष्य के पूर्व दिशा में उदय पाता और पश्चिम में अस्त पाता ऐसे ही दिखता है (शाख:-श्री "क्षेत्र समास" की)

प्रश्न-श्री "दश वैकालिक" सूत्र के तीसरे अध्ययन में कहा है कि "रायपिंड लीये" तो मुनि को आणा-चरण दोष लगे, श्री "अन्तगढ जी" सूत्र मे श्री गौतम स्वामी जी श्री "क्षेत्र जी" के घर गया तथा ६ अणगार देवकी के घर गया वह कैसे ?

उत्तर--यह कानून अन्तका श्री जिनराज के साधु जी के लिए हैं। परन्तु प्रभु विद्यमान होने से श्री गौतम स्वामी जी बाधक नहीं तथा २२ तीर्थंकर के साधुजी को बाधक भी नहीं ऐसे ही अखीर का जिनराज के साधु जी को "राय पिंड" न लेना ऐसे ही आहार में राजा माफिक कंदमूल पाकादिक बलिष्ट आहार न लेना । परन्तु बाकी आहार लेने में बाधक नहीं है ।

प्रश्नोत्तर २६५

प्रश्न—श्री " बृहत्कल्प " सूत्र के अध्ययन तीसरे में कहा है कि— साधु साध्वी जी महाराज औषधि करावें तो अनाचरण दोष लगे तो साधु जी महाराज दवा कैसे करावें ?

उत्तर—श्री " निशीथ " सूत्र में कहा है कि—आराम होते हुये दवा करावें तो अनाचरण दोष लगे। परन्तु दर्द होने पर करावें तो दोष लगे नहीं।

प्रश्नोत्तर २६६

प्रश्न—पहिले महाव्रत के भांगे कितने और कौन २ से ?

उत्तर—८१ भांगे-वे कहते हैं (१) पृथ्वी (२) पानी (३) अग्नि (४) वायु (५) वनस्पति (६) दो इन्द्रिय

(७) तीन इन्द्रिय (८) चार इन्द्रिय (९) पंच इन्द्रिय यह नव प्रकार के जीवकों मन से हिंसा करना नहीं, मन से हिंसा कराना नहीं मन से अनुमोदना करनी नहीं ऐसे ही २७ यह नव भांगे के वचन से हिंसा करनी नहीं तथा करानी नहीं करनेवाले प्रति अनुमोदना नहीं। ऐसे ही २७ यह नव भांगे की काया से हिंसा करनी नहीं. तथा करानी नहीं, करते प्रति अनुमोदना नहीं। ऐसे ही २७ सब मिल के ८१ भांगे पहिले महाव्रत के जानना (शास्त्र-श्री " दश वैकालिक " सूत्र के अध्ययन ४)

प्रश्नोत्तर २६७

प्रश्न—दूसरे महाव्रत के भांगे कितने और कौन २ से ?

उत्तर—३६ भांगे है वे कहते हैं (१) क्रोध, (२) लोभ, (३) भय, (४) हास्य,यह चार प्रकार का झूठ बोलना

नहीं, दूसरा नहीं बोलता प्रति अनुमोदना नहीं, मन से, वचन से, काया से, ऐसे ही ३६ भांगे दूसरे महाव्रत के मानना (शास्त्र:-श्री " दश वैकालिक " सूत्र के अ० ४)

प्रश्नोत्तर २६८

प्रश्न—तीसरे महाव्रत के भांगे कितने और कौन २ से ?

उत्तर—५४ भांगे कहते हैं (१) अल्प अर्थात् थोड़ा (२) बहुवा इससे ज्यादा (३) अणुवा इससे बारीक (४) स्थूलवा इससे मोटा (५) चितमंतवा इससे सचित्त [६] अचितमंतवा इससे अचित्त यह ६ प्रकार की परिग्रह की चोरी करनी नहीं, करानी नहीं, करते प्रति अनुमोदना नहीं मन करके वचन करके काया करके ऐसे ५४ भांगे तीसरे महाव्रत के मानना (शास्त्र:-श्री " दश वैकालिक " सूत्र के अ० ४]

प्रश्नोत्तर २६९

प्रश्न—चौथे महाव्रत के भांगे कितने और कौन २ से ?

उत्तर—२७ भांगे कहते हैं (१) देवता संबंधो (२) मनुष्य संबन्धी (३) तीर्यंच संबन्धी मैथुन सेवना नहीं, सेवाना नहीं सेवता प्रति अनुमोदना नहीं, मन करके वचन करके काया करके ऐसे ही २७ भांगे चौथे महाव्रत के जानना (शास्त्रः—श्री " दश वैकालिक " सूत्र के अ० ४)

प्रश्नोत्तर २७०

प्रश्न—पांचवे महाव्रत के भांगे कितने और कौन २ से ?

उत्तर—५४ भांगे कहते है (१) अल्प इस से थोडा (२) बहुधा इससे ज्यादा (३) अणवा इससे बारीक (४) स्थूलवा इससे मोटा (५) चितमंतवा-इससे सचित (६) अचितमंतवा इससे अचित यह ६ प्रकार का

परिग्रह रखना नहीं, रखाना नहीं, रखते प्रति अनुमोदना नहीं, मन करके वचन करके काया करके ५४ भांगे ऐसे पांचवे महाव्रत के जानना (शास्त्र-श्री " दश वैकालिक " सूत्र के अ० ४)

प्रश्नोत्तर २७१

प्रश्न-छट्ठे व्रत के भांगे कितने और कौन २ से ?

उत्तर-३६ भांगे कहते हैं (१) असणांवा (२) पाणांवा (३) खाइमंवा (४) साइमंवा इन चार बोलों आहार में से एक आहार का रात्रि भोजन करना नहीं, कराना नहीं, रात्रि भोजन करते प्रति अनुमोदना नहीं मन करके वचन करके काया करके ऐसे ३६ भांगे छट्ठे महाव्रत के जानना (शास्त्र-श्री " दश वैकालिक " सूत्र के अ० ४)

प्रश्नोत्तर २७२

प्रश्न-साधु जी महाराज को रात्रि भोजन करें तो कितने महाव्रत भंग होवें ?

उत्तर—पंच महाव्रत भंग होवे वह कहते हैं-(१) जीव की हिंसा होवे, (२) सत्य धर्म का लोप होवे, (३) वीतराग के मार्ग की चोरी होवे (४) भोजन से विकार होवे, (५) मूर्छा भाव आवे इससे पंच महाव्रत भंग होवे।

प्रश्नोत्तर २७३

प्रश्न—पहिली समिति के भांगे कितने और कौन २ से ?

उत्तर—२७ भांगे हैं वह कहते हैं पांच इन्द्रिय के २३ विषय हैं उसमें से पिछला बोल तथा उसका दूसरा प्रति पक्ष यह २ वर्जे के २१ विषय पावे और पांच का स्वध्याय वह कहते हैं (१) वायणा (२) पूछणा (३) परियटणा (४) अणुपेहा (५) धम्मकहा ऐसे ५ इरिया समिति अपने शरीर की छाया प्रमाण दूहे। ऐसे ही कुल २७ भांगा पहिली समिति के जानना।

प्रश्नोत्तर २७४

प्रश्न—दूसरी समिति के भांगे कितने और कौन २ से ?

उत्तर—९ भांगे कहते हैं (१) क्रोध (२) मान (३) माया (४) लोभ (५) हास्य (६) भय (७) वाचालपना (८) विकथा (९) [illegible] ये ९ दोष वर्जना ऐसे ही ९ भांगे दूसरी समिति के जानने।

प्रश्नोत्तर १७५

प्रश्न—तीसरी समिति के भांगे कितने और कौन २ से ?

उत्तर—७ भांगे कहते हैं (१) गवेषणा के ३२ दोष वर्जना यह पहिला भांगा, ग्रहणएषणा के दस दोष वर्जना, यह दूसरा भांगा परिभोग एषणा के ५ भांगे यह ५ मांडलीया का दोष वर्जना ऐसे ७ भांगे तीसरी समिति के जानने।

प्रश्नोत्तर १७६

प्रश्न—चौथी समिति के भांगे कितने और कौन २ से ?

उत्तर—२ भांगे कहते हैं (१) "औघिक अर्थात् पाटी ढाटी" वस्तु लेनी यह (२) उपग्रहिक अर्थात् आगारी

लेनी वह. इन दो दोषों को वर्ज कर भंड उपगरण यत्ना से लेना मेलना ऐसे २ भांगे चौथी समिति का जानना ।

प्रश्नोत्तर २७७

प्रश्न—पांचवी समिति के भांगे कितने और कौन २ से ?

उत्तर—१०२४ भांगे वह कहते हैं ।

१०—९—८—७—६—५—४—३—२—१ गुणाकार करना

१०—४५—१२०—२१०—२५२—२१०—१२०—४५—१०—१ १०२४ भांगा सर्व

१—२—३—४—५—६—७—८—९—१० भांगाकार करना

" अनापात अशंलोक " इस तरह कोई आता जाता न देखे तिहां पलट दे (२) " पराणु घाती " इससे अपने जीव की तथा पर जीव की व्याघात हो वहां न पलटे (३) " शम " इस तरह ऊंची नीची भूमि के ऊपर न

परठे (४) " अशुषीर " इस तरह पोली भूमि के ऊपर न परठे (५) " अचीर काल कृत " इससे थोड़ा काल की अचित्त भूमिका होवे वहां न परठे (६) "दूरमोगाढे" इस तरह जघन्य चार अंगुल ऊंची भूमिका वहां न परठे (७) "वित्थिन्ने" इस तरह एक हाथ सरखी चौड़ी अचित्त भूमि के ऊपर परठना (८) "नासन्ने" इस तरह स्थानक के समीप न परठना (९) " बीलवज्जीए " इसमें उन्दरादिक का बिल हो वहां न परठना (१०) " तसपाणबीयरहिए" इसमें जहां प्रतिकाय अंकुर बीज त्रस जीव न हो परठना। यह दश और एक संयोगी का दश हुआ दूसरे संयोगी का ४५ हुआ, तीसरे संयोगी का १२० हुआ, चौथे संयोगी का २१० हुआ, पांचवें संयोगी का २५२ हुआ, छट्ठे संयोगी का २१० हुआ, सातवें संयोगी का १२० हुआ, आठवें संयोगी का ४५ हुआ, नववें संयोगी का १० हुआ, और दसवें संयोगी का १ भांगा हुआ। इसी तरह सब मिल कर १०२३ भांगे हुए और १ भांगे शुद्ध पर ऊपर का दोष टाल करके परठना इस तरह सब मिलाकर १०२४ भांगे पांचवी समिति के जानना।

प्रश्नोत्तर २७८

प्रश्न–साधु जी महाराज के अतिचार कितने और कौन २ से ?

उत्तर—१२१ अतिचार अर्थात् १२५ भी कहते हैं ज्ञान के चौदह, दर्शन के पांच, पंच महाव्रत के पचीस भावना इरिया समिति के चार, दूसरी भाषा समिति के चार, तीसरी समिति के ४९ वें कहते हैं ब्यालीस दोष आहार पानी के, ५ मांडलिया के, एक रात्रि का लिया दिन को भोगवे, एक दिन का लिया रात्रि को भोगवे इस प्रकार ४९ हुए, चौथी समिति के चार, पांचवी समिति के ६५ अतिचार और मन गुप्ति, वचन गुप्ति, काय गुप्ति उसमें एक २ के चार २ भांगा किये ऐसे ही १२ सब मिल कर १२१ हुआ और तीसरी समिति के द्रव्य से आदि चार चोक बढाने से १२५ अतिचार जानना।

प्रश्नोत्तर २७१

प्रश्न-साधु साध्वीजी महाराज को तीसरे प्रहर गोचरी करनी कही है। तो इस समय उस काल के बिना गोचरी करते हैं सो कैसे ?

उत्तर-उस प्रमाण से गोचरी करनी यह तो उत्कृष्टि करणी वालों को है परन्तु श्री "दश वैकालिक" सूत्र

में कहा है " काले कालं समायरे " अर्थात् जिस गाव में जिस वक्त गोचरी का समय होवे तब करनी और उस प्रमाण से न करें तो छिकायता पावे, व जिसने से तथा निशीथ सूत्र के उ० १० में कहा है कि—मुनि के सूर्य उदय में सूर्य अस्त होवे तब तक आहार की वृत्ति है पहिले पहर का आहार चौथे पहर ग्रहण करे तो प्रायश्चित्त आवे ऐसा कहा है तो इस न्याय से मुनिराज को संयम के लिये क्षुधा वेदनीय बुझाने के लिये चौथे पहर में गोचरी करना बाधक नहीं है।

प्रश्नोत्तर २८०

प्रश्न—श्री " दश वैकालिक " सूत्र के अ० ७ वें में मुनि को दो प्रकार की भाषा बोलनी कही और श्री " पन्नवणाजी " सूत्र के पद ११ वें में चार प्रकार की भाषा बोलना मुनि आराधिक होवे इस रीति कहा सो कैसे ?

उत्तर—श्री " पन्नवणाजी " सूत्र में जो भाषा कही वह उपदेश तथा चर्चा अवसर पर मुनि चार प्रकार की भाषा बोले उदाहरण श्री " सूयगडांग " जी सूत्र के श्रुतस्कंध दूसरे अध्ययन पहिले में कहा है कि चार दिशा से आये हुये पुरुष की प्ररूपणा मुनि व्याख्यान द्वारा प्रगट करें यह भाषा झूठी तथा मिश्र होने से चार भाषा बोलना मुनि को आराधिक पणा कहा है।

प्रश्नोत्तर २८१

प्रश्न—श्री "उत्तराध्ययन जी" सूत्र के अ० १२ वें में श्री हरकेशी मुनि की पक्ष करते हैं उस संबन्ध में मुनि को दोष लगे है या कि नहीं ?

उत्तर—यक्ष स्वयं भक्ति करने के भाव में व्यावच्च करते हैं। वह व्यावच्च कोई मुनि के शरीर संबन्धी नहीं करते हैं अर्थात् स्वयं स्पर्श कर दिखाने रूप व्यावच्च नहीं करते हैं। परन्तु मुनि के बीभत्स अविष्ट रूप देख कर कोई अनार्य वह मुनि की दुर्गच्छ करते निवारता रूप भक्ति व्यावच्च करते हैं। उसमें भी मुनि मन, वचन काया से जानता नहीं है इससे मुनि को कोई भी दोष नहीं हैं।

प्रश्नोत्तर २८२

प्रश्न—ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती ने पूर्व के पांच भव देखे इससे कई एक ऐसा कहते हैं कि जातिस्मरण से देखा तो उसको सम्यक्त्व की प्राप्ति हुई कैसे उसका क्या संभव है ?

उत्तर—श्री "उत्तराध्ययन जी" सूत्र के अ० १३ वें में जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न हुआ ऐसा पाठ बिलकुल नहीं है।

शंका—अब कोई कहे कि पूर्व का भव कौनसी रीति से देखा ?

समाधान—अवधिज्ञान से नहीं देखा कदाचित् जाति स्मरण से देखा हो तो सम्यक्त्व सम्भवो नहीं. जैसे कि मिथ्यात्वी के जाति स्मरण से होता है (उदाहरण—श्री " ज्ञाता जी " सूत्र के अ० १) कदाचित पुनः भव देखे निदान किया है उसमें काल नाम का निदान है उस निदान की देरी से जाना इससे उस निदान में ज्योतिष की पुस्तक है उसको पढ़ने से तीन काल की बात जाने ऐसा श्री " जंबूद्वीप पन्नत्ति " सूत्र में कहा है कि-तीन काल अर्थात् भूत, भविष्य, वर्तमान की बात जाने. इसीसे ब्रह्मदत्त ने पांच भव देखा है परन्तु जाति स्मरण से भव नहीं देखे हो उसे सम्यक्त्व की प्राप्ति नहीं है कारण कि श्री " दशाश्रुत स्कंध जी " सूत्र में निदाणा कहा है वह निदाणा का भाव देखने से ब्रह्मदत्त के भव प्रति नियाणा मालूम होता है इससे उसे सम्यक्त्व नहीं है जैसे कि श्री " उत्तराध्ययन जी " सूत्र का न्याय देखना अवीतवा काम भोग के विषय लगी हुई है इससे मुनि का

उपदेश विलाप रूप हुआ है तो उस न्याय देखते भी सम्यक्त्व समझे नहीं वैसे ही जो अवीतता में मर के सातवीं नरक में गया। पीछे तत्वार्थ केवलीगम्य।

प्रश्नोत्तर २८३

प्रश्न–मृगापुत्र किस के समय में हुआ है ?

उत्तर–पहिले तीर्थंकर के शासन में हुआ है (शाख:–श्री " उत्तराध्ययन जी" सूत्र के अ० १९ में) पांच महाव्रत संभाला उस अपेक्षा से जानना और दीक्षा भी शीत ऋतु में ली " जहाइमइय सीयं " पाठ हैं।

प्रश्नोत्तर २८४

प्रश्न–श्रावक को सिद्धांत पढनो तथा वांचना बाधक नहीं है कैसी कि श्री " उत्तराध्यनजी " सूत्र के अ० २

चाहिये इस कारण से अतिचार नहीं कहा है कारण कि श्रावक सर्व के निश्चये पढने का कल्प नहीं है । साधुवत् कोई २ पढे उसे बाधक नहीं है ।

विशेष शंका—श्री " व्यवहार " सूत्र में कहा है कि--तीन वर्ष के दीक्षित को कल्पे श्री " आचारांग जी " सूत्र में पढाना इस अनुक्रम से बीस वर्ष तक कहा है तो श्रावकजी को दीक्षा नहीं तो पढाना कैसे कल्पे ?

उसका समाधान—यह कानून स्थविर कल्पी के लिये हैं परन्तु जिन कल्पी के तथा कल्पातीत के लिये नहीं है धन्ना अणगार की तरह श्री " व्यवहार " सूत्र में कहा है वह तो साधुजी के कानून के लिये है परन्तु श्रावक सुज्ञ होवे उसे बाधक नहीं है क्योंकि श्री " ठाणांगजी " सूत्र के स्थान १० में कहा है कि पछाकडा श्रावक जी पास साधु जी महाराज प्रायश्चित ले तो जो श्रावक शास्त्र को जानता होवे जब ही श्री जिनराज देवने आज्ञा

प्रश्नोत्तर २८६

प्रश्न—क्षायक सम्यक्त्व वाला कितना भव करें ?

उतर—तीन भव करें वह कहते हैं (१) नारकी का (२) देवता का (३) मनुष्य का पीछा अवश्य मोक्ष जावे (श्री " उतराध्ययनजी " सूत्र के अ० २९) पीछे तत्वार्थ केवली गम्य ।

प्रश्नोत्तर २८७

प्रश्न—श्री "उत्तराध्ययनजी" सूत्र के अ० ३४ में तथा श्री "पन्नवणा जी" के सूत्र पद १७ में कहा है कि लेश्या का स्थान असंख्याता और लेश्याका प्रणाम जघन्य ३-९-२७-८१-२४३ यावत् बहुत कहनेका क्या परमार्थ ?

उत्तर—बहुत कहने का परमार्थ ऐसे हैं कि लेश्या के परिणाम के तीन २ गुणा आठ वक्त करने से ६५६१

प्रश्नोत्तर २८८

प्रश्न–श्री "उत्तराध्ययन जी" सूत्र के अं० ३४ गाथा ६० मे कहा है कि अन्तर मुहूर्त गये और अन्तर मुहूर्त बाकी रहें जब लेश्या प्रणम्यो होंने पर जीव परलोक में जावें तो अन्तर महूर्त बाकी रहें और अन्तर मुहूर्त गये जीव परभव में किस रीति से जावे ?

उत्तर---मनुष्य तिर्यंच के परभव की लेश्या आने के पीछे अंतर मुहूर्त से मरण पावे। इस तरह लेश्या का अन्तर मुहूर्त गये पीछे मरण पावे और देवता तथा नारकी अपनी मूल लेश्या का अन्तर मुहूर्त बाकी रहे तत्पश्चात् मरण पाकर परभव मे जावे वहाँ "उपनाय" है वह मूल लेश्या का का अन्तर मुहूर्त भोगवे. उसमें प्राप्ति कर अन्तरमुहूर्त छोटा जानना और लेश्या का अन्तरमुहूर्त बडा जानना। इसलिये मनुष्य तिर्यंच में आये बाद परभव की लेश्या सम्भव है। यहां अन्तरमुहूर्त का असंख्याता भेद समझना। इस प्रमाण से भावार्थ "लघुसंघयणी" ग्रन्थ में कहा है।

प्रश्नोत्तर २८९

प्रश्न—श्री " उत्तराध्ययन जी " सूत्र के अ० ३४ में कहा है कि तेजु लेश्या की उत्कृष्टि स्थिति अथवा पद्म लेश्या की जघन्य स्थिति कही है तो वह पहिले दूसरे देवलोक में एक तेजु लेश्या है और वह देवताओं की उत्कृष्टि स्थिति २ सागर झाझेरी है और यहाँ २ सागर झाझेरी पद्म लेश्या की जघन्य स्थिति हुई तो तीसरे देवलोक में एक पद्म लेश्या है और वहाँ के देवताओं की जघन्य २ सागर की स्थिति है तो वह २ सागर वाले देवता के कौन २ सी लेश्या कहनी ?

उत्तर—तीसरे देवलोक में जघन्य आयुवाला के तेजु लेश्या पावे तो भी पहिला आश्री अल्प गवेषी नहीं है

(प्रमाण—श्री " जीवाभिगम जी " सूत्र वृत्ति में तथा संग्रहणी की)

प्रश्नोत्तर २९०

प्रश्न--पुण्य तत्व लोक में देश उणा कोन से आश्री लाभे और पाप तत्व सारे लोक में किस आश्री लाभे ?

उत्तर---श्री "उत्तराध्ययन जी" सूत्र के अ० ३६ की गाथा १०१ में "सुहमास सव लोगंमी लोग देशेय वायरा" ऐसा पाठ है तो जो सूक्ष्म का बोल हैं वह पाप प्रकृति का उदय हैं और सूक्ष्म सर्व लोक में हैं तो वह आश्री पाप तत्व सर्व लोक में पावे हैं और बादर का बोल वह पुण्य प्रकृति का उदय हैं और बादर जीव लोक में देश उणा है उस आश्री पुण्य तत्व लोक में देश उणा पावे है।

प्रश्नोत्तर २९१

प्रश्न--श्री "उत्तराध्ययन जी" सूत्र के अ० ३६ में कहा है कि पानवाला लसण को अनंत काय कहा

और श्री " पन्नवणा जी " सूत्र के पहिले पद में हर एक लसण को अनंतकाय कहा सो कैसे ?

उत्तर—दोनों कंद आश्री ही कहेंहैं कारण कि पान होते हैं वह कंद में से बाहिर रहते हैं तो उसमें असंख्याता जीव संभव हैं परन्तु कंद में तो अनंता जीव समझना ।

प्रश्नोत्तर २९२

प्रश्न—सर्वार्थसिध्य विमान के जो चार विमान फिरते हैं उनका आकार कैसे है ?

उत्तर—तीन त्रुणीया विमान हैं और सर्वार्थसिध्य विमान के फिरते गोलाकार कही है ।

प्रश्नोत्तर २९३

प्रश्न—सिध्धशिला जाडी कितनी और कितने भाग में जाडी है ?

उत्तर—मध्य भाग में आठ योजन जाडी और फिरती आठ योजन इसमें सरखी है और पीछे प्रदेश उतर के मखी की पांख जैसी पतली हैं (शाख:—श्री " उत्तराध्ययन जी " सूत्र के अ० ३६)

प्रश्नोत्तर २९४

प्रश्न—श्री " नंदी जी " सूत्र में अवधिज्ञान का बहुत भांगे चले हैं उसमें अगले देखे, पीछे न देखे ऐसी ही ऊंचा नीचा पृष्ट वगैरह बहुत भांगे हैं तो वह जीव के सर्व आत्म प्रदेश खुला हुआ समझना कि जिस तरफ देखे उसी तरफ खुला समझना ।

उत्तर—उस जीव के सर्व प्रदेश खुले हुए हैं कारण कि श्री जिनराज देव ने कहा है कि ' सव्वेणं सव्वं बधई " इस न्याय से सर्व प्रदेश द्वार से बांधे और सर्व प्रदेश से छूटे ।

अत्रशंका— तब क्यों सर्व दिशाओं को नहीं देखते ?

भांगे हैं उसमें "आणाणु गामी" अवधि है उसका यह निश्चय भाव है कि जिस ठिकाने उपजे उसी ठिकाने देखे। परन्तु दूसरी जगह साथ न जावे वह प्राणी के "आणाणु गामी" अवधिका क्षयोपशम हुआ है इस लिये वहां ही देखे परन्तु क्षेत्र बल वह धणीको निमत्त कारण रूप है उपादान कारण कि अणुगाई पणे आतमको क्षयोपशम समझना। पीछे तत्वार्थ केवली गम्य।

प्रश्नोत्तर २९६

प्रश्न—श्री "नंदी जी" सूत्र में २ प्रकार का अवधिज्ञान कहा है वह बाह्य और अभ्यंतर किस रीति से समझना?

उत्तर—अभ्यंतर इससे सारे भव सँबन्धी समझना और बाह्य वह नया उत्पन्न हुआ वह देव नारकी के अभ्यंतर मनुष्य के २ पावे और तिर्यंच के एक बाह्य पावे इसी तरह तिर्यंच बिना दूसरे जीव के परभव के साथ

मशपि भागे।

प्रश्नोत्तर २९७

प्रश्न—श्री " अनुयोगद्वार " सूत्र में संख्याता के लिये अर्थ में अनवस्थित सलाखा, प्रति सलाखा, महा सलाखा, कहा है और कहा है कि श्री जंबुद्वीप जितना पाला रूपी मांहि सर सव का दाना भर के पीछे एक दाना द्वीप में एक दाना समुद्र में एेसा मेलते जाना और जब वह पालो खाली हो तब पीछे वहे द्वीप समुद्र को सलाखा पाला प्रमुख [illegible] को अधिकार है तो जहां तक कि छेलो दानो गयो तिहां तो वह द्वीप समुद्र असंख्याता योजन का है तो उसमें दाना भी असंख्याता समाय तो उत्कृष्ट संख्या तो किस रीति से संभव है ?

उत्तर—जंबुद्वीप में संख्याता सरसव का दाना समाय परन्तु असंख्याता समाय नहीं वे भी मध्यम संख्याता समझना एेसे जंबुद्वीप जितना बहुत पाला भराय परन्तु उत्कृष्ट संख्याता न हो बहुत वह कितना सौ, हजार,

भांगे हैं उसमें "आणाणु गामी" अवधि हैं उसका यह निश्य भाव है कि जिस ठिकाने उपजे उसी ठिकाने देखे। परन्तु दूसरी जगह साथ न जावें वह प्राणी के "आणाणु गामी" अवधिका क्षयोपशम हुआ है इस लिये वहां ही देखे परन्तु क्षेत्र बल वह धणीको निमत्त कारण रूप है उपादान कारण कि अणुगाई पणे आत्मको क्षयोपशम समझना। पीछे तत्वार्थ केवली गम्य।

प्रश्नोत्तर २९६

प्रश्न—श्री "नंदी जी" सूत्र में २ प्रकार का अवधिज्ञान कहा है वह बाह्य और अभ्यँतर किस रीति से समझना ?

उत्तर—अभ्यंतर इससे सारे भव सँबन्धी समझना और बाह्य वह नया उत्पन्न हुआ वह देव नारकी के अ-भ्यंतर मनुष्य के २ पावे और तिर्यंच के एक बाह्य पावे इसी तरह तिर्यंच बिना दूसरे जीव के परभव के साथ

अवधि आवे।

प्रश्नोत्तर २९७

प्रश्न—श्री "अनुयोगद्वार" सूत्र में संख्याता के लिये अर्थ में अनवस्थित सलाखा, प्रति सलाखा, महा सलाखा, कहा है और कहा है कि श्री जंबुद्वीप जितना पाला कल्पी मांहि सर सव का दाना भर के पीछे एक दाना द्वीप मे एक दाना समुद्र में ऐसा मेलते जाना और जब वह पालो खाली हो तब पीछे वहे द्वीप समुद्र को सलाखा पाला कल्पना इत्यादि चार पालों को अधिकार हैं तो जहां तक कि छेलो दानो गयो तिहां तो वह द्वीप समुद्र असंख्याता योजन का हैं तो इसमें दाना भी असंख्याता समाय तो उत्कृष्ट संख्या तो किस रीति से संभव है ?

उत्तर—जंबुद्वीप में संख्याता सरसव का दाना समाय परन्तु असंख्याता समाय नहीं वे भी मध्यम संख्याता समझना ऐसे जंबुद्वीप जितना बहुत पाला भराय परन्तु उत्कृष्ट संख्याता न हो बहुत वह कितना सो, हजार,

लाख, क्रोड, क्रोडा क्रोड यह भी बोलना अशक्य उसे " असंलप्पा " कहना उतना जानना विशेष श्री "अनुयोग-द्वार " सूत्र के पाठ में एक बोल सलाखा है परन्तु दूसरा तीन बोल नहीं है ऐसे ही तीन बोल की जरूरत नहीं कैसे कि खुला पाठ हैं वह यह हैं "एसणं एवइय खेतपल्ले आइठे पढमा सलागा" इससे इतना क्षेत्र पालाको कहिए प्रथम सलागा ऐसा सलागा को " असंलप्पा " कहते हैं वह " असंलप्पा " से लोक भरा तो भी उत्कृष्ट-संख्याता न पावे पाठ " एवइयाणं सलागाणं असंलप्पा लोग भरीया तहावि उ कोसयं संखेजनपायइ " इससे यह बहुत सलागा लोक में भरा तो उत्कृष्ट संख्याता न पावे यह समझने का कि जंबुद्वीप जितना पाला उसमें सरसव भर द्वीप समुद्र मेलता असंख्याता योजन का विस्तार वाला द्वीप छेल्लों दानों पहुंचे वहां पाला जंबुद्वीप इतना ही कल्पना परन्तु असांख्याता योजन का पालों कोई ठिकाने कल्पना नहीं कैसे कि असांख्याता योजन का द्वीप में नियमा असांख्याता दाना समाय । इस लिये जंबुद्वीप इतना ही सर्व ठिकाने पाला " असंलप्पा " बहुत करके

छेल्लो दानों जहां आवे वह उत्कृष्ट संख्याता समझना और वह उपर एक दानो मेले तब असंख्याता होवे।

प्रश्नोत्तर २९८

प्रश्न—श्री " अनुयोगद्वार " सूत्र में कहा है कि एक लाख योजन का लंबा चौडा और एक हजार योजन का ऊंडा ऐसा कल्पित पाला में सरसव का दाना कितना समाय और उसकी संख्या कितनी ?

उत्तर—संख्याता दाना सरसव का समाय और संख्या उसके लिये ग्रंथ में कुल ४८ आंक की बताई है वह संख्या यह है

१९९७ ११२९ ३८४५ १३१६ ३६३६ ३६३६ ३६३६ ३६३६ ३६३६ ३६३६ ३६३६ ३६६६६ जंबुद्वीप जितना पाला में ऊपर बताई हुई संख्या जितना सरसव के दाने समाते हैं।

प्रश्नोत्तर २९९

प्रश्न—धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय इन तीनों का देश, प्रदेश हैं कि नहीं ?

उत्तर—सजाति रूप में देश प्रदेश नहीं (शा।खः—श्री " अनुयोगद्वार " सूत्र में विशेष अविशेष के अधिकार में)

अत्रशंका—श्री " पन्नवणा जी " सूत्र में तथा श्री " भगवती जी " सूत्र में देश प्रदेश कहा है सो कैसे ?

तत्रोत्तर—उस सूत्र में कहा है उस उपचार नय के मत्त से विजाति से जितनी जगह में परमाणु रहे इतनी जगह को एक प्रदेश कहा है परन्तु सजाति में तो एक स्कंध ही है दृष्टांत कपडे का टाका में हाथ नहीं हैं परन्तु हाथ दूसरी वस्तु से कल्पे इस न्याय से समझना।

प्रश्नोत्तर ३००

प्रश्न—देवलोकादिक शाश्वत् कहा है तो श्री " अनुयोगद्वार " सूत्र में सादि प्रमाणिक का ७८ बोल चला उनमें देवलोकादिक अशाश्वत् कहा सो कैसे ?

उत्तर—द्रव्य से तो देवलोकादिक शाश्वत् हैं। परन्तु असंख्याता काल से पुद्गल बदलते हैं इस कारण आश्री अशाश्वत् हैं।

प्रश्नोत्तर ३०१

प्रश्न—अनादिकाल का मिथ्यात्वी जीव प्रथम पहिले सम्यकत्व कौन से दंडक में पावे ?

उत्तर—सब से पहिला सम्यकत्वी मनुष्य विना दूसरे दंडक में नहीं उपजे (शाखः—श्री " अनुयोगद्वार "

सूत्र मास की बाड़ का ३६ भांगे चले हैं उसमें उदय मनुष्य को (१) उपसम कषाय (२) क्षायक सम्यकत्वी (३) क्षयोपशम इंद्रिय (४) प्रणामिक जीव इस रीति से भांगों का विस्तार कहा है तो उस न्याय से प्रथम मनुष्य में ही सम्यकत्वी की प्राप्ति समझना।

अत्रशंका—श्री "भगवती" जी सूत्र में कहा है कि दूसरी गति में सम्यकत्वी हो तो ऊपर के सूत्र में ना कही उसका हेतु क्या समझना?

तत्रोत्तर—दूसरी गति में होवे परन्तु प्रथम एक वक्त मनुष्य में पाकर पीछे दूसरी गति में गया और उसके पश्चात् सम्यकत्वी की प्राप्ति करने आश्री श्री भगवान्‌ने तिहां पाया ऐसा कहा है परन्तु मूल प्राप्ति मनुष्य में समझना इस प्रमाण से सूत्र में कहा है परन्तु ग्रंथवाले ६ भांगे का विस्तार कहा है। इस लिये सुज्ञ पुरुष विचार कर देखें।

प्रश्नोत्तर ३०२

प्रश्न—शब्द का पुदगल शब्दपणे रहे तो कितने काल रहें ?

उत्तर—जघन्य एक समय रहें और उत्कृष्ट आवलिका के असंख्याता भाग में रहकर पीछे शब्दपणा का पुदगल बदल जावें (शास्त्रः—श्री " भगवती जी " सूत्र के श० ५ उ० ७ में कहा है ।

अत्रशंका—असंख्याता समय की एक आवलिका होती है तो यहां उत्कृष्ट स्थिति आवलिका के असंख्यात वें भाग की कही तो जघन्य उत्कृष्टि में कुछ फरक न पडा तो यहां विशेष क्या समझना ?

समोत्तर—श्री ' अनुयोगद्वार " सूत्र में असंख्याता के ९ भेद कहे हैं उस मांहिला चौथा भेद परित जघन्य असंख्याता की आवलिका समझनी उस आश्री विशेष उत्कृष्ट समझना ।

प्रश्नोत्तर ३०३

प्रश्न—क्षयोपशम भाव में कितना कर्म पावे ?

उत्तर—चार कर्म हों ज्ञानावर्णीय कर्म दर्शनावर्णीय कर्म, मोहनीय कर्म, अंतराय कर्म यह चार कर्म का क्षयोपशम होवें (शाख:—श्री " अनुयोगद्वार " सूत्र की)

प्रश्नोत्तर ३०४

प्रश्न—क्षायक सम्यकत्व कौनसी गति में उत्पन्न होवे ?

उत्तर—मनुष्य गति में इसके बिना दूसरी गति में न होवे (शाख:— श्री " अनुयोगद्वार " सूत्र की सनी-

वाइ के २८ भांगे के न्याय देखते हुए एक मनुष्य में ही होवे और पीछे दूसरी गति में ले जावे परन्तु उत्पत्ति स्थान मनुष्य समझा जाता है। पीछे तत्त्वार्थ केवली गम्य।

प्रश्नोत्तर ३०५

प्रश्न—द्वीप समुद्र असंख्याता कहा वह कितना समझना ?

उत्तर—अढाई सागरोपम (पचीस क्रोडा क्रोडी उधार पल्योपम का जितना समय होवे उतना होवे) उनका जितना समय होवे उतना द्वीप समुद्र समझना (शास्त्र — श्री " अनुयोगद्वार " सूत्र की)

प्रश्नोत्तर ३०६

प्रश्न—जंबुद्वीप लाख योजन का कहा वह किस अंगुल से ?

उत्तर—प्रमाण अंगुल से वह उच्छेद अंगुल से हजार गुणा बड़ा जानना (साखः—श्री "अनुयोगद्वार" सूत्र की)

प्रश्नोत्तर ३०७

प्रश्न—श्री 'जीवाभिगमजी" सूत्र तथा श्री "पन्नवणाजी" सूत्र वगैरह सूत्रमें समूर्च्छिम मनुष्य सर्व अपर्याप्ता कहा है और श्री "अनुयोग द्वार" सूत्र में विशेष का अविशेष का भांगा चला वहां विशेष में समूर्च्छिम मनुष्य को अपर्याप्ता और पर्याप्ता कहा सो कैसे ?

उत्तरः—सर्व समूर्च्छिम मनुष्य तो अपर्याप्ता हैं परन्तु यहां दो बोल पद पूर्ण समझा जाता है तथा सर्व अपर्याप्ता साढे तीन पर्या बांधे बिना मरे नहीं उस अपेक्षा से यहां सर्व पर्याप्ता कहा है ।

प्रश्नोत्तर ३०८

प्रश्नः—उपशम श्रेणी वाले जीव को क्षायक सम्यकत्व हो या कि नहीं ?

उत्तरः—क्षायक सम्यक्त्व होवें [शाखः श्री "अनुयोगद्वार" सूत्र में सनीवाइके भाग की] समझनी चाहिये ।

प्रश्नोत्तर ३०९

प्रश्न—श्री " अनुयोगद्वार " सूत्र में सनीवाइ का २९ वां भांगा इसतरह से कहा है कि उपशम कषाय को क्षायक सम्यकत्व को क्षयोपशम इन्द्रिय को प्रणामिक जीव को इस प्रमाण चार बोल सहित वर्त्ते हुए भांगा किस में पावे कारण कि श्री भगवान् ने वर्त्ते भांगा में कहा है ।

उत्तर—ग्यारहवें गुण स्थान वाला जीव में पावे।

अत्रशंका—ग्यारहवें गुणस्थान से तो मनुष्य गति का उदय है तो इस भांगे में उदय नहीं है तो किस रीति से पावे ?

तत्रोत्तर-ग्यारहवें गुणस्थान से आयु का अबंधक है अर्थात एक गतिको नन्धन ही इसलिए मनुष्य की गति का उदय नहीं है इसलिए ऊपर का बताया हुआ भांगा पावे तो बाधक नहीं है।

प्रश्नोत्तर ३१०

प्रश्न—क्षेत्र और क्षेत्रकी स्पर्शना इन दोनों में क्या फरक समझना।

उत्तर—जितना क्षेत्र का प्रदेश अवगाढ किया हुआ है वह क्षेत्र समझना और स्पर्शना तो एक प्रदेश के जघन्य

अपनी कायाका ३ पर कायका ४ स्वकाय का उत्कृष्ट ६ स्पर्श करे और परकाय का ७ स्पर्श करे वह अपना भीतर के प्रदेश संयुक्त होवे इससे ७ प्रदेश स्पर्शे हैं (शास्त्रः—श्री " अनुयोगद्वार " सूत्र की तथा श्री " भगवती जी " सूत्र की) चारों दिशा एक २ ऊपर का एक नीचे इस तरह ६ जानना और ७ हो तो १ संयुक्त का लेना चाहिए।

प्रश्नोत्तर ३११

प्रश्न—अनुपूर्वी द्रव्य के ५ भांगा वह क्षेत्र थकी लोक के असंख्यातवां भाग (२) संख्यातवां भाग (३) बहुल असंख्याता (४) बहुत संख्याता (५) सर्व लोक यह पांच भेद किस अपेक्षा से पावे ?

उत्तर—एक द्रव्य आश्री जघन्य तीन प्रदेशी स्कंध हैं वह तीन आकाश प्रदेश अवगाढ हैं तो वह लोक के असंख्यात वृति हैं अनन्त प्रदेशिया बादर सूक्ष्म स्कंध है वह लोक के असंख्यातवें भागे आकाश प्रदेश अवगाढ हैं केवली का कपाट आश्री, बहुत संख्याता वह मंथण आश्री, बहुत असंख्याता वह दण्ड आश्री, सर्व लोक वह

समुद्र घातका पाँचवें समय सर्व लोक पूर्वी आश्री समझना (शाखः—श्री " अनुयोगद्वार " सूत्र की)

प्रश्नोत्तर ३१२

प्रश्न—मनुष्य कितने मुंह का हो ?

उत्तर—श्री " अनुयोगद्वार " सूत्र में ९ मुंह का कहा है वह अपना मुंह १२ अंगुल का है तो वह अंगुल के ९ गुणा करने से सर्व देहमान उत्तम पुरुष को १८० अंगुल का होवे उनका ९ भाग रूप ९ मुंह है।

प्रश्नोत्तर ३१३

प्रश्न—दश भवनपति के १० दण्डक अलग २ कहे हैं और वैमानिक तथा वाणव्यंतर का एक २ शामिल

कहा उसका क्या कारण ?

उत्तर—जिसकी जाति अलग २ होवे और स्थिति भी अलग २ हो तो उसका दंडक अलग २ कहा।

अत्रशंका—वैमानिक की स्थिति अलग २ है और वाणव्यंतर की जाति अलग २ हैं तो उसका दंडक कैसे अलग २ न कहा ?

तत्रोतर—उन दोनों में एक २ बोल अलग है इससे कहा नहीं परन्तु दोनों बोल अलग २ होवें तो दण्डक अलग कहें।

विशेष शंका—तिर्यंच पचेंद्रि की जाति अलग २ हैं और स्थिति भी अलग २ हैं तो उसका दण्डक अलग२ कैसे न कहा ?

उसका उतर—तिर्यंच में देवता प्रमाण से नहीं केवल उसमें तो भेद पाडने के कारण समझने के लिये हैं और वह तिरछी दिशा में ही रहने वाला है इस लिये उसका दण्डक अलग नहीं कहा है विशेष कर ऐसा संभव है कि वह देवों का स्थान (भवन) दश का अलग २ दश आंतरा में हैं उसमें पहिला २ आंतरा छोडना और प्रत्येक का अलग २ सांझें हैं इस हेतु से भवनपति का दण्डक अलग समझा जाता है ।

प्रश्नोत्तर ३१४

प्रश्न—श्री केवली महाराज कौन से ज्ञान से उपदेश देवें ?

उत्तर—सूत्र ज्ञान द्वारा से उपदेश देवें (शाखः-श्री "अनुयोग द्वार" सूत्र तथा श्री "नन्दी जी सूत्र" की)

प्रश्नोत्तर ३१५

प्रश्न—सिध्ध क्षेत्र से सिध्ध की स्पर्शना अधिक उसका क्या कारण ?

उत्तर—कोई साधु जी महाराज अढाई द्वीप को किनारा ऊपर ध्यान धर के बैठा है उसमें कोई अंग बाहिर रह गया और पीछे यहां ही बैठ के सिध्ध होवे तो उसकी आत्म प्रदेश कुछ बाहिर रह जावें उस आश्री जानना (शाखः—श्री " अनुयोगद्वार " सूत्र की)

प्रश्नोत्तर ३१६

प्रश्न—श्री " भगवती जी " सूत्र में तथा श्री " पन्नवणा जी " सूत्र के पद १२ वें में तथा श्री " अनुयोगद्वार " सूत्र में कहा है कि-एक जीव आश्री आहारिक शरीर का मुकेलगा अनंता कहा है और श्री " पन्नवणा जी " सूत्र के ३६ वें पद में कहा है तथा श्री " जीवाभिगम जी " सूत्र में ऐसा कहा है कि आहारिक शरीर करें तो जघन्य १-२-३ उत्कृष्ट ४ कहा तो श्री "भगवतीजी" सूत्र वगैरह में अनन्ता मुकलेगा कहा किस न्याय से समझना ?

उत्तर—एक जीव आहारिक तीन शरीर करते हैं परन्तु उस का खंडवा अलग २ अनंता पडता है उस आश्री अनंता मुकेलगा श्री "भगवती जी सूत्र" वगैरह में कहा है कि उसका कारण कि दूसरे पुदगल से मिला नहीं इसलिए जब तक मिले नहीं तब तक एक खंडवा आश्री पूछे तो भी आहारिक कहावें उस न्याय से सर्व जीव आश्री समझना।

प्रश्नोत्तर ३१७

प्रश्न—"निशीथ" सूत्र के उ० २ में कहा कि तीन घर तकका आहार पानी सामने आकर देवें तो कल्पे ?

उत्तर—एक घरका भी सामने लाया लेना कल्पे नहीं परन्तु यहां ऐसा समझना कि एक घर है और उसके तीन घर खन्ड हैं तो साधुजी महाराज पहिले खन्ड में खडे हैं और तीसरे खन्ड से देने आते हैं तैसे ही उसके ऊपर मुनिराज की दृष्टी पडी है तो वह आहार पानी लेते मुनि को बाधक नहीं तो यहां उस अपेक्षा से कहा है कि तीन घर का कल्पे।

प्रश्नोत्तर ३१८

प्रश्न– श्री "निशोथ" सूत्र के उ० ३ में कहा है कि साधुजी महाराज ने वडी नीत लघु नीत रात्रि में जो कि है सूर्य उदय होने से पहिले परठे तो प्रायश्चित आवे ऐसा कहा तो वडी नीत वगैरह २ घडी उपरान्त रखे तो असंख्याता समूर्छिम जीव की उत्पत्ति कही है तो रात वासी रखना कैसे कल्पे ?

उत्तर—वडीनीत, लघुनीत दो घडी उपरान्त रखने का व्यवहार मुनि को नहीं है परन्तु यहां ऐसा समझना कि एक मतवाले ऐसा कहते हैं कि जहां सूर्य का प्रकाश दिन भर में पडता नहीं तिहां पलटना नहीं ऐसा कहा है। परन्तु विशेष ऐसा समझते हैं कि कोई मुनिराज हैं उसके सूत्र ज्ञान रूपी इस सूर्य का प्रकाश नहीं हुआ है तो वह मुनि पलट दें तो प्रायश्चित आवे कारण कि पलटने की विधि श्री "उत्तराध्ययन जी" सूत्रके अ० २४वें में कहा है वह बहुत ही कठिन है इसलिए पलटने की विधि जाने वही पलट दे इस हेतु से कहा है।

प्रश्नोत्तर ३१९

प्रश्न—साधु साध्वीजी महाराज को काच का भाजन ग्रहण करना कल्पे कि नहीं ?

उत्तर—न कल्पे शास्त्र:—श्री "निशीथ" सूत्र के उ० ११में कहा है कि काच का भाजन लेवे तो प्रायश्चित आवे।

प्रश्नोत्तर ३२०

प्रश्न-श्री "निशीथ" सूत्रके उ० १२वें में कहा है कि दिन का लिया हुआ आहार पानी भोगवे तो प्रायश्चित लगे कहा तो मुनिराज को तो दिनमें ही आहार पानी भोगना कल्पे है तो फिर प्रायश्चित कहा यह कैसे ?

उत्तर—यहां ऐसा समझना कि पहिले प्रहर का लिया हुआ आहार पानी चौथे प्रहर भोगवे तो प्रायश्चित लगे इस अपेक्षा से ना कही है।

प्रश्नोत्तर ३२१

प्रश्न—साधु साध्वीजी महाराज को केला तथा ताल वृक्ष का पक्का फल लेना कल्पे कि नहीं ?

उत्तर—साधु जी महाराज को तो दोनों वस्तुएँ सारी लेनी कल्पे परन्तु साध्वीजी को दोनों फल सारा लेना कल्पे नहीं परन्तु तीन चार टुकडे किया हुआ हो तो कल्पे कारण कि ताल वृक्ष के फल का आकार वृषण जैसा होने से तैसे ही केला का आकार इन्द्रिय जैसा होने से सारा साध्वी जी महाराजको लेना न कल्पे (शाखः-श्री "निशीथ" सूत्र तथा वेद कल्प की)

प्रश्नोत्तर ३२२

प्रश्न—मुखपत्ति डोरे विना बांधनी कल्पे कि नहीं ?

उत्तर—न कल्पे शाखः-महानिशीय सूत्र के अ० ७ वें में कहा है कि डोरे विना मुखपत्ति हाथ में रखे अथवा कान में घाले तो एक उपवास का प्रायश्चित लगे इस लिये डोरे सहित मुखपत्ति बांधनी कल्पे हैं।

प्रश्नोत्तर ३२३

प्रश्न—श्री जिनराज देवने भी " ठाणांगजी " सूत्र में कहा है कि "कीवए" कृपण को दीक्षा न देना कहीं तो क्या लोभी मनुष्य को दीक्षा न देना ?

उत्तर—यहां "लोभी" नहीं समझना। परन्तु कृपण अर्थात् जो पुरुष स्त्री को देख कर वीर्य रख न सके उस पुरुष को दीक्षा न देनी और सर्वज्ञ पुरुष ने इस हेतु से यहां कृपण कहा है।

प्रश्नोत्तर ३२४

प्रश्न—श्री "भगवतीजी" सूत्र के श० १ उ० २ में समदृष्टि नारकी के महावेदना कही और श्री "भगवती जी" सूत्र के श० १८ उ० ५ में अल्प वेदना कही वह कैसे ?

उत्तर—मानासिक दुःख समद्रष्टि नारकी ज्यादा वेदे वह अपना कृत्य का अफसोस ज्यादा करें इससे महावेदना कही और समद्रष्टि समभाव से वेदे हैं इससे अल्प समझना तथा समद्रष्टि उत्तर दिशा की नरक में उपजे इससे शरीरी के अल्प वेदना कहीं (शाखः—श्री "दशाश्रुत स्कंध जी" सूत्र के अ० १०)

प्रश्नोत्तर ३२५

प्रश्नः—साधुजी महाराज किन आदमियों को दीक्षा न देवें ?

उत्तर— २६ जनों को न देवें वह कहते हैं (१) वेश्या को (२) वैश्या के पुत्र को (३) नेत्र हीन वाले को (४) हाथ पांव की खोटवाले को (५) छिन कान वाले को (६) छिन नाक वाले को [७] छीन होठ वाले को (८) कोढी (९) मुंगा को (१०) बहेरे को (११) जन्म नपुसंक को (१२) महा क्रोधी को (१३) पाखंडी को (१४) बहुत दोष सेवित को [१५] जन्म रोगी को [१६] बहुत मोह वाले को (१७) गाढ मिथ्यात्वी को (१८) अन पीछान को (१९) कृपण को (२०) बल हीन वाले को (२१) कुल हीन वाले को [२२] जाति हीन वाले को (२३) बुद्धिहीन वाले को (२४) अज्ञात कुल वाले को (२५) निंदनीक कुल वाले को (२६) मंत्रवादी वाले को ऐसे २६ जनों को दीक्षा नहीं देनी तथा प्रकारांतर से भेद बहुत हैं (शास्त्र- श्री "निशीथ" सूत्र तथा श्री "ठाणांगजी" सूत्र वगैरे की)

प्रश्नोत्तर ३२६

प्रश्न—क्या साधु मुनि महाराज आज कल सूत्रानुसार एकल विहारी हो सक्ता है ?

उत्तर—श्री " ठाणांगजी " सूत्र के आठवें स्थान में एकल विहारी मुनि के आठ गुण वर्णन किये गये हैं किन्तु व्यवहार नय के मत से आजकल वे गुण धारण करने असाध्य प्रतीत होते है इस लिये आज कल एकल विहारी मुनि सूत्रानुसार नहीं सिध्ध होते हैं।

प्रश्नोत्तर ३२७

प्रश्न-क्या श्रावक साधु जी महाराज की वैयावच्च कर सक्ता है ?

उत्तर—श्रावक लोक साधुजी महाराज की मन और वाणी से सदैव काल वैयावच्च करते हैं किन्तु काय द्वारा बारहवां व्रत के अनुसार चार प्रकार के अन्न पानी द्वारा भी वैयावच्च करते हैं अपितु अल्प प्रकार की जो अंग स्पर्श की वैयावच्च है वे श्रावक लोक मुनियों की नहीं करते हैं। मुनियों का इस प्रकार की वैयावच्च करने का कल्प है " दश वैकालिक सूत्र के तृतीया ध्याय के पाठ से ऐसे सिध्ध होता है।

उपाध्याय जी महाराज साहब से विज्ञप्ति की- आप इस ग्रन्थ का संशोधन करें और श्री उपाध्याय जी महाराज साहब ने विज्ञप्ति स्वीकार कर ली किन्तु अवकाश अधिक उपलब्ध न होने के कारण मुनि श्री हेमचन्द्र जी स्व शिष्य को आज्ञा दी की तुम इसका संशोधन करो तब उन्होंने स्व गुरु की आज्ञा हुये इसका संशोधन किया यदि कोई अशुद्धि रह गई हो तो मेरे पर अनुग्रह करें।

प्रकाशकः—

लालाल एस शाह.

ठे० सेठ का कूचा

देहली।